केरल निर्णायक राजनीतिक बदलाव की दहलीज पर - 12

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 92 तक गिरकर 91.88 पर बंद -12

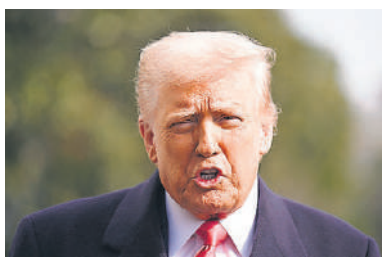

ट्रंप ने बोर्ड ऑफ पीस से कनाडा के पीएम कार्नी का निमंत्रण वापस लिया - 13

टाटा स्टील मास्टर्स : गुकेश के सामने छठे दौर में अब्दुसत्तोरोव की चुनौती - 14

आज का मौसम

21.0° अधिकतम तापमान

9.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 07.04

सूर्यास्त 05.45

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

बरेली

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

माघ शुक्ल पक्ष षष्ठी 12:40 उपरांत सप्तमी विक्रम संवत 2082

शनिवार, 24 जनवरी 2026, वर्ष 7, अंक 61, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

पहाड़ों में भारी बर्फबारी, मैदानी इलाकों में बारिश और शीतलहर ने बढ़ाई कंपकंपी

श्रीनगर हवाई अड्डे पर उड़ानें रद्द, वैष्णो देवी यात्रा रुकी, यूपी-दिल्ली समेत कई राज्यों में बारिश

- जम्मू कश्मीर, हिमाचल व उत्तराखंड में कई इंच बर्फबारी, उत्तर भारत में घने काले बादलों ने डाला डेरा

जम्मू/नई दिल्ली/लखनऊ/देहरादून, एजेंसी

हिमाचल प्रदेश के शिमला में सड़क पर बिछी बर्फ की मोटी चादर।

उत्तर भारत में पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से कड़ाके की ठंड वापस लौट आई है। हिमालय के राज्यों में गुरुवार रात से ही भारी बर्फबारी जारी है वहीं, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, चंडीगढ़ और दिल्ली में बारिश व तेज हवाओं ने कंपकंपी बढ़ा दी है। कई राज्यों में काले बादलों के डेरा डालने व बारिश होने से क्षेत्र में लंबे समय से चल रहे शुष्क मौसम का अंत हो गया।

जम्मू-कश्मीर के मैदानी और पहाड़ी जिलों में बर्फबारी जारी है। श्रीनगर एयरपोर्ट पर 4 इंच तक बर्फ जम गई है, इससे शुक्रवार को सभी फ्लाइट कैंसिल कर दी गई हैं। श्रीनगर-जम्मू हाईवे भी बंद हो गया है। डोडा, किश्तवाड़, पुंछ, रामबन और उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा सहित जिलों में 2,500 मीटर से ऊपर हाई-डेंजर लेवल के एवलॉन्च की चातवनी दी है। वहीं, कटरा में बर्फबारी के कारण वैष्णो देवी यात्रा रोक दी गई है। पश्चिमी विक्षोभ पश्चिम से आने वाली हवा और बादलों का एक सिस्टम होता है। इसके एक्टिव होने से पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी, मैदानी क्षेत्रों में बारिश होती है। तापमान में गिरावट, पाला और कोल्डवेव के हालात बनते हैं। हिमाचल प्रदेश के शिमला में शुक्रवार को मौसम की पहली बर्फबारी हुई जिसके बाद पर्यटक खुश नजर आए। कई पर्यटकों ने सोशल मीडिया पर वीडियो साझा किए और इसे सर्दियों का सबसे खुशनुमा स्थान बताया। शिमला मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, मनाली के पास स्थित कोठी गांव में 15 सेंटीमीटर बर्फबारी हुई, जो राज्य में सबसे अधिक है। इसी प्रकार, लाहौल और स्पीति के गोंदला, कुकुमसेरी और हंसा गांवों में क्रमशः 12 सेंटीमीटर, 6.8 सेंटीमीटर और पांच सेंटीमीटर हिमपात हुआ। वहीं, उत्तराखंड के ऊंचाई वाले इलाकों में नए साल का पहला हिमपात हुआ। राजधानी देहरादून सहित प्रदेश के ज्यादातर निचले इलाकों और मैदानी क्षेत्रों में भी सुबह से बारिश हो रही है। बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, औली, मसूरी, चकराता, धनोल्टी, उत्तरकाशी सहित अनेक जगहों पर हो रही बर्फबारी से सड़कें, पेड़ और मकान सब सफेद चादर में लिपटे नजर आ रहे हैं।

यूपी के 15 जिलों में ओलावृष्टि की संभावना

लखनऊ। पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से पश्चिमी उप्र के 15 जिलों में ओलावृष्टि का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। तेज झोंकेदार हवाओं और हल्की बारिश से कई जिलों में अधिकतम तापमान में गिरावट दर्ज की गई है। सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अलीगढ़, कासगंज, बिजनौर, अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, संभल व बदायूं में ओलावृष्टि का ऑरेंज अलर्ट है। यहां हवा की रफ्तार 60 किमी प्रति घंटे तक पहुंच सकती है।

माघ मेले में बसंत पंचमी पर टूटा महाकुंभ का रिकॉर्ड

- देर शाम तक 3.56 करोड़ श्रद्धालुओं ने संगम में लगाई आस्था की डुबकी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/प्रयागराज

अमृत विचार : बसंत पंचमी की पावन बेला पर संगम तट आस्था, उल्लास और भक्ति के महासागर में डूब गया। प्रयागराज माघ मेले में स्नानार्थियों की संख्या ने इतिहास रच दिया। मेला प्रशासन के अनुसार देर शाम तक 3.56 करोड़ श्रद्धालु संगम में पुण्य स्नान कर चुके थे। इससे पहले बसंत पंचमी के अवसर पर महाकुंभ-2025 में अधिकतम 2.57 करोड़ श्रद्धालुओं ने स्नान किया था।

गुरुवार देर रात से ही हर-हर महादेव, जय श्रीराम और जय गंगा मैया के गगनभेदी जयघोषों के बीच पुण्य स्नान का सिलसिला शुरू हो गया। अंधेरी रात से लेकर सुबह की सुनहरी धूप तक संगम की ओर बढ़ते श्रद्धालुओं की अनवरत धाराएं दिखीं। कहीं दंड-कमंडल थामे साधु-संत, तो कहीं सिर पर गठरी और कंधे पर झोला डाले आम श्रद्धालु, सबका लक्ष्य एक था, संगम में आस्था की डुबकी। घाटों पर गुनगुनी धूप के बीच आस्था का अद्भुत दृश्य नजर आया।

अविमुक्तेश्वरानंद का धरना जारी, तबीयत बिगड़ी

माघ मेला क्षेत्र में मौनी अमावस्या से धरने पर बैठे शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती की तबीयत शुक्रवार को बिगड़ गई। छह दिनों से खुले आसमान के नीचे लगातार धरना देने के कारण उन्हें बुखार हो गया है। शंकराचार्य के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी शैलेंद्र योगीराज ने तबीयत खराब होने की पुष्टि करते हुए बताया कि डॉक्टरों की निगरानी में उनका उपचार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वामी जी धरना जारी है, लेकिन स्वास्थ्य को देखते हुए सावधानी बरती जा रही है।

स्वामी निश्चलानंद समेत संतो ने लगाई डुबकी

पुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती सहित सभी प्रमुख संतो ने संगम में पुण्य की डुबकी लगाई। कल्पवासी और किन्नर अखाड़े के संतों ने बसंत पंचमी का स्नान किया। मुख्यमंत्री योगी ने श्रद्धालुओं को बधाई देते हुए कहा कि मां गंगा सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करें। माघ मेले में अब तक 15 करोड़ से अधिक श्रद्धालु पुण्य की डुबकी लगा चुके हैं।

ब्रीफ न्यूज

मुठभेड़ के दौरान जैश-ए-मोहम्मद का आतंकी ढेर

जम्मू। जम्मू कश्मीर के कठुआ जिले में शुक्रवार को सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) का एक पाकिस्तानी आतंकवादी मारा गया। जम्मू रेंज के पुलिस महानिरीक्षक भीम सेन टूटी ने बताया कि बिल्लावार इलाके में एक संयुक्त अभियान के दौरान आतंकवादी को मार गिराया गया। अधिकारियों ने मारे गए आतंकवादी की पहचान जैश-ए-मोहम्मद के कमांडर उस्मान के रूप में की है।

पांच आतंकी गिरफ्तार गोला-बारूद बरामद

अमृतसर। पंजाब पुलिस ने प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन बब्बर खालसा इंटरनेशनल से जुड़े एक आतंकवादी मॉड्यूल का भंडाफोड़ करते हुए इसके पांच गुर्गों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों से विस्फोटक उपकरण, हैंड ग्रेनेड और गोलाबारूद बरामद किया है।

देश विरोधी ताकतों के सामने न झुकने की नेताजी देते प्रेरणा : मुख्यमंत्री

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित करते मुख्यमंत्री योगी।

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- भारत माता के सच्चे सपूत व आजादी के महानायक थे नेताजी सुभाष चंद्र बोस
- 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' बना स्वतंत्रता आंदोलन का मंत्र

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस आज भी देश विरोधी और देशद्रोही तत्वों के सामने न झुकने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि नेताजी का नाम लेते ही प्रत्येक भारतीय के मन में स्वतः देशप्रेम, श्रद्धा और सम्मान की भावना जागृत हो जाती है।

योगी ने उक्त बातें नेताजी की जयंती के अवसर पर शुक्रवार को लखनऊ के हजरतगंज स्थित नेताजी सुभाष चौक पर आयोजित कार्यक्रम में कहीं। उन्होंने नेताजी को भारत माता का सच्चा सपूत और स्वतंत्रता आंदोलन का महानायक बताते हुए कहा कि आजादी की लड़ाई में उनका योगदान अमूल्य और अविस्मरणीय है। उन्होंने नेताजी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर प्रदेशवासियों की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित किए। योगी ने कहा कि विपरीत परिस्थितियों में भी राष्ट्रहित के लिए दृढ़ संकल्प और साहस का जो उदाहरण नेताजी ने प्रस्तुत किया, वह आज भी देशवासियों के लिए मार्गदर्शक है। नेताजी का उद्घोष 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' स्वतंत्रता आंदोलन का मंत्र बन गया था। उनके शब्दों में ऐसी शक्ति थी कि वे हर भारतीय के हृदय में जोश और त्याग की भावना भर देते थे।

23 अप्रैल को खुलेंगे भगवान बदरीनाथ धाम के कपाट

देहरादून। उत्तराखंड की आस्था का शिखर कहे जाने वाले भगवान बदरीनाथ धाम के कपाट खुलने की तिथि की शुक्रवार को विधिवत घोषणा कर दी गई। वसंत पंचमी के पावन अवसर पर टिहरी के नरेंद्र नगर राजदरबार में शास्त्रोक्त परंपराओं के अनुरूप पंचांग गणना के बाद इस यात्रा वर्ष बदरीनाथ धाम के कपाट 23 अप्रैल (गुरुवार) को प्रातः 6:15 बजे शुभ मुहूर्त में खोलने का फैसला लिया गया। तेल कलश गाडू घड़ा यात्रा 7 अप्रैल से शुरू होगी।

व्यापारी के बेटे का अपहरण कर हत्या, एक आरोपी ढेर

संवाददाता, बरगढ़ चित्रकूट

अमृत विचार: कस्बे के एक कपड़ा व्यापारी अशोक कुमार केशरवानी के 13 वर्षीय बेटे आयुष उर्फ छोटू की गुरुवार शाम अपहरण कर हत्या कर दी गई। वह घर से कोचिंग के लिए निकला था।

आरोपियों ने बच्चे का शव बक्से में बंद कर टांड़ पर रखकर दीवार चुनवा दी और पिता को फोनकर 40 लाख की फिरौती मांगी। पुलिस ने फोन नंबर के आधार पर व्यापारी की दुकान के पास ही संदूक की दुकान चलाने वाले दुकानदार इरफान अंसारी और उसके नौकर कल्लू उर्फ साहिबे इमान को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के लिए ले जाते समय आरोपियों ने पुलिस से असलहे छीनकर फायरिंग कर भागने की कोशिश की। जवाबी फायरिंग में गोली लगने से एक आरोपी की मौत हो गई और दूसरा घायल है। उधर, वारदात से गुस्साए लोगों ने कस्बे में जाम लगाकर नारेबाजी की। डीआईजी राजेश एस, जिलाधिकारी पुलकित गर्ग और पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह, सीओ यामीन अहमद सहित अन्य अधिकारियों ने मौके पर पहुंच कर उनको समझाया।

आयुष (फाइल फोटो)

- आरोपियों ने शव को बक्से में रखकर कमरे की टांड़ में चुनवा दिया

कोडीन कफ सिरप तस्कर की 28 करोड़ की संपत्ति कुर्क

सोनभद्र। कोडीन युक्त कफ सिरप की जांच कर रही सोनभद्र पुलिस की एसआईटी टीम ने मुख्य अभियुक्त भोला प्रसाद की अपराध जगत से अर्जित की गई 28.50 करोड़ की संपत्ति दी है। एसपी अभिषेक वर्मा ने बताया कि भोला प्रसाद के खिलाफ राबर्ट्सगंज कोतवाली में एनडीपीएस व अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज है। मामले की जांच एसआईटी कर रहीहै। भोला प्रसाद को कुछ दिन पहले विदेश पलायन के प्रयास के दौरान दमदम एयरपोर्ट, कोलकाता से गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जिला कारागार सोनभद्र में निरुद्ध किया गया है। उन्होने बताया कि उक्त संपत्तियों को चिन्हित करते हुए धारा 107 बीएनएसएस के अंतर्गत कुर्की के लिए न्यायालय में रिपोर्ट प्रेषित की गई थी।

राष्ट्र प्रेरणा स्थल पर सजेगी विकसित उत्तर प्रदेश की झांकी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

यूपी दिवस-2026

- माघ मेला-2026, लखनऊ दर्शन बस सेवा और कालिंजर किला होंगे प्रमुख आकर्षण

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर 24 से 26 जनवरी तक राष्ट्र प्रेरणा स्थल पर आयोजित होने वाले तीन दिवसीय समारोह में प्रदेश की पर्यटन क्षमता, सांस्कृतिक विरासत और विकास यात्रा की भव्य झलक देखने को मिलेगी। 'विकसित भारत, विकसित उत्तर प्रदेश' थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम के माध्यम से उत्तर प्रदेश को अग्रणी पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित करने का संदेश दिया जाएगा।

यह जानकारी पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने शुक्रवार को दी। उन्होंने बताया कि उप्र. पर्यटन विभाग के स्टॉल पर विभागीय योजनाओं के साथ-साथ पीपीपी मोड पर क्रियान्वित परियोजनाओं, माघ मेला-2026, बुंदेलखंड के प्रमुख पर्यटन स्थलों, विरासत संरक्षण, इको-टूरिज्म बोर्ड की पहलों तथा यूपीएसटीडीसी की 'लखनऊ दर्शन' इलेक्ट्रिक डबल डेकर बस सेवा जैसे सफल प्रयासों को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया जाएगा। जयवीर सिंह ने बताया कि समारोह के दौरान बौद्ध, जैन, रामायण, महाभारत सहित प्रदेश के सभी 12 पर्यटन सर्किटों से जुड़ी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को आमजन के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कालिंजर किले को विशिष्ट पर्यटन गंतव्य के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा, जबकि झांसी, चित्रकूट, ललितपुर, महोबा और बांदा के ऐतिहासिक स्थलों व जलप्रपातों की जानकारी भी प्रदर्शनी में शामिल रहेगी।

मॉक ड्रिल | लखनऊ पुलिस लाइन में मुख्यमंत्री के समक्ष सायरन, अंधेरा और रेस्क्यू ऑपरेशन

74 जिलों में अचानक छाया अंधेरा, युद्ध जैसी तैयारी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश में नागरिक सुरक्षा और आपात स्थितियों से निपटने की तैयारियों को परखने के लिए शुक्रवार शाम 74 जिलों में व्यापक ब्लैकआउट और मॉक ड्रिल आयोजित की गई। राजधानी लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पुलिस लाइन में मौजूद रहे और पूरे अभ्यास की निगरानी की। सायरन बजते ही तय समय पर लाइटें बंद कर दी गईं और कुछ ही पलों में शहर अंधेरे में डूब गया।

लखनऊ में पुलिस लाइन परिसर में रेस्क्यू ऑपरेशन, घायलों को सुरक्षित निकालने और त्वरित चिकित्सा सहायता का अभ्यास किया गया। बरेली में ब्लैकआउट के दौरान सिविल डिफेंस और फायर ब्रिगेड की टीमों ने ऊंची इमारतों से फंसे लोगों को निकालने का अभ्यास किया। कानपुर और कानपुर क्षेत्र के अन्य जिलों में धमाके जैसी आवाज के बाद लोगों को सुरक्षित स्थानों पर लेटने और अंधेरे में अनुशासन बनाए रखने का अभ्यास कराया गया। अयोध्या में धार्मिक स्थलों और भीड़भाड़ वाले इलाकों में आपात स्थिति से निपटने की मॉक ड्रिल की गई, जहां त्वरित निकासी और सुरक्षा घेरा बनाने पर जोर रहा। वहीं मुरादाबाद में घायल नागरिकों को एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचाने और अस्पतालों की इमरजेंसी तैयारियों की जांच की गई।

बरेली कलेक्ट्रेट परिसर : मॉक ड्रिल के दौरान घर में लगी आग के बाद राहत कार्य में जुटे कर्मी।

टीमें पूरी तरह रहीं सक्रिय, माघ मेले के कारण प्रयागराज में नहीं कराया गया ब्लैकआउट

इस मॉक ड्रिल में पुलिस, सिविल डिफेंस, एनडीआरएफ, होमगार्ड, फायर ब्रिगेड और स्वास्थ्य विभाग की टीमें पूरी तरह सक्रिय रहीं। विभिन्न एजेंसियों के समन्वय, रिस्पॉन्स टाइम और संसाधनों के उपयोग की समीक्षा की गई। मुख्यमंत्री ने फीडबैक लेकर टीमों की तत्परता की सराहना की। शासन के अनुसार ब्लैकआउट का उद्देश्य हवाई हमले या अन्य आपात स्थितियों में शहरों की लोकेशन छिपाने और नागरिकों को अनुशासित रहने का अभ्यास कराना है। माघ मेले के कारण प्रयागराज में ब्लैकआउट नहीं कराया गया। यह अभ्यास नागरिक सुरक्षा तैयारियों को मजबूत करने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है।

अमृत विचार

बरेली, शनिवार, 24 जनवरी 2026

शाहजहांपुर

न्यूज ब्रीफ

एडीएम से की खेत में खनन की शिकायत

तिलहर, अमृत विचार : ग्रामीण ने अपने खेत से अवैध रूप से मिट्टी खनन किए जाने की शिकायत अपर जिलाधिकारी से करते हुए जांच और कार्रवाई की मांग की है। मोहल्ला नजरपुर निवासी रवि वर्मा ने दिए गए शिकायती पत्र में बताया कि गांव धनेली पल्टू स्थित खेत में नौ साझेदार हैं। आरोप है कि वीरेंद्र कुमार निवासी मोहल्ला नजरपुर ने अपने हिस्से की भूमि की मिट्टी महेश ब्रिक फील्ड को बेच दी, जबकि अन्य साझेदारों की सहमति नहीं ली गई। मिट्टी खनन की अनुमति महेश ब्रिक फील्ड की ओर से कराई गई है और जेसीबी मशीन से छह फीट से अधिक गहराई तक मिट्टी निकाली जा रही है। जांच कराकर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

शराब के लिए पैसे न देने पर मारपीट

बंडा, अमृत विचार : बंडा थाना क्षेत्र के गांव सिसौरा सिसोरी निवासी अनंतराम ने पुलिस को दिए प्रार्थनपत्र में बताया कि बुधवार शाम वह अपने खेत की ओर जा रहा था। इसी दौरान गांव के ही पूर्व प्रधान ने उससे शराब पीने के लिए पैसे मांगे। मना करने पर पूर्व प्रधान और उसके एक साथी ने जातिसूचक गालियां देनी शुरू कर दीं। विरोध करने पर दोनों ने उसके साथ मारपीट की।

आशा कार्यकर्ताओं का धरना जारी

सिंधौली, अमृत विचार : मांगों के निराकरण को लेकर आशा कार्यकर्ताओं का सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर धरना तीसरे दिन भी जारी रहा। कार्यकर्ताओं ने बताया कि लंबे समय से उनका मानदेय और प्रोत्साहन राशि बकाया है, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। कई माह से भुगतान न होने के कारण परिवारों के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। कार्यकर्ताओं ने स्पष्ट किया कि सभी मांगों के निराकरण तक धरना जारी रहेगा। धरने में प्रिया, विमला, ओमकांती, रीता, संजूरानी और रेनू शुक्ला रहीं।

पराक्रम दिवस के रूप में मनाई गई नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती

129 वीं जयंती पर हुए विभिन्न आयोजन, आयोजित प्रतियोगिता में जीते इनाम, जिले भर के स्कूल, कॉलेजों व संगठनों ने आयोजित किए कार्यक्रम

सुभाष चन्द्र बोस जयंती पर भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार देते अतिथि। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : जिले में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 129 वीं जयंती को पराक्रम दिवस के रूप में मनाया गया। जयंती पर हुए स्कूल-कालेजों, राजनीतिक व सामाजिक संगठनों ने विभिन्न आयोजन कर नेताजी को याद किया। इस दौरान कई प्रतियोगिताएं हुईं जिनमें छात्र-छात्राओं ने इनाम जीते।

मेरा युवा भारत शाहजहांपुर, जिला प्रशासन एवं संकल्प भारत शोध न्यास के संयुक्त तत्वावधान में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की को पराक्रम दिवस के रूप में हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग में अंशिका यादव प्रथम, अलवीरा यासीन खान द्वितीय, दिव्यांश शुक्ला तृतीय एवं सानिया को सांत्वना स्थान प्राप्त हुआ। जूनियर वर्ग में प्रगति मौर्य प्रथम, निदा द्वितीय, अथर्व वर्मा तृतीय एवं अभिषेक प्रताप सिंह को सांत्वना स्थान प्राप्त हुआ। इस अवसर पर इतिहासकार डॉ. विकास खुराना, जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया व संकल्प के संस्थापक डॉ. स्वप्निल यादव ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन पर प्रकाश डाला। निर्णायक मंडल में शिवाजी गुप्त और भावेश मिश्रा रहे। संचालन ललित हरि मिश्रा और आभार संयोजक प्रिया श्रीवास्तव द्वारा व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में काजल यादव, विवेक कुमार, शिव प्रकाश दीक्षित ,अंजली गुप्ता, अनुराग यादव, पवन सिंह आदि उपस्थित रहे।

डा सुदामा प्रसाद कॉलेज में मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण करतीं छात्राएं।

सुदामा प्रसाद कॉलेज में सुभाष जयंती का आयोजन

डॉ. सुदामा प्रसाद बाल विद्या मंदिर, कन्या इंटर कॉलेज में सुभाष चन्द्र बोस की जयंती को पराक्रम दिवस के रूप में मनाया गया। इसके साथ ही मां सरस्वती का पूजन कर बसंत पंचमी का उत्सव भी मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यक्ष आलोक पाण्डेय, शिक्षिकाओं व छात्राओं ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर तथा सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। श्री पांडेय ने कहा कि आज की पीढ़ी को उनसे प्रेरणा लेने की जरूरत है। इस अवसर पर मंजरी यादव, आभा श्रीवास्तव का सहयोग रहा। संचालन अर्चना सक्सेना ने किया ने किया।

सुभाष चन्द्र बोस के चित्र पर माल्यार्पण करते सपा जिलाध्यक्ष तनवीर खां व अन्य।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस एक महान देशभक्त व क्रांतिकारी : तनवीर

समाजवादी पार्टी के बिजलीपुरा स्थित जिला कार्यालय पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती मनाई गई। सुभाष चन्द्र बोस के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किए। सपा जिलाध्यक्ष एवं पूर्व चेयरमैन तनवीर खां ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के योगदान पर चर्चा करते हुए कहा कि देश को आजाद करने में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की अहम भूमिका है। पूर्व मंत्री अवधेश कुमार वर्मा ने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस एक महान देशभक्त, क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थे। इस मौके पर पूर्व एमएलसी अमित यादव उर्फ रिंकू, सपा जिला महासचिव रणंजय सिंह यादव, सपा प्रदेश सचिव विजय सिंह, सपा प्रदेश सचिव रामसूरत यादव, सपा महानगर अध्यक्ष चौधरी रामकुमार भोजवाल, संजीव कुमार वर्मा, मोनू कुरैशी, नाजिम फारूकी, हफीज अंसारी, तेजपाल यादव, मोहम्मद रफी, मोहम्मद रमीज, मोहसिन खान, धर्मवीर यादव फौजी, इमरान खान, रानू खान, आरिफ खान, यश मौर्य, श्लोक मौर्य आदि मौजूद रहे।

एसपी कालेज में गोष्ठी का आयोजन

सरदार पटेल हिंदू इंटर कॉलेज में फारवर्ड ब्लाक के संस्थापक महान स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस की 129 वीं जयंती पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रधानाचार्य संजय कुमार कपूर ने कहा कि भारत को आजाद करने में सुभाष चंद्र बोस ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। इतिहास प्रवक्ता राम सिंह ने कहा कि नेताजी के योगदान को कभी बुलाया नहीं जा सकता। इस मौके पर वक्ताओं ने नेता जी के संबंध में अपने अपने विचार व्यक्त किए। अवसर पर वाणिज्य प्रवक्ता बुधपाल सिंह शिक्षक राहुल सिंह, मोहन स्वरूप गंगवार सुनील कुमार, शहजाद खान आदि मौजूद रहे।

एसपी कॉलेज में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर माल्यार्पण करते शिक्षक व छात्र।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं 2 में हुई अंतर-विद्यालय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं 2 में हुई अंतर-विद्यालय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार देते प्रधानाचार्य। ● अमृत विचार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : पराक्रम दिवस पर परीक्षा पे चर्चा पहल के अंतर्गत पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नंबर 2 ओसीएफ में अंतर-विद्यालय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न कक्षाओं के सौ विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिसमें नगर के 10 विद्यालयों की सहभागिता रही। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2 व क्रमांक 1 कैंट, जवाहर नवोदय विद्यालय, राजकीय इंटर कॉलेज, राजकीय कन्या इंटर कॉलेज, डॉ. जीएल कनौजिया पब्लिक स्कूल, नालंदा स्कूल ऑफ़ एक्सीलेंस, छावनी परिषद विद्यालय, ओसीएफ इंटर कॉलेज तथा संजय कुमार सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज प्रमुख रहे। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपने उत्कृष्ट ज्ञान, तार्किक क्षमता एवं टीमवर्क का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। आयोजन में प्राचार्य परवेज हुसैन के नेतृत्व में उपप्राचार्य महेंद्र पाल, रूम सिंह यादव, विजय पाल, संतोष कुमार दुबे, रवि शर्मा, जितेंद्र कुमार वर्मा सहित सभी शिक्षकों, निर्णायकों का सहयोग रहा।

कार न मिलने पर दी दूसरा निकाह करने की धमकी

कार्यालय संवादाता, शाहजहांपुर

● घुमाने के बहाने मायके में महिला को छोड़ गया पति

अमृत विचार : कार न मिलने पर पति ने दूसरा निकाह करने की धमकी दी। इसके साथ ही घुमाने के बहाने महिला को मायके लाया और छोड़कर भाग गया। शिकायत पर पुलिस ने चार के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

सदर बाजार थाना क्षेत्र के मोहल्ला हाथीथान निवासी सुम्बुल नाज ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि उसकी शादी चार साल पहले हसीन बासित निवासी अंटा थाना सदर बाजार के साथ हुई थी। ससुराल वाले दहेज की मांग को लेकर प्रताड़ित करने लगे। ससुराल वालों ने उससे कहा कि मायके से कार लाकर दो। एक साल पहले ससुराल वालों ने गर्भावस्था में घर से निकाल दिया था। उसने मायके में एक पुत्री को जन्म दिया। पंचायत के बाद मोहल्ले के मकान में उसे व उसके पति को रख दिया। दो माह पूर्व उसका पति स्कूटी पर घुमाने के बहाने रात में नौ बजे एसपी कालेज रोड पर छोड़ दिया और कहा मायके चली जाओ। धमकी दी कि कार नहीं मिली तो दूसरा निकाह कर लेगे। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि पति हसीन बासित समेत चार के खिलाफ दहेज उत्पीड़न आदि की धारा में रिपोर्ट दर्ज कर ली गयी है।

नेता जी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर निकाला पराक्रम मार्च

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : भारतीय युवा चेतना मंच व अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के संयुक्त तत्वावधान में सुभाष चन्द्र बोस जयंती पर पराक्रम मार्च निकाला गया। वहीं संस्था ने बच्चों की खेलकूद प्रतियोगिता भी कराई।

शुक्रवार को सुबह 10 बजे टाउनहाल स्थित शहीद पार्क स्थित बलिदानियों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर पराक्रम पैदल मार्च प्रारम्भ किया गया। जिसमें पूर्व सैनिकों, छात्रों, खिलाड़ियों, समाजसेवियों एवं मंच के कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग किया। पराक्रम जुलूस सुभाष चौराहा हथौड़ा पर सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ समाप्त हुआ। भारतीय युवा चेतना मंच ने रोजा के हरिकौशल त्यागी पब्लिक स्कूल में सरस्वती पूजन कर बच्चों के साथ सह तहरी भोज कराया। इस अवसर पर कर्नल जगवीर सिंह जागलान, नरेंद्र कुमार त्यागी, सोमेश मौर्य, विनय अग्रवाल, राजू बग्गा, रमेश दीक्षित, सतीश चौहान, मुकेश सिंह, मनोज अवस्थी, एमपी सिंह, लालाराम, राजीव मिश्रा, सुरेश मिश्रा, हरिओम सिंह, राजेश मिश्रा, गोपाल दीक्षित, रामरक्ष पाल, गोपाल कृष्ण वर्मा, प्रदीप कुमार मिश्रा, सदानंद अग्निहोत्री, शिशुपाल फौजी, सूरज मिश्रा आदि साथ रहे।

कंपोजिट विद्यालय अटसलिया में मनी सुभाष जयंती: कंपोजिट विद्यालय अटसलिया में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर भावपूर्ण स्मरण करते हुए उनके चित्र पर शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं ने माल्यार्पण व पुष्पांजलि अर्पित की। वहीं बसंत पंचमी पर शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं ने मां सरस्वती की वंदना की। इस अवसर पर बच्चों को पतंगे भी बांटी गई। इस अवसर पर इंचार्ज प्रधानाध्यापक निकहत परवीन, दपिंदर कौर, सायमा तरन्नुम, शालिनी मिश्रा, नम्रता मिश्रा, वर्षा मिश्रा उपस्थित रहीं।

सुभाष चन्द्र बोस जयंती पर पराक्रम मार्च निकालते पूर्व सैनिक व समाजसेवी। ● अमृत विचार

सुभाष चौराहा पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा के सामने खड़े समाज सेवी व पूर्व सैनिक। ● अमृत विचार

सुभाष जयंती पर सहयोग संस्था ने किया नमन

समाजसेवी संस्था सहयोग के पदाधिकारियों ने सुभाष चंद्र बोस चौराहे पर स्थित नेताजी की मूर्ति पर फूलमाला पहना कर नमन किया। इस मौके पर संस्था के संस्थापक अनिल गुप्ता प्रधान व शाहनवाज खां एडवोकेट ने कहा कि देश को आजादी दिलाने में नेताजी की अहम भूमिका रही है। संस्था की अध्यक्ष रजनी गुप्ता व महासचिव विकास सक्सेना ने महापुरुषों को नमन करते हुए उनके बताए आदर्शों पर चलने का संकल्प लें। कार्यक्रम में महेंद्र दुबे, ममता यादव, संगीता गुप्ता, सुमन गुप्ता, शिवम वर्मा, सुधीर, शबाब आदि उपस्थित रहे।

न्यूज डायरी

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर पुलिस कर्मियों ने ली शपथ

तिलहर, अमृत विचार : 16वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर थाना तिलहर परिसर में पुलिस कर्मियों को मतदान के महत्व के प्रति जागरूक करते हुए शपथ दिलाई गई। पुलिस क्षेत्राधिकारी ज्योति यादव ने पुलिस उपनिरीक्षकों और सिपाहियों को लोकतंत्र में मतदान के महत्व की जानकारी दी और राष्ट्र निर्माण में अपने मताधिकार के प्रयोग के लिए प्रेरित किया। इस दौरान उन्होंने पुलिस कर्मियों से मानवतापूर्ण कार्य प्रणाली अपनाने की अपील की। शपथ ग्रहण कार्यक्रम में अपराध निरीक्षक सुनील कुमार यादव, उपनिरीक्षक प्रमोद कुमार, नितिन कुमार, गौरव कुमार, कांस्टेबल शैलेंद्र, हिमानी सहित कोतवाली स्टाफ मौजूद रहा।

हेलमेट पहनो अभियान से दुर्घटनाएं रोकने की पहल

संवाददाता, तिलहर, अमृत विचार : क्षेत्र में सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए नवागत यातायात प्रभारी बाल किशन यादव ने हेलमेट पहनो अभियान शुरू किया है। अभियान के तहत दो पहिया वाहन चालकों को केवल चालान काटकर ही नहीं, बल्कि उन्हें स्वयं हेलमेट पहनाकर जागरूक किया जा रहा है। यातायात प्रभारी द्वारा मोटरसाइकिल पर तीन सवारी बैठाने वालों को चेतावनी दी जा रही है और हेलमेट पहनकर चलने की अपील की जा रही है। बार-बार नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों का चालान भी किया जा रहा है। बाल किशन यादव ने बताया कि तिलहर क्षेत्र में हाईवे और अन्य मार्गों पर लगातार हो रही दुर्घटनाओं में लोगों की जान जा रही है और गंभीर चोटें भी लग रही हैं। उनका प्रयास है कि जागरूकता के माध्यम से इन दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके।

एसपी ने पुलिस कर्मियों को दिलाई मतदाता दिवस की शपथ

शाहजहांपुर, अमृत विचार : एसपी राजेश द्विवेदी ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर कार्यालय में पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को मतदाता दिवस की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि मतदान केवल अधिकारी नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य के निर्माण का महत्वपूर्ण दायित्व है। पुलिस विभाग कानून व्यवस्था बनाए रखने के साथ-साथ सामाजिक जागरुकता अभियानों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सभी ने संकल्प लिया कि वे लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाएंगे, निष्पक्ष और निर्भीक मतदान करेंगे तथा समाज के प्रत्येक नागरिक को मतदान के प्रति जागरूक एवं प्रेरित करेंगे। शपथ ग्रहण के माध्यम से पुलिस बल में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति जिम्मेदारी जागरूकता तथा नैतिक दायित्वों के निर्वहन का संदेश प्रसारित किया गया। एएसपी सिटी, एएसपी ग्रामीण, सीओ सिटी, सीओ सदर आदि कर्मचारी मौजूद रहे। इसके अलावा जिले के सभी थानों पर शपथ दिलाई गई।

घर में घुसकर मारपीट, पति पत्नी समेत चार घायल

तिलहर, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के गांव रूजवारी निवासी एक ग्रामीण ने घर में घुसकर मारपीट करने का आरोप लगाते हुए तहरीर देकर मुकदमा दर्ज करने की मांग की है। पहलाद कुमार पुत्र राम भरोसे लाल ने पुलिस को बताया कि गांव के ही आधा दर्जन लोगों ने लाठी-डंडे और धारदार हथियार लेकर उसके घर में घुसकर हमला कर दिया। मारपीट में पहलाद कुमार और उनकी पत्नी तारावती के सिर और हाथ-पैर में चोटें आई हैं। इसके अलावा बेटे हिमालय और बेटी अनामिका को भी गंभीर चोटें लगीं। मारपीट के दौरान पुत्र नितिन का सिर भी फट गया। पीड़ित ने बताया कि इससे पहले 22 दिसंबर 2025 को भी आरोपियों ने घर में घुसकर गाली-गलौज की थी।

कोर्ट के आदेश को नहीं मान रहे दबंग

संवाददाता, खुटार

● उपजिलाधिकारी को दिया प्रार्थनपत्र

अमृत विचार: क्षेत्र के गांव ढाका खुर्द कलां से जुड़ा एक भूमि विवाद न्यायालय के आदेश के बावजूद अब तक लंबित बना हुआ है।

रौतापुर कलां निवासी स्वर्ण सिंह नामधारी ने उपजिलाधिकारी पुवायां को दिए गए प्रार्थना पत्र में बताया कि न्यायालय के आदेश के बाद भी पुलिस द्वारा उसे शेष भूमि पर कब्जा नहीं दिलाया गया है। पीड़ित के अनुसार उसकी जमीन का विधिवत बैनामा किया जा चुका है। इस संबंध में लेखपाल शौर्य वर्धन व राजस्व निरीक्षक मनोज सक्सेना द्वारा पैमाइस कर रिपोर्ट भी प्रस्तुत की जा चुकी है। जिसमें शेष भूमि 0.266 हेक्टेयर दर्शाई गई है। मामले में कोर्ट ने 20 मई 2025 को आदेश पारित किया गया था। आदेश में प्रतिवादी को वादी की शेष भूमि पर किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप अथवा अतिक्रमण से रोके जाने के निर्देश दिए गए थे।

साथ ही आदेश के अनुपालन की जिम्मेदारी थाना खुटार पुलिस को सौंपते हुए आख्या न्यायालय में प्रस्तुत करने के निर्देश भी दिए गए थे। उसके बावजूद भी कोई भी निर्णय राजस्व पुलिस विभाग ने नहीं लिया। पीड़ित का आरोप है कि अब तक पुलिस द्वारा आदेश का अनुपालन नहीं कराया गया है। पीड़ित ने बताया कि पुलिस का कहना है कि पहले शेष भूमि को राजस्व विभाग व उपजिलाधिकारी द्वारा चिन्हित कराया जाए। उसके बाद ही पुलिस बल के माध्यम से कब्जा दिलाया जा सकता है। मामले को संज्ञान में लेते हुए उपजिलाधिकारी पुवायां ने नायब तहसीलदार एवं थाना प्रभारी खुटार को अभिलेखीय व स्थलीय निरीक्षण कर स्थिति से अवगत कराने के निर्देश दिए हैं। अब देखना होगा कि प्रशासनिक स्तर पर समन्वय बनाकर न्यायालय के आदेश का पालन कब तक सुनिश्चित किया जाता है। पीड़ित स्वर्ण सिंह नामधारी ने उसकी शेष भूमि को कब्जा मुक्त कराकर उसे कब्जा दिए जाने की गुहार लगाई है।

ब्लॉक रोड व नाला निर्माण की ग्रामीणों ने उठाई मांग

संवाददाता, कलान

● अधूरे मानकों के साथ हो रहा था रोड व नाले का निर्माण

अमृत विचार : नगर पंचायत का प्रमुख ब्लॉक रोड एक महीने से निर्माण का इंतजार कर रहा है। जबकि संबंधित ठेकेदार ने एक महीना पहले इस रोड पर अधूरी नालियां बनाकर छोड़ दीं। जहां उनके निर्माण में पीला ईट लगाए जाने की शिकायत मिली थी। नगर पंचायत चेयरमैन हरनारायण गुप्ता ने शिकायत मिलने पर नालियों का निर्माण गुणवत्ता और मानक के अनुसार करने की ठेकेदार को हिदायत दी थी।

इस रोड की मकानों के गंदे पानी के निकास के लिए नालियों के निर्माण के साथ एक नाला बनाया गया था, जो दो-तीन दिन में ही ध्वस्त हो गया और नाले का गंदा पानी बहकर अस्पताल प्रांगण में भरने लगा। जानकारी होने पर चेयरमैन ने जेसीबी से ध्वस्त नाले से मलबा निकलवाया था। तब गंदे पानी का निकास हो सका। एक महीना बीतने के बाद भी नाले व रोड का निर्माण नहीं कराया गया। इस कारण ब्लॉक रोड पर जलभराव की समस्या से लोगों को जूझना पड़ रहा है।

दुष्कर्म का आरोपी सहयोगी महिला समेत गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

● पुलिस ने पूछताछ के बाद दोनों को भेजा जेल

अमृत विचार: सदर बाजार पुलिस ने एक किशोरी को बंधक बनाकर दुष्कर्म करने वाले आरोपी और सहयोगी महिला को गिरफ्तार कर लिया।

सदर बाजार थाना क्षेत्र के एक मोहल्ले के व्यक्ति ने थाना पर रिपोर्ट दर्ज करायी है कि बुधवार को उसकी 14 वर्षीय चचेरी बहन को मोहल्ले की एक महिला अपने घर बुलाकर ले गयी थी। महिला ने किशोरी को मकान में अंदर भेजकर बाहर से कुंडी लगा दी। अंदर पहले से मौजूद एक युवक ने किशोरी को पकड़ लिया और जान से मारने की धमकी देते हुए उसके साथ दुष्कर्म किया। पीड़िता की चीख पुकर सुनकर मोहल्ले और परिवार वाले पहुंच गए। इस दौरान आरोपी मौका पाकर भाग गया। सूचना पर सदर बाजार पुलिस मोहल्ले में पहुंची और पीड़िता के परिवार वालों से जानकारी की। पुलिस ने आरोपी आरिफ निवासी चौक आला खां थाना सदर बाजार और मुन्नी उर्फ शकीला निवासी बारादरी थाना सदर बाजार के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली। पुलिस ने दोनों आरोपियों को अलग-अलग स्थानों से गिरफ्तार कर लिया।

समायोजन को लेकर की बीएसए से वार्ता

● प्रक्रिया में व्याप्त विसंगतियों पर 27 को होगी विस्तार से चर्चा

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : संयुक्त शिक्षक संघर्ष समिति के प्रतिनिधिमंडल की जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी दिव्या गुप्ता के साथ अवकाश तालिका एवं खेलकूद प्रतियोगिता के लिए आयोजित बैठक में समायोजन के संबंध में पुनः वार्ता हुई। बैठक में शिक्षक समायोजन प्रक्रिया में व्याप्त विसंगतियों पर चर्चा की गई।

समिति सदस्य अंकुर त्रिपाठी ने स्पष्ट रूप से कहा कि वह समायोजन के विरुद्ध नहीं है, किंतु यह आवश्यक है कि समायोजन, स्थानांतरण प्रक्रिया शासनादेशों एवं निर्धारित नियमावली के अनुरूप पारदर्शी ढंग से संपादित की जाए, जिससे किसी भी शिक्षक के साथ अन्याय न हो। बीएसए ने कहा कि यदि समिति बिंदुवार विश्लेषण करते हुए विसंगतियों का विवरण प्रस्तुत करती है, तो मंगलवार को पुनः बैठक कर गंभीरता से चर्चा की जाएगी। इसके अतिरिक्त बैठक में जनपदीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं अवकाश तालिका से संबंधित विषयों पर भी विचार-विमर्श किया गया। बैठक में राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री अंकुर त्रिपाठी, प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला मंत्री देवेश बाजपेई, जिला कोषाध्यक्ष रविन्द्र पाल प्रजापति, नफीस अहमद, देवेन्द्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

संयुक्त शिक्षक संघर्ष समिति के प्रतिनिधिमंडल से वार्ता करतीं बीएसए दिव्या गुप्ता।

न्यूज ब्रीफ

बाइक समेत घरेलू सामान चोरी

शाहजहांपुर, अमृत विचार : कलान थाना क्षेत्र के गांव नौगवा मुबाकरपुर निवासी सेवाराम ने थाना पर रिपोर्ट दर्ज कराई है कि वह परिवार समेत ईंट भट्टे पर पथाई का काम कासगंज में करता है। उसके मकान में ताला बंद था। 17 जनवरी की शाम वह कासगंज से अपने घर पर आया तो मकान के मुख्य दरवाजे का ताला टूटा हुआ था। उसका आरोप है कि चोर बाइक, कपड़े, बर्तन आदि सामान चुराकर ले गए है।

युवक से बरामद हुआ तमंचा, गिरफ्तार

मिर्जापुर, अमृत विचार : मिर्जापुर पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान फर्रुखाबाद रोड स्थित पेट्रोल पम्प के पास सिंगापुर निवासी धर्मवीर को तमंचे समेत गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से एक तमंचा 315 बोर और एक जिंदा कारतूस 315 बोर बरामद किया गया। पुलिस ने पूछताछ के बाद आरोपी को जेल भेज दिया।

पुलिस कर्मियों को दिलाई शपथ

सिंधौली, अमृत विचार : राष्ट्रीय मताधिकार दिवस के अवसर पर कोतवाली परिसर में प्रभारी निरीक्षक रविन्द्र सिंह ने पुलिस कर्मियों को मतदान के प्रति जागरूक रहने तथा निष्पक्ष, निर्भीक और जिम्मेदारी के साथ मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में अपराध निरीक्षक राजेश यादव, उपनिरीक्षक हनुमान सिंह यादव सहित समस्त पुलिस कर्मी मौजूद रहे।

दो किशोरियों का दबंगों ने रास्ता रोका

कलान, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के एक गांव में कथा सुनने के बाद लौट रही दो किशोरियों को दबंगों ने उन्हें रोककर गाली गलौज करते हुए गलत नीयत से पकड़ने का प्रयास किया। जिस पर उन्होंने शोर मचाया तो घर की महिलाएं दौड़ीं। तब कहीं उन्हें बचाया जा सका। आरोपियों से बचने के बाद एक महिला ने बृहस्पतिवार शाम 6 बजे अपनी पुत्री एवं नातिन के मामले के संबंध में थाने पर तहरीर दी है। जिसमें कहा है कि आरोपियों ने किशोरियों को गलत नीयत से पकड़ा था। पीड़ित किशोरियों ने यह भी बताया है कि कुछ लोगों के हाथों में नाजायज असलाह भी थे। तहरीर थाना प्रभारी शिव दीन वर्मा को देने के बजाए हल्का दरोगा ने रख ली और मामला रफा दफा करने की कोशिश करने में जुट गए।

सोना-चांदी साफ करने के बहाने ठगी करने वाला गिरोह गिरफ्तार

गिरोह में शामिल हैं चार महिलाएं, झारखंड प्रांत के रहने वाले हैं सभी आरोपी

संवाददाता, खुटार

अमृत विचार : खुटार पुलिस और एसओजी ने घर-घर जाकर सोना चांदी साफ करने के बहाने ठगी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने चार महिलाओं समेत आठ लोगों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए जालसाजों के पास से पुलिस ने लाखों की कीमत के जेवर, स्टील व एल्युमोनियम के बर्तन बरामद किए हैं। पुलिस ने पूछताछ के बाद आरोपियों को जेल भेज दिया है।

जालसाज गिरोह के पीछे जिले की एसओजी और पुलिस लगी थी। गुरुवार रात पुलिस को सूचना मिली कि खुटार-गोला रोड पर बनकटा गांव की मोड़ के पास कुछ संदिग्ध लोग खड़े हैं।

सूचना पर थानाध्यक्ष श्यामवीर सिंह, एसओजी प्रभारी निरीक्षक धर्मेंद्र कुमार और सर्विलांस सेल प्रभारी मनोज कुमार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और घेराबंदी कर सभी आरोपियों को

पुलिस हिरासत में ठगी करने वाले गैंग के सदस्य। ● अमृत विचार

- सोना-चांदी साफ करने के बहाने महिलाएं करतीं थीं धोखाधड़ी
- आभूषण और बर्तन बरामद, कई घटनाओं का खुलासा

पकड़ लिया। पकड़े गए आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि वे गांव-गांव जाकर भोली भाली महिलाओं से पुराने बर्तन और सोना-चांदी के आभूषण साफ करने के नाम पर यह कहकर ले जाते थे कि अगले दिन लौटा देंगे, लेकिन दोबारा गांव नहीं आते थे। इसके बाद वह दूसरे गांव की महिलाओं को निशाना बनाते थे।

बरामद हुआ सामान

पकड़े गए आरोपियों के कब्जे से पुलिस ने एक जोड़ी कुंडल, एक जोड़ी बाली, एक जोड़ी झाले, एक कंठी माला, तीन छोटे पेंडल, एक मंगलसूत्र, सोने के दो ढोलना, आठ जोड़ी पायल, तीन जोड़ी बिछुआ, एक चांदी की कमर करधनी, पांच मोबाइल फोन और स्टील व एल्युमिनियम के छोटे-बड़े नए पुराने 18 बर्तन बरामद किए गए हैं।

झारखंड के रहने वाले हैं आरोपी

पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे लोग झारखंड प्रांत के जिला रामगढ़ हजारीबाग और गिरीडीह क्षेत्रों के रहने वाले निकिता, सेवना देवी, बिंदिया, राजनंदनी मल्हार, अजय मल्हार, उदय मल्हार, साजन मल्हार और पवन मल्हार हैं। आरोपियों ने बताया कि वे लोग उत्तर प्रदेश, पंजाब, व अन्य प्रांतों के गांवों में घूमते हैं और महिलाओं को भरोसा दिलाते हैं कि जेवर साफ करने का काम करते हैं। भोली भाली महिलाएं उन्हें अपना जेवर दे देती हैं, इसके बाद वे लोग गांव नहीं जाते हैं।

इन्हें बनाया था गिरोह ने निशाना

खुटार थाना क्षेत्र के गांव मोहनपुर निवासी पप्पू और जितेंद्र के घर पर 7 जनवरी को मां-बेटी पहुंची थीं। घर की महिलाओं से पुराने बर्तन और सोना-चांदी के आभूषण साफ करने के नाम पर लाखों रुपए के आभूषण लेकर चली गईं और वापस नहीं लौटीं। 9 जनवरी को दोनों ने थाना में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। 21 जनवरी को गांव मुरादपुर में भी इसी तरह सफाई के बहाने महिलाओं से लाखों रुपए के सोना-चांदी के आभूषण ठग लिए गए थे। रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस आरोपियों की तलाश में थी।

रामकेवल की गला दबाकर नहीं हैंगिंग से हुई मौत

शाहजहांपुर, अमृत विचार: चौक कोतवाली पुलिस ने रामकेवल के शव का पोस्टमार्टम कराया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में उसकी हैंगिंग से मौत होने की पुष्टि हुई है। वहीं एक आंख के ऊपर चोट के निशान पाए गए है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

चौक कोतवाली के गांव मौजमपुर निवासी रामकेवल का शव गुरुवार को मकान के अंदर मिला था। उसके माता-पिता घर के बाहर झोपड़ी में रात में सो रहे थे। उसके गले और एक आंख के ऊपर चोट के निशान थे। रामकेवल अपने माता-पिता के साथ रहता था। पुलिस के मुताबिक रामकेवल और उसकी पत्नी के बीच काफी समय से विवाद चल रहा था। दोनों के बीच कोर्ट में मुकदमा चल रहा था। मृतक की पत्नी ने ससुराल वालों पर हत्या का आरोप लगाया है और गला दबाकर मार डाला था। उसका आरोप है कि उसके पति की सारी जमीन ससुराल वालों ने बेच दी थी। उनके पास कुछ नहीं बचा था। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। रामकेवल की हैंगिंग से मौत हुई और एक आंख के ऊपर चोट का निशान है। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कोई तहरीर नहीं आई है।

हाईटेंशन लाइन के करंट से बालक की मौत

मौके पर विलाप करते परिजन।

संवाददाता, गढ़िया रंगीन

इन्हीं तारों पर टंगा था जूता।

- पेड़ पर बेर तोड़ रहा था, परिवार में मचा कोहराम

अमृत विचार: कस्बा गढ़िया रंगीन में एक बालक लोहे के तार में जूता बांधकर पेड़ से बेर तोड़ रहा था। जूता हाईटेंशन लाइन पर जाकर गिर गया, जिससे बालक को करंट लग गया। बालक को सीएचसी पर ले गए। जहां डाक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया।

गढ़िया रंगीन थाना क्षेत्र के कस्बा निवासी 11 वर्षीय आशीष शुक्रवार की सुबह 10 बजे बेर तोड़ने के लिए गया। उसने पुराना जूते में लोहे का तार बांधा और बेर तोड़ने के लिए कई बार पेड़ पर फेंका। बालक ने कई बार बेर तोड़ लिया था। बेर के पेड़ के पास से हाईटेंशन लाइन निकल रही थी। इसी लोहे बंधा जूता पेड़ पर फेंका। इस बार जूता पेड़ की डाल पर जाकर, बल्कि हाईटेंशन लाइन पर गिर गया। लोहे का तार पकड़े होने पर बालक को करंट लग गया। वह दूर जाकर गिरा और छटपटाते हुए बेहोश हो गया। इस दौरान लोग दौड़कर गए और बिजली की लाइन को बंद कराया। परिवार वाले मौके पर पहुंच गए। परिवार वाले उसे अस्पताल ले गए। जहां डाक्टर ने बालक को मृत घोषित कर दिया। उसकी हाथ की दो उंगलियां कट गई थी। उसके पिता जगपाल की एक साल पहले मौत हो चुकी है। मृतक आशीष नौ भाई और बहनों में सबसे छोटा था। उसकी मां मजदूरी करके परिवार को पाल रही थी। प्रभारी निरीक्षक हरिकेश सिंह ने बताया कि बालक जूते में तार बांधकर बेर तोड़ रहा था। अचानक जूता हाईटेंशन लाइन पर गिर गया और करंट लगने से मौत हो गयी।

केंद्र प्रभारी व सहयोगी ने किसान के साथ की मारपीट

संवाददाता, पुवायां

अमृत विचार : क्षेत्र की नवीन मंडी स्थित आरएफसी सेंटर पर धान तौल के दौरान अवैध वसूली, मारपीट और धमकी का गंभीर मामला सामने आया है। पीड़ित किसान ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र सौंपकर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

थाना सिंधौली क्षेत्र के ग्राम मुढिया पमार निवासी अतुल कुमार पुत्र वेदव्रत गुप्ता ने जिलाधिकारी को दिए प्रार्थना-पत्र में बताया कि वह 12 जनवरी को नवीन मंडी पुवायां स्थित आरएफसी सेंटर पर अपना धान तौल कराने गया था। शिकायत के अनुसार उसकी तुलाई की मात्रा 158 बोरी (63.20 कुंतल) थी। आरोप है कि केंद्र प्रभारी और उसके सहायक ने धान तौल के नाम पर 240 रुपये प्रति कुंतल अवैध वसूली की मांग की। काफी आग्रह के बाद शुक्रवार को धान की तुलाई तो कर दी गई, लेकिन जब किसान खरीद की ऑनलाइन एंट्री कराने केंद्र प्रभारी के पास गया तो उससे दोबारा अवैध धनराशि की मांग की गई। किसान द्वारा पैसे देने से इनकार करने पर केंद्र प्रभारी ने न तो ऑनलाइन आवेदन दर्ज किया और न ही अंगूठा लगाया। आरोप है कि इसके बाद केंद्र प्रभारी और उसके सहायक ने एक युवक को फोन कर बुलाया, जिसने किसान और उसके भतीजे के साथ मारपीट की। मारपीट की घटना मंडी समिति परिसर में लगे कैमरों में रिकॉर्ड होने का दावा किया गया है। आरोप लगाया कि राहुल ने उसे जान से मारने की धमकी दी। किसान ने जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई कराने की मांग की है।

मॉकड्रिल : दस मिनट में ब्लैक आउट, बचाओ-बचाओ की आई आवाज

- दमकल आग बुझाने का किया अभ्यास, डीएम और एसपी ने कहा मॉकड्रिल रहा सफल

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: हवाई हमले से बचाव को कलेक्ट्रेट और पुलिस लाइन परिसर में ब्लैक आउट मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। शाम छह बजे अचानक लाइट बंद कर दी गई। सायरन बजते ही दस मिनट तक क्षेत्र में ब्लैक आउट हो गया। उसके बाद वालंटियर ने कार्यालयों में फंसे लोगों का रेस्क्यू करना शुरू किया। इस दौरान लगी आग को भी दमकल विभाग ने बुझाया। डीएम व एसपी ने कहा कि माकड्रिल का कार्यक्रम सफल रहा।

नेता जी सुभाष चंद्र बोस की जयंती उपलक्ष्य पर मॉक ड्रिल के निर्देश दिए गए थे। यहां पर सिविल डिफेंस का गठन किया गया है। डीएम धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने खुद इस मॉक ड्रिल की निगरानी की। पुलिस प्रशासन के अधिकारी भी कलेक्ट्रेट परिसर पहुंच गए। दमकल विभाग से लेकर तमाम वालंटियर भी पहुंच गए। पानी की गाड़ियों को कलेक्ट्रेट में तैनात किया गया। शाम छह बजते ही कलेक्ट्रेट से लेकर आसपास के क्षेत्र में ब्लैक आउट किया गया। पूरे कलेक्ट्रेट परिसर में अंधेरा छा गया। ये सब उन परिस्थितियों से निपटने के लिए की गई थी। जब हवाई हमले की आशंका बनती है। ऐसे में पहले से ही निर्देश दिए गए थे कि शाम छह बजकर दस मिनट तक ब्लैक आउट रहेगा। दस मिनट ब्लैक आउट के बाद फौरन कलेक्ट्रेट में लगी आग को दमकल विभाग ने आग को बुझाया और फिर कार्यालय में मौजूद लोगों का रेस्क्यू कर उनको एंबुलेंस के माध्यम से पहुंचाया गया। इस दौरान बचाओ बचाओ की आवाज भी आती रही । इधर पुलिस लाइन परिसर में मॉक ड्रिल के दौरान ब्लैक आउट की स्थिति को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा व्यवस्था, आपातकालीन प्रक्रिया, संचार प्रणाली, सायरन टेस्टिंग, बल तैनाती, भीड़ नियंत्रण एवं आवश्यक बचाव उपायों के बारे में अभ्यास कराया गया। पुलिस विभाग समेत संबंधित इकाइयों ने भाग लिया। इस अवसर पर पुलिस अधिकारी आदि स्टाफ मौजूद रहा। डीएम धर्मेंद्र प्रताप सिंह और एसपी राजेश द्विवेदी ने मॉक ड्रिल कार्यक्रम सफल रहा है।

कलेक्ट मार्क ड्रिल के दौरान अंधेरा। ● अमृत विचार

पुलिस लाइन में मॉक ड्रिल का अभ्यास करते पुलिसकर्मी। ● अमृत विचार

प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का प्रसारण देखा

कार्यक्रम के बाद पथ विक्रेताओं को लोन वितरण के पत्र देतीं महापौर अर्चना वर्मा। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- 42 पथ विक्रेताओं को लोन वितरण के पत्र दिए

अमृत विचार : प्रधानमंत्री द्वारा केरल के तिरुवनंतपुरम से पीएम स्वनिधि योजना के अंतर्गत क्रेडिट कार्ड का शुभारंभ एवं एक लाख पथ विक्रेताओं को लोन का वितरण कार्यक्रम का सजीव प्रसारण का आयोजन जनपद के समस्त नगर निकायों में किया गया। कार्यक्रम में नगर निगम की महापौर अर्चना वर्मा ने प्रतिभाग किया।

परियोजना अधिकारी डूडा के चार्ज में अपर नगर आयुक्त एसके सिंह ने बताया कि जनपद शाहजहांपुर में लगभग 700 पथ विक्रेताओं के खातों में बैंक में मध्य से लोन की धनराशि भेजी जाएगी और 42 पथ विक्रेताओं को क्रेडिट कार्ड भी प्रदान किए जाने की कार्यवाही पूर्ण की गई। महापौर अर्चना वर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सहायक परियोजना अधिकारी राकेश कुमार, मिशन प्रबन्धक प्रभाकर मिश्र, सामुदायिक आयोजक दीपक प्रजापति आदि ने प्रतिभग किया।

नो मैपिंग मतदाताओं की सुनवाई पर डीएम की नजर

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- नगर निगम और जिला सूचना कार्यालय में दस्तावेज जांच व्यवस्था का निरीक्षण

अमृत विचार : जिला निर्वाचन अधिकारी और जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने टाउन हॉल स्थित नगर निगम और जिला सूचना कार्यालय में चल रहे नोटिस सुनवाई कार्य का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सुनवाई में पहुंचे नो मैपिंग मतदाताओं से उनके दस्तावेजों के संबंध में जानकारी ली।

जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि नोटिस सुनवाई के दौरान बीएलओ की उपस्थिति हर हाल में सुनिश्चित की जाए, जिससे मतदाताओं को किसी भी प्रकार की जानकारी दी जा सके। उन्होंने बताया कि मतदाता को केंद्र, राज्य या सार्वजनिक उपक्रम के कर्मचारी अथवा पेंशनभोगी का पहचान पत्र, जन्म प्रमाण पत्र, पासपोर्ट, शैक्षणिक प्रमाण पत्र, स्थायी निवास प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, परिवार रजिस्टर की नकल, भूमि या आवास आवंटन प्रमाण पत्र सहित भारत निर्वाचन आयोग की ओर से निर्धारित अन्य वैध दस्तावेज प्रस्तुत करना अनिवार्य है। दस्तावेजों की संख्या मतदाता की जन्म तिथि के अनुसार निर्धारित की गई है। 30 जून 1987 तक जन्मे मतदाताओं को स्वयं का एक मान्य दस्तावेज प्रस्तुत करना होगा। 01 जुलाई 1987 से 02 दिसंबर 2004 के बीच जन्में मतदाताओं को स्वयं का एक दस्तावेज और माता-पिता में से किसी एक का एक दस्तावेज देना अनिवार्य है।

ब्लाक लेकर स्टेशन पर रखे गए गार्डर

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: रेलवे स्टेशन पर निर्माणाधीन स्वचालित सीढ़ियों के लिए गार्डर रखने के लिए अप लाइन पर तीन घंटे का ब्लाक लिया गया। इस दौरान मालगाड़ियों को रोजा में रोक दिया गया और शाहजहांपुर-सीतापुर पैसेंजर को एक घंटे बाद रवाना किया गया। इस दौरान रेलवे के अधिकारी आदि मौजूद रहे।

रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत योजना के तहत फुट ओवरब्रिज और स्वचालित सीढ़ियों और लिफ्ट का निर्माण कार्य चल रहा है। स्वचालित सीढ़ियां मालगोदाम रोड की सेकेंड इंट्री की तरफ से प्लेटफार्म एक पर उतरेगा। स्वचालित सीढ़ियों के पड़ोस में दिव्यांग के लिए लिफ्ट बनायी जा रही है। पिलर पर गार्डर रखने का काम किया जा रहा था। रेलवे प्रशासन ने अप लाइन पर प्लेटफार्म तीन व चार पर क्रेन से गार्डर रखने के लिए एक बजकर 25 मिनट से 04 बजकर 25 मिनट का ब्लाक दिया गया। शनिवार व रविवार को भी गार्डर रखे जाएगे। अप लाइन की एक्सप्रेस ट्रेनें प्रभावित नहीं हुई। जबकि मालगाड़ियों को रोजा में रोक दिया गया था। शाहजहांपुर-सीतापुर पैसेंजर को ब्लाक खत्म होने के बाद सीतापुर के लिए रवाना किया। इस अवसर रेलवे के तमाम अधिकारी मौके पर मौजूद रहे।

स्टेशन पर स्वचालित सीढ़ियों के लिए रखे गए गार्डर। ● अमृत विचार

- स्वचालित सीढ़ियां लगाने के लिए दो दिन और रहेगा ब्लाक

त्योहारों पर अशांति फैलाने वालों के खिलाफ की जाएगी कड़ी कार्रवाई

कलान थाना में आयोजित पीस कमेटी की बैठक में थाना प्रभारी शिवदीन वर्मा।

संवाददाता, कलान

अमृत विचार : कलान थाना में आयोजित पीस कमेटी की बैठक में थाना प्रभारी शिव दीन वर्मा ने मौजूद संभ्रांत नागरिकों से कहा कि आगामी होली आदि त्योहारों पर अगर कोई अशांति फैलाकर माहौल को खराब करने की कोशिश करता है तो उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाएगी।

चाहे वह जितनी भी पहुंच वाला क्यों न हो। उन्होंने कहा कि अनावश्यक रूप से घरों से बाहर न निकले अफवाहों पर ध्यान न दें और भाईचारे के साथ त्योहार मनाएं। साथ ही उन बच्चों के परिजन भी यह ध्यान रखें कि उन्हें दोपहिया न चलाने दें और वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। थाना प्रभारी ने यह भी आगाह किया है कि सोशल मीडिया पर भड़काऊ पोस्ट एवं शराब पीकर उत्पात मचाने और तेज रफ्तार वाहन चलाने एवं जबरन रंग डालने जैसी हरकतों पर कड़ी नजर रखी आएगी।

खनन के विरोध में ग्रामीणों ने किया धरना-प्रदर्शन

खुदागंज, अमृत विचार : कटरा क्षेत्र के ग्राम मरैना में प्लाटिंग में अवैध रूप से खनन कर मिट्टी डालने के मामले में कार्रवाई न होने से नाराज ग्रामीण धरने पर बैठ गए। पिछले कई दिनों से चल रहा धरना बदस्तूर जारी है। धरना दे रहे लोगों का कहना है कि अभी तक प्रशासन ने इस संबंध में ग्राम मरैना का मौका मुआयना नहीं किया है। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर उच्च स्तरीय जांच टीम गठित करने और दोषियो के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई किए जाने की मांग की है। ग्रामीणों ने बताया कि विगत सप्ताह कटरा क्षेत्र के ग्राम मरैना में मोहल्ला आतिशबाजान निवासी एक व्यक्ति ने अवैध रूप से मिट्टी खनन कर प्लाटों में भराव डलवाया दिया। जिससे आवागमन के लिए बनी पुलिया टूट गई।

कार्रवाई | ग्राम खेदपुर में शाहजहांपुर महायोजना 2031 के विपरीत विकसित कॉलोनी ध्वस्त

अवैध प्लाटिंग पर चला विकास प्राधिकरण का बुलडोजर

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : शाहजहांपुर विकास प्राधिकरण ने अवैध प्लॉटिंग के खिलाफ शुक्रवार को गांव खेदपुर में अभियान चलाकर 30 हजार वर्गमीटर भूमि पर विकसित की गई अवैध आवासीय प्लाटिंग को ध्वस्त कराया गया। यह कार्रवाई प्राधिकरण के सचिव अजय कुमार त्रिपाठी के नेतृत्व में की गई। उक्त प्लाटिंग शाहजहांपुर महायोजना 2031 में निर्धारित भू-उपयोग के विपरीत की गई थी।

प्रवर्तन टीम की ओर से मौके पर अवैध प्लाटिंग के अंतर्गत बनाई गई बाउंड्री, सड़क और गेट को बुलडोजर चलाकर ध्वस्त कर दिया गया। कार्रवाई के दौरान प्राधिकरण के अधिशासी अभियंता राकेश चंद्र वर्मा, अन्य स्टाफ, नगर निगम की एटीएस टीम और स्थानीय पुलिस बल मौजूद रहा। शाहजहांपुर विकास प्राधिकरण की ओर से नगरवासियों से बार-बार अपील की गई है कि किसी भी प्रकार की भूमि या प्लाट खरीदने से पहले यह अवश्य जांच लें कि संबंधित प्लाटिंग प्राधिकरण की ओर से स्वीकृत है या नहीं। यदि ले-आउट प्राधिकरण से स्वीकृत है तभी प्लाट क्रय किया जाए। प्राधिकरण ने स्पष्ट किया है कि यदि कोई विक्रेता यह दावा करता है कि मानचित्र प्राधिकरण में जमा कर दिया गया है या शीघ्र स्वीकृति मिल जाएगी, तो ऐसे दावों पर विश्वास न किया जाए। भू-उपयोग के विपरीत या शासन द्वारा तय मानकों के विरुद्ध प्रस्तुत मानचित्र किसी भी स्थिति में स्वीकृत नहीं किए जाते हैं। प्राधिकरण ने यह भी बताया कि स्वीकृत ले-आउट में ही पार्क, नाली, सीवर और सामुदायिक केंद्र जैसी मूलभूत सुविधाओं का विकास किया जाता है। इसके विपरीत अनधिकृत रूप से विकसित भूखंडों का विक्रय किया जाता है, जिन्हें प्राधिकरण की ओर से स्वीकृति नहीं दी जाती। ऐसे भूखंड खरीदने पर नागरिकों की जीवनभर की कमाई जोखिम में पड़ सकती है।

प्राधिकरण ने जानकारी दी कि 3000 वर्गमीटर से अधिक क्षेत्रफल अथवा कुल आठ भूखंडों से अधिक में विकसित की गई प्लाटिंग का पंजीकरण उत्तर प्रदेश रेरा में कराना अनिवार्य है। प्लाट खरीदते समय रेरा पंजीकरण संख्या अवश्य देखी जाए। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया कि 100 वर्गमीटर तक के आवासीय भूखंड और 30 वर्गमीटर तक के व्यावसायिक भूखंड पर निर्माण के लिए उत्तर प्रदेश शासन के ऑनलाइन पोर्टल फास्टपास के माध्यम से आवेदन कर निर्धारित शुल्क जमा कर कम समय में मानचित्र स्वीकृति प्राप्त की जा सकती है। शाहजहांपुर विकास प्राधिकरण की ओर से नागरिकों से अपील की गई है कि किसी के बहकावे में न आएं और नियमों के अंतर्गत ही निर्माण और विकास कार्य कराएं, जिससे भविष्य में किसी प्रकार की कार्रवाई या नुकसान से बचा जा सके।

ग्राम खेदपुर में अवैध प्लाटिंग पर कार्रवाई करते शाहजहांपुर विकास प्राधिकरण की टीम।

- प्राधिकरण की प्रवर्तन टीम ने की कार्रवाई, 30 हजार वर्गमीटर में थी प्लॉटिंग

न्यूज ब्रीफ

मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर मनाई बसंत पंचमी

खुटार, अमृत विचार : कस्बा के बंडा रोड पर स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर बसंत पंचमी मनाई गई।आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र छात्राओं ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किए। चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित किया। उनके बाद मां सरस्वती की वंदना कर स्तुति की गई। इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य नीरज मिश्र ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रम से बच्चें अपनी संस्कृति के जुड़ते है। उन्हे अपनी संस्कृति का ज्ञान होता है। बसंत पंचमी ज्ञान व स्वर की देवी मां सरस्वती की पूजा अर्चना का पर्व है। मां सरस्वती का भोग लगाकर प्रसाद वितरित किया गया। इस मौके पर विद्यालय के समस्त आचार्य व छात्र छात्रा मौजूद रहे।

दुकानदार ने चालक के भाई को पीटकर किया घायल

शाहजहांपुर, अमृत विचार : चौक कोतवाली के मोहल्ला बिजलीपुरा निवासी अमरदीप ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि 19 जनवरी को दोपहर डेढ़ बजे अपने ई-रिक्शा से अपने भाई राम जी गुप्ता के साथ पानी के कैम्पर बाट के वापस आ रहा था। रास्ते में खिरनीबाग चौराहे पर रेड लाइट होने पर ई-रिक्शा मंदिर के पास रुका हुआ था। सड़क दुकान लगाए दुकानदार दीपक वर्मा ने कहा कि दुकान के सामने ई-रिक्शा क्यों रोका है और आगे बढ़ाओ। दुकानदार गाली देने लगा। विरोध करने पर दुकानदार ने अपने साथियों के साथ उसके भाई राम जी गुप्ता पर धारदार हथियार से घायल कर दिया। उसने अपने भाई रवि गुप्ता को सूचना दी। उसका भाई आया तो आरोपियों ने उसके साथ भी मारपीट की। आरोपियों ने जान से मारने की धमकी दी। सदर बाजार प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि आरोपी दीपक वर्मा समेत तीन के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस मामले की विवेचना कर रही है।

जिले भर में श्रद्धा के साथ धूमधाम से मनाया गया बसंत पर्व

बसंत पंचमी : हवन-पूजन कर मांगा ज्ञान की देवी से आशीर्वाद, स्कूल-कॉलेजों के साथ ही सामाजिक संगठनों की ओर से हुए विभिन्न कार्यक्रम

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- जिले में पतंगबाजी को लेकर बच्चों और युवाओं में उत्साह चरम पर दिखा लोगों में
- स्कूल, कॉलेजों व अन्य सामाजिक संगठनों ने मनाया पर्व, खाटू श्याम मंदिर में हुई भव्य सजावट

अमृत विचार : विद्या, बुद्धि व ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती के प्राकट्य दिवस तथा ऋतुराज बसंत के आगमन को बसंत पर्व के रूप में जिले भर में धूमधाम से मनाया गया। स्कूल-कॉलेजों के साथ ही सामाजिक संगठनों की ओर से भी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान लोगों ने खूब पतंगबाजी भी की।

इस अवसर पर आज जिले में पतंगबाजी को लेकर उत्साह चरम पर है। पर्व से एक दिन पहले ही सुबह से शाम तक पतंग की दुकानों पर भीड़ लगी रही। सदर बाजार, चौक, केरूगंज, बरेली मोड़ समेत कई इलाकों में दुकानदारों ने रंग-बिरंगी और नए डिजाइन की पतंगों से दुकानें सजा लीं। बच्चों में खासा उत्साह देखा गया। आसमान में उड़ती पतंगों ने भी ऋतुराज बसंत का अहसास कराया। बसंत पंचमी के पावन अवसर पर जनपद के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में ज्ञान, कला और वाणी की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती की पूजा श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। सुबह करीब सवा सात बजे से शुभ मुहूर्त में पूजा की गई। श्रद्धालुओं ने विधिवत पूजा-अर्चना कर परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। बीएसए कार्यालय में बसंत पंचमी के पावन पर्व पर बीएसए दिव्या गुप्ता ने मां सरस्वती की मूर्ति पर दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण किया। मां सरस्वती की वंदना की। इस अवसर पर जिला समन्वय सतीश कनौजिया, निश्चय सिंह, मनोज कुमार, सचिन, स्काउट मास्टर जिला ट्रेनिंग कमिश्नर निकहत परवीन, जिला गाइड कैप्टन दपिंदर कौर, शिक्षक संगठन के देवेश बाजपेई, मंगरेलाल, विश्राम सिंह, रविंद्र प्रजापति, नितिन मिश्रा, विजय प्रताप सिंह, अंकुर त्रिपाठी, अजय, हिमांशु, हर्षित, देश दीपक, नफीस, कफील अहमद सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। वहीं बरेली मोड़ स्थित खाटू श्याम मंदिर पर वसंत पंचमी कार्यक्रम धूमधाम मनाया गया। खाटू श्याम मंदिर में बाबा श्याम को पीत वस्त्र धारण कराए गए। सुंदर गेंदे के फूलों से भव्य श्रृंगार किया गया। सुबह से ही मंदिर परिसर में भक्तों की लंबी कतारें लगी रहीं। वहीं आकांक्षा हाईस्कूल चमकनी करबला और आकांक्षा पब्लिक इंटर कॉलेज चौढेरा में शुक्रवार को बसंत पंचमी और सुभाष चंद्र बोस जयंती का आयोजन हुआ। प्रबंधक उर्मिला सक्सेना ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन किया। प्रधानाचार्य स्मिता सक्सेना, सोनिया कुदेशिया और मुदिता जौहरी ने सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर पुष्प अर्पित किए।

बसंत उत्सव कार्यक्रम में शामिल छात्राएं एवं शिक्षिकाएं। ● अमृत विचार

कंपोजिट विद्यालय में बच्चों को पतंगे बांटीं

कंपोजिट विद्यालय अटसलिया में बसंत पंचमी पर शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं द्वारा मां सरस्वती की वंदना की। इस अवसर पर इंचार्ज प्रधानाध्यापक निकहत परवीन व दपिंदर कौर ने बच्चों को पतंगे बांटीं। ● अमृत विचार

बसंत उत्सव पर सरस्वती पूजा करतीं डा. कविता भटनागर। ● अमृत विचार

एसएस कॉलेज में बसंत उत्सव का आयोजन

एसएस कॉलेज के संगीत विभाग की ओर से सरस्वती पूजा एवं बसंत उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वाणिज्य विभागाध्यक्ष डा. अनुराग अग्रवाल, एनसीसी अधिकारी डा. आलोक कुमार सिंह, संगीत विभागाध्यक्ष डा. कविता भटनागर ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं विधिवत पूजा-अर्चना के साथ किया। जनपद के आर्य महिला डिग्री कॉलेज, संजय कुमार सरस्वती विद्या मंदिर एवं सरस्वती शिशु मंदिर में भी सरस्वती पूजन एवं बसंत पंचमी के कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम में धर्मवीर सिंह, काजल मिश्रा, मान्या पांडे, राधा, मुस्कान, अनीता आदि रहीं।

कार्यालय पर मनाई बसंत पंचमी व सुभाष जयंती

रोशनगंज स्थित मनीषी ताइक्वांडो वेलफेयर एसोसिएशन के कार्यालय पर बसंत पंचमी पर ज्ञान, संस्कृति और राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत कार्यक्रम हुए। साथ ही स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती भी मनाई गई। महासचिव डॉ. पुनीत मनीषी ने बच्चों को संबोधित किया। इस दौरान संरक्षक ओंकार मनीषी, नेहा मनीषी, अविका श्रीवास्तव मनीषी, उर्वशी श्रीवास्तव, निशा सहित तमाम छात्राएं मौजूद रहे।

मां सरस्वती और सुभाष चंद्र बोस जयंती के चित्र पर पुष्पांजलि करते संस्थाध्यक्ष।

द फाउंडेशन स्कूल एवं बिज़ी बीज़ प्री-स्कूल में मनाया बसंत उत्सव

द फाउंडेशन स्कूल एवं बिज़ी बीज़ प्री-स्कूल में बसंत पंचमी का पावन पर्व शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया। विद्यालय के प्रधानाचार्य वासु गोयल ने बसंत पंचमी के महत्व पर प्रकाश डाला। समारोह के अंतर्गत विद्यार्थियों के मस्तक पर तिलक लगाया गया तथा सभी को प्रसाद वितरित किया गया।

बसंत पंचमी पर सरस्वती पूजा के साथ आइरिस का भव्य आरंभ

- वरुण अर्जुन विश्वविद्यालय परिसर में धार्मिक और सांस्कृतिक उत्साह
- पूजा से वातावरण हुआ भक्तिमय इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए
- महोत्सव में नृत्य, संगीत और विविध प्रतियोगिताएं हुईं

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

कार्यक्रम में हिस्सा लेते छात्र-छात्राएं और शिक्षक। ● अमृत विचार

हवन करते फैकल्टी सदस्य। ● अमृत विचार

अमृत विचार : वरुण अर्जुन विश्वविद्यालय बंथरा में बसंत पंचमी के अवसर पर मां सरस्वती की विधिवत पूजा-अर्चना के साथ तीन दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव आइरिस 2026 की भव्य शुरुआत हुई। विश्वविद्यालय परिसर स्थित मंदिर में आयोजित पूजा ने न केवल धार्मिक आस्था का वातावरण बनाया, बल्कि सांस्कृतिक उत्सव के शुभारंभ का भी संदेश दिया। वेद मंत्रों की गूंज से परिसर का वातावरण श्रद्धा, सकारात्मकता और ऊर्जा से भर उठा।

पूजा में मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य और डीन डॉ. कर्नल रविंद्र नाथ शुक्ला मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने मां सरस्वती के चरणों में अर्घ्य अर्पित कर पूजा संपन्न कराई। उन्होंने कहा कि बसंत पंचमी ज्ञान, विद्या और कला का प्रतीक पर्व है और इस तरह के आयोजनों से छात्रों में सांस्कृतिक चेतना और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। उन्होंने बताया कि आइरिस 2026 जैसे आयोजन छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो उनकी छिपी प्रतिभाओं को निखारने का अवसर देते हैं। मेडिकल कॉलेज के उप-प्राचार्य डॉ. संथानन कृष्णन भी पूजा में उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि यह पूजा कॉलेज परिवार के लिए एक नई और शुभ शुरुआत है। छात्रों को पारंपरिक वेशभूषा में देखना प्रेरणादायक रहा। सरस्वती वंदना से परिसर की वैदिक और सांस्कृतिक छटा और अधिक निखर गई।

उन्होंने कहा कि चिकित्सा शिक्षा के साथ सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण भी संस्थान की प्राथमिकता है। पूजा के दौरान मेडिकल कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने मां सरस्वती की वंदना प्रस्तुत की। छात्राओं ने साड़ी और छात्रों ने धोती-कुर्ता धारण किया था, जिससे परिसर में पारंपरिक और धार्मिक वातावरण बना। फैकल्टी सदस्यों में डॉ. पूर्णिमा एस. भट्ट, डॉ. धर्मेंद्र कुमार गुप्ता, डॉ. माथुर, डॉ. अमित कुमार सिंह और ललित कुमार चौहान सहित अन्य शिक्षक मौजूद रहे। शाम को विश्वविद्यालय के फुटबॉल ग्राउंड पर आइरिस 2026 का औपचारिक उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। यह सांस्कृतिक महोत्सव 23 से 25 जनवरी तक आयोजित किया जा रहा है।

फुटबॉल ग्राउंड को रंग-बिरंगी रोशनी और सजावट से सजाया गया था। उद्घाटन अवसर पर नृत्य और संगीत की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को आकर्षित किया। सांस्कृतिक सचिव डॉ. राहुल सक्सेना ने बताया कि आइरिस 2026 में नृत्य, संगीत, गायन, कविता पाठ, स्किट, रंगोली, नाटक, मेडिकल क्विज और विभिन्न टैलेंट गेम्स आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह मंच छात्रों को रचनात्मकता, टीमवर्क और नेतृत्व क्षमता विकसित करने का अवसर देगा। कार्यक्रमों में छात्रों की भागीदारी उत्साहजनक रही। पहले दिन नृत्य और संगीत की रंगारंग प्रस्तुतियां हुईं। रंगोली प्रतियोगिता में छात्राओं ने अपनी कलात्मक प्रतिभा दिखाई। मेडिकल क्विज के प्रारंभिक दौर में छात्रों ने चिकित्सा ज्ञान का प्रदर्शन किया। कविता पाठ और स्किट के माध्यम से सामाजिक विषयों को प्रस्तुत किया गया। दूसरे दिन नाटक, ड्रामा और टैलेंट गेम्स आयोजित किए जाएंगे, जबकि तीसरे दिन मुख्य कार्यक्रम संपन्न होंगे।

बसंत पंचमी पर ढाई घाट में उमड़ा आस्था का सैलाब

संवाददाता, मिर्जापुर

बसंत पंचमी पर ढाई घाट गंगा तट पर स्नान करते श्रद्धालु। ● अमृत विचार

अमृत विचार: ढाई घाट गंगा तट पर चल रहे माघ मेला रामनगरिया में शुक्रवार को बसंत पंचमी के पावन पर्व पर जनपद सहित अन्य स्थानों से आए हजारों श्रद्धालुओं ने गंगा मैया में आस्था की डुबकी लगाई। भोर की पहली किरण के साथ ही स्नान का सिलसिला शुरू हो गया, जो देर शाम तक चलता रहा। गंगा घाटों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी रही।

बसंत ऋतु के आगमन और ज्ञान की देवी मां सरस्वती के प्राकट्य दिवस पर साधु-संत बसंती रंग में रंगे नजर आए। साधु-संतों ने अखाड़ों में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया। इसके साथ ही भगवान की पालकी सजाकर शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा के दौरान साधु-संत एक-दूसरे पर गुलाल-अबीर उड़ाते हुए बसंत ऋतु का स्वागत करते दिखे। परिक्रमा के दौरान कई नागा साधु हाथों में तलवार और भाले लेकर करतब करते हुए आगे चल रहे थे। वहीं अनेक साधु-संत धर्म ध्वजा लिए पालकी के साथ रंग गुलाल उड़ाते हुए चल रहे थे। उनके पीछे सैकड़ों साधु-संत ढोल-नगाड़े बजाते हुए गंगा मैया की जयकार करते नजर आए, जिससे पूरा मेला क्षेत्र भक्तिमय हो उठा। पालकी शोभायात्रा में सखी बाबा नृत्य करते हुए भक्ति रंग में रंगे दिखाई दिए। एक माह का कल्पवास कर रहे कल्पवासी और श्रद्धालुओं ने गंगा तट पर स्नान के बाद गंगा मैया को वस्त्र दान कर पुण्य अर्जित किया।

हनुमतधाम में विद्या और संस्कृति का भव्य संगम

भाजपा नेता चंद्रशेखर खन्ना धीरू का स्वागत करते संस्था पदाधिकारी। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- बसंत पंचमी पर विचारगोष्ठी और सम्मान समारोह का आयोजन
- साहित्य, शिक्षा और पत्रकारिता की विभूतियां सम्मानित

अमृत विचार : बसंत पंचमी के पावन अवसर पर विगत वर्षों की भांति वीआईपी ग्रुप विद हेल्पिंग हैंड्स की ओर से हनुमतधाम प्रांगण में विचारगोष्ठी और सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ग्रुप के संरक्षक चन्द्रशेखर खन्ना 'धीरू', हनुमतधाम प्रबंध समिति के अध्यक्ष विनोद अग्रवाल और ग्रुप सदस्यों की ओर से मां सरस्वती की वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ विधिवत पूजा-अर्चना कर किया गया।

इसके बाद साहित्य, शिक्षा, पत्रकारिता और समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाली विशिष्ट प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। नगर के वरिष्ठ साहित्यकार और शिक्षाविद आचार्य नित्यानंद मुद्गल को मां सरस्वती साहित्य रत्न सम्मान से अलंकृत किया गया। वहीं विलक्षण प्रतिभा की बालिका आइला बानो को विलक्षण प्रतिभा सम्मान प्रदान किया गया, जिसे उपस्थित जनसमूह ने तालियों के साथ सराहा।

कार्यक्रम में शिक्षाविद उर्मिला सक्सेना को उनके उत्कृष्ट शैक्षिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस दौरान अजय अवस्थी 'अनुरागी', शिशांत शुक्ला, कौशलेन्द्र मिश्रा, सर्वेश मिश्रा, अनिल मिश्रा, स्वाति सिंह और रमेश शंकर पांडे को भी सम्मान प्रदान कर समारोह की गरिमा बढ़ाई गई। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. सुरेश चंद्र मिश्रा ने कहा कि बसंत पंचमी केवल ऋतुओं का पर्व नहीं, बल्कि विद्या, कला और संस्कृति का महापर्व है। आचार्य नित्यानंद मुद्गल के अस्वस्थ होने के कारण मां सरस्वती साहित्य रत्न सम्मान उन्हें उनके आवास पर जाकर डॉ. सुरेश चंद्र मिश्रा, कौशलेन्द्र मिश्रा, अजय अवस्थी 'अनुरागी' और अभिनय 'विचारक' की ओर से प्रदान किया गया। वहीं मां सरस्वती बाल रत्न सम्मान ग्रुप संरक्षक चन्द्रशेखर खन्ना 'धीरू' की ओर से बालिका आइला बानो को प्रदान किया गया। कार्यक्रम में जिला प्रभारी संजय अग्रवाल, अध्यक्ष दीपमाला रस्तोगी, महासचिव सतीश सक्सेना, कोषाध्यक्ष ज्योति गुप्ता, संयुक्त सचिव रिद्धि बहल सहित आकाश मिश्रा, रोहित पाण्डेय, हर्षित मिश्रा, रूपांशु माला, स्मिता सक्सेना, अंशिका, मोहम्मद शान, शमशाद और बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी, बुद्धिजीवी और गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। कार्यक्रम के अंत में वीआईपी ग्रुप के संचालक अभिनय गुप्ता ने लोगों का आभार व्यक्त किया।

रोजा पावर प्लांट से केबल चोरी

शाहजहांपुर, अमृत विचार : रोजा पावर प्लांट से केबल चोरी हो हो गई। तहरीर के आधार पर पुलिस ने चार दिन बाद रिपोर्ट दर्ज की है। रोजा पावर प्लांट में आईएसजीएस प्राइवेट लिमिटेड के तहत सुरक्षा सुपरवाइजर के पद पर तैनात अवनीश कुमार ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वे प्लांट में क्यूआरटी सी शिफ्ट में नौ जनवरी को पेट्रोलिंग कर रहे थे। तभी वहां कुछ लोगों को संदिग्ध अवस्था में देखा। उनके हाथ में केबल था। जब तक सुरक्षा कर्मी पकड़ने के लिए दौड़े तब तक आरोपी भाग गए। मामले में अवनीश कुमार की ओर से रिजवान, चांद मियां, रफ्फन, शकील निवासी गांव बांडीगांव थाना रामचंद्र मिशन उस्मान निवासी गांव जिंदी नगर थाना रौंदा के खिलाफ शुक्रवार को रिपोर्ट दर्ज कराई गई है।

मुफ्त स्वास्थ्य मेले में 749 मरीजों का पंजीकरण

- वरुण-अर्जुन मेडिकल कॉलेज की ओर से आयोजित किया गया शिविर
- मोतियाबिंद के 20 मरीजों के निशुल्क ऑपरेशन होंगे

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

सिंघा यूसुफपुर में आयोजित मुफ़्त स्वास्थ्य मेले में जांच कराते ग्रामीण। ● अमृत विचार

अमृत विचार : वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखंड अस्पताल, बंथरा की ओर से गुरुवार को मिर्जापुर क्षेत्र के ग्राम सिंघा यूसुफपुर में मुफ़्त स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया। निःशुल्क स्वास्थ्य मेले का शुभारम्भ मोहित शर्मा ने किया।

स्वास्थ्य शिविर में कुल 749 मरीजों ने पंजीकरण कराया। जांच के दौरान 20 मरीजों में मोतियाबिंद पाया गया, जिनका ऑपरेशन वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखंड अस्पताल, बंथरा में निशुल्क किया जाएगा। शिविर में 197 मरीजों की ब्लड शुगर जांच और लगभग 156 मरीजों की ब्लड प्रेशर जांच निशुल्क की गई। इसके साथ ही 687 मरीजों को निशुल्क दवाइयों का वितरण किया गया। एमआरआई, सीटी स्कैन और अन्य जांचों पर छूट के कूपन भी वितरित किए गए। स्वास्थ्य टीम और पीआरओ की ओर से लोगों को नियमित जांच कराने के लिए जागरूक किया गया और परिवार स्वास्थ्य कार्ड की जानकारी दी गई। बताया गया कि यह कार्ड अस्पताल की ओर से 200 रुपए में बनाया जाता है और एक वर्ष के लिए मान्य होता है। परिवार स्वास्थ्य कार्ड के माध्यम से ओपीडी पर्चा निशुल्क बनेगा, दवाइयों और सभी जांचों पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त छूट मिलेगी तथा भर्ती होने पर भर्ती फाइल भी निशुल्क बनेगी। बताया गया कि स्वास्थ्य कार्ड धारक को सामान्य ऑपरेशन में 25 प्रतिशत तथा खून की आवश्यकता होने पर 10 प्रतिशत की छूट मिलेगी। शिविर में डॉ. करुणाशंकर दीक्षित और सुशील अग्निहोत्री का विशेष योगदान रहा। शिविर में सामान्य रोग विभाग, नेत्र रोग विभाग और हड्डी रोग विभाग के विशेषज्ञ डॉ. गौरव सिंह, डॉ. अभिषेक, डॉ. प्रिया मिश्रा, डॉ. रिव्या सिंह, मेडिकल कॉलेज के पीआरओ विपिन शर्मा और पैरामेडिकल स्टाफ मौजूद रहा।

MEDICAL Lifelines OF BAREILLY अमृत विचार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002

फोकस नेत्रालय
राजेन्द्र नगर, बरेली 731-098-7005
● 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
● बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
● आयुष्मान/सीजीएचएस/ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
● कैशलेस ईलाज
बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल ...
नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ

ADITYA आदित्य आई एण्ड लेजर सेन्टर
उपलब्ध सुविधायें :- बिना सुई बिना टांका आधुनिक लेंस प्रत्यारोपण की सुविधा। TPA कैशलेस सुविधा उपलब्ध
100000 से अधिक आँखों के आपरेशन का अनुभव
अल्ट्रासाउण्ड द्वारा पर्दे की जांच की सुविधा उपलब्ध
IOL Master 700 द्वारा लेंस का नम्बर
लेजर द्वारा आंख की झिल्ली हटाने की सुविधा उपलब्ध
बी स्कैन द्वारा पर्दे की जांच उपलब्ध
OCT द्वारा काला पानी एवं पर्दे की जांच व उपचार
8077344353
समय : प्रातः 10 बजे से सायं 7 बजे तक (सोमवार से शनिवार)
डॉ. आदित्य त्यागी MBBS, DOMS, DNB, MNAMS CARARACT REFRATIVE & GLAUCOMA SURGERON
आयुष्मान कार्ड धारकों के लिए फ्री आपरेशन की सुविधा
ट्यूलिप ग्रांड के सामने, पीलीभीत बाईपास, बरेली

स्वास्थ्य जागरूकता अभियान
महीने के प्रत्येक रविवार को समय : सुबह 10 बजे से 5 बजे तक
निःशुल्क परामर्श डॉ. दीपक माहेश्वरी M.B.B.S., M.D. Consultant Physician & Critical Care Specialist ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, श्वांस रोग, गम्भीर रोग विशेषज्ञ
कैम्प में समस्त ब्लड जाँचें, ई.सी.जी., एक्स-रे 50% के छूट पर किये जायेंगे।
रजिस्ट्रेशन शुल्क 20/-
प्रेमलोक हॉस्पिटल •CARE FOR SURE•
नरियावल अड्डा, शाहजहाँपुर रोड, बरेली 9084307201, 9412244430
डॉ. नितिन अग्रवाल हृदय रोग विशेषज्ञ मो. 9457833777

डॉ. हारिस अंसारी
एम.एस., एम.सी.एच. (यूरोलॉजी)
Consultant Urologist & Andrologist
गुर्दा, प्रोस्टेट, पेशाब की थैली की पथरी व कैंसर सर्जन
● प्रोस्टेट (गदूद का आपरेशन) (TURP) ● गुर्दे की पथरी का आपरेशन (PCNL) ● गुर्दे की नली (यूरेटस) की पथरी का ऑपरेशन (URSC) ● पेशाब के समस्त प्रकार के रोगों का इलाज
कैशलेस, इंश्योरेंस, TPA व ESI आयुष्मान से अनुबन्धित अस्पताल
डॉ. एम. खान हॉस्पिटल
मल्टी स्पेशलिटी व क्रिटिकल केयर सेन्टर स्टेडियम रोड, निकट सेंट फ्रांसिस स्कूल, बरेली
हेल्पलाईन 9897838286, 9837549348

न्यूज ब्रीफ

आज आयोजित होगा हिन्दू सम्मेलन

करियामई, अमृत विचार : विकासखंड इस्लामनगर की ग्राम पंचायत करियामई में शनिवार को गांव के मुख्य रोड पर स्थित शिव मंदिर के हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। जिसकी तैयारियों को लेकर बैठक हुई। जिला प्रचारक राजीव कुमार ने बताया कि हिंदू सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. उमेश चंद्र उपाध्याय करेंगे। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य हिंदू समाज को एकजुट करने का है। साथ ही भारी संख्या में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने का हर संभव प्रयास करना है। जिसमें बाहर से आए अतिथि हिंदू समाज को एकजुट होने पर मुख्य भूमिका रहेगी।

अरिहंत समिति ने गरीबों को बांटे कंबल

बिल्सी, अमृत विचार : शुक्रवार को पदमांचल जैन मंदिर दिघौनी पर अरिहंत वृक्षारोपण सामाजिक सेवा समिति संगठन की ओर से ठंड से बचाव के लिए जरूरतमंद को कंबलों का वितरण किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ट्री मैन प्रशांत जैन, समाज सेविका शालिनी जैन, मृगांक जैन, मानसी जैन रही। उन्होंने कहा कि समाज के साधन-संपन्न लोगों को आगे आकर ऐसे सेवा कार्यों में सहभागिता करनी चाहिए, ताकि ठंड के मौसम में गरीब और असहाय लोगों को राहत मिल सके।छोटे-छोटे प्रयास भी जरूरतमंदों के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। कंबल पाकर जरूरतमंदों के चेहरे पर खुशी दिखाई दी। इस मौके पर रमेश बाबू शर्मा, कवि विष्णु असावा, देव ठाकुर, अमन वार्ष्णेय, टिंकू गुप्ता, टीटू यादव, रचना देशवाल आदि मौजूद रहे।

दो टावरों के बीच बिजली के तार चोरी

कुंवरगांव, अमृत विचार : कोतवाली सिविल लाइन क्षेत्र के गांव मौजमपुर छज्जू के जंगल से बिजली की पुरानी लाइन गुजर रही है। जहां टावर खडे. हुए हैं। चोरों ने दो टावरों के बीच लाइन काटकर तार चोरी कर लिए। कुछ कटे हुए तार लटक रहे हैं। सूचना मिलने पर महकमा ने सप्लाई बंद करा दी। ग्रामीणों के अनुसार तार चोरी के दौरान लाइन नीचे गिरी तो ग्रामीणों के नपलूपों पर नुकसान हुआ है। स्टार्टर और उपकरण फुंक गए। इन टावरों से हर साल तार चोरी किए जाते हैं। ट्रांसमिशन एसडीओ प्रशांत कुमार ने बताया कि यह लाइन चंदौसी से बदायूं को ट्रांसमिशन नवादा बिजली घर के लिए आई है। पुरानी होने के कारण यह बंद कर दी गई है। चोरी का मामला संज्ञान में आया है। मौके पर पहुंचकर जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी।

जानलेवा हमले का आरोपी गिरफ्तार

कुंवरगांव, अमृत विचार : थाना कुंवरगांव क्षेत्र के गांव इमलिया निवासी महताब पुत्र तोताराम मंगलवार रात अपने घर पर चारपाई पर सो रहे थे। उनके बेटे की पत्नी जयंती ने अपने मित्र रोहित के साथ मिलकर सोते समय ससुर पर जानलेवा हमला किया। उनके दोनों हाथों के अंगूठे काट दिए थे। पत्थर से सिर फोड़ा था। वह अपने मित्र के साथ मिलकर ससुर की पांच बीघा जमीन अपने नाम कराना चाहती थी। जिसकी वजह से अक्सर ही घर में विवाद होता रहता था। योजना बनाकर उसने घटना को अंजाम दिया। ससुर जमीन बेचने के दौरान अंगूठा न लगा सकें इसके लिए बांका से अंगूठे काट दिए। घायल महताब का अलीगढ़ में इलाज चल रहा है। घायल की बहन नेकसो की तहरीर पर जयंती और रोहित सागर के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई थी। पुलिस ने गुरुवार सुबह 11 बजे जयंती को एक्सप्रेस वे के पास से और शुक्रवार को रोहित को गंगा एक्सप्रेस वे के सर्विस रोड से गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को जेल भेजा गया है। गिरफ्तारी करने वाली टीम में उप निरीक्षक सुकेंद्र सिंह, सिपाही अनुज व राजेश मौजूद रहे।

माहौल बिगाड़ने का किया प्रयास चेयरमैन समेत नौ पर रिपोर्ट दर्ज

गुरुवार शाम चादर लेकर लगाए मजहबी नारे, माहौल बिगाड़ने का किया था प्रयास

संवाददाता, ओरछी

जुलूस निकाल रहे लोगों से अनुमति के बारे में पूछताछ करते पुलिसकर्मी।

- सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस, जुलूस निकाल रहे लोगों से चल रही पूछताछ

पुलिस को सूचना मिली कि कुछ लोग चादर के साथ फैजगंज बेहटा में जुलूस निकाल रहे हैं। पुलिस मौके पर पहुंची। मामले की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। सात लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। प्रथम दृष्टया जांच में पता चला है कि एक स्थानीय महिला ने अपने बच्चे के स्वस्थ होने की मन्नत मांगी थी। जिसके अंतर्गत उसने कुछ बाहरी लोगों को बुला लिया था। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

– डॉ. ह्रदेश कठेरिया, एसपी देहात

अमृत विचार : फैजगंज बेहटा थाना क्षेत्र के कस्बा में बिल्सी, रामपुर, हल्द्वानी के मुस्लिम समुदाय के लोगों ने माहौल बिगाड़ने का प्रयास किया। वह चादर लेकर हिंदू बस्ती में जुलूस के साथ गुजरे। लोगों ने विरोध किया तो हंगामा हुआ था। पुलिस की सक्रियता से सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने का प्रयास विफल हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। जुलूस निकाल रहे लोगों को हिरासत में लेकर थाने पहुंचे। पुलिस ने फैजगंज बेहटा नगर पंचायत के चेयरमैन समेत 9 लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करके जांच शुरू की है।

गुरुवार शाम लगभग साढ़े सात बजे मुस्लिम समाज के लोग कस्बा फैजगंज बेहटा की हिंदू बस्ती वार्ड सात में घुसे। कुछ लोग चादर पकड़े थे। मजहबी नारे लगा रहे थे। ढोल ताशे बज रहे थे। वह लोग बाहरी लग रहे थे। लोगों को उनपर शंका हुई। मोहल्ले के लोगों ने जुलूस निकालने पर आपत्ति जताई तो वह लोग झगड़ा करने पर आमादा हो गए थे। दोनों पक्षों में नोकझोंक होती रही। सूचना मिलने पर पुलिस बल कस्बा में पहुंचा। जुलूस निकल रहे लोगों से अनुमति पत्र मांगा। जो वह लोग नहीं दिखा सके।

इसके चलते पुलिस सभी को पकड़कर थाने ले गई। फैजगंज बेहटा के वार्ड चार निवासी आशीष तिवारी पुत्र महेंद्र पाल, शुभम पाराशरी, राजीव कुमार शर्मा, हिमांशु सक्सेना, रौकी, राजेंद्र कश्यप, संतोष कश्यप, फूल सिंह मौर्य, दिनेश कश्यप, राजीव पुत्र राम बिहारी ने शिकायत पत्र दिया। आशीष तिवारी ने तहरीर देकर नगर पंचायत चेयरमैन शह पर जुलूस निकाले जाने का आरोप लगाया। कस्बा में शांतिभंग होने की स्थिति बन गई थी। पुलिस ने फैजगंज बेहटा के चेयरमैन इसरार, कस्बा के वार्ड सात निवासी आशमी व उनके पति गुलशेर पुत्र जुम्मा, गांव विलासपुर के मोहल्ला खिरी मियां निवासी मोहम्मद यासीन पुत्र धुमी, बिल्सी नगर के मोहल्ला चार निवासी हमसुद्दीन पुत्र कल्लू, रामपुर के कस्बा स्वार के मोहल्ला रसूलपुर निवासी उस्मान पुत्र मोहम्मद हसमत, निजाम अहमद पुत्र नवी अहमद, बिल्सी क्षेत्र के गांव दुधौनी निवासी चमन पुत्र कमरुद्दीन और हल्द्वानी के आजाद नगर के वार्ड 24 निवासी मोहम्मद अबरार शाह पुत्र छोटे शाह के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। सात लोग पुलिस की हिरासत में हैं।

विवाहिता ने विषाक्त पदार्थ खाकर दी जान

विजय नगला, अमृत विचार : बिनावर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला ने विषाक्त पदार्थ खाकर जान दे दी।

वजीरगंज थाना क्षेत्र के गांव पूनापुर निवासी नेकसू की बेटी भुवनेश्वरी (22) की शादी तकरीबन दो साल पहले बिनावर क्षेत्र गांव अमृतपुर निवासी रामौतार पुत्र सुरेश के साथ हुई थी। रामौतार आंध्र प्रदेश में मजदूरी करते हैं। एक सप्ताह अपने मायके में रुकने के बाद मायका पक्ष बुधवार को दोपहर लगभग चार बजे भुवनेश्वरी को ससुराल छोड़कर गया था। एक घंटे बाद सूचना मिली कि भुवनेश्वरी ने विषाक्त पदार्थ खा लिया है। मायका पक्ष वापस लौटा, लेकिन तब तक महिला की मौत हो चुकी थी। मायका पक्ष ने हंगामा किया। रात भर दोनों पक्ष में फैसले का प्रयास होता रहा, लेकिन बात नहीं बनी। किसी ने पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस गांव पहुंची और महिला का शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा। सीओ सिटी ने ग्रामीणों से जानकारी की। ग्रामीणों के अनुसार पति से फोन पर विवाद होने के बाद महिला ने विषाक्त पदार्थ खाया था। थाना प्रभारी राजेंद्र सिंह ने बताया कि महिला की मौत की सूचना मिली थी। परिजनों की ओर से अभी तहरीर प्राप्त नहीं हुई है।

गांव, श्रमिक और किसान मजबूत होंगे तभी देश आगे बढ़ेगा

संवाददाता, वजीरगंज

चौपाल को संबोधित करते भाजपा क्षेत्रीय अध्यक्ष दुर्विजय सिंह शाक्य।

अमृत विचार : विकसित भारत रोजगार एवं आजीविका गारंटी मिशन वीबी जी राम जी के अंतर्गत गांव बगरैन के गौरीशंकर इंटर कॉलेज और बनकोटा में श्रमिक एवं किसान चौपाल लगाई गई। मुख्य अतिथि भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष दुर्विजय सिंह शाक्य, सदर विधायक महेश चंद्र गुप्ता, पूर्व विधायक कुशाग्र सागर ने श्रमिकों, किसानों और ग्रामीण जनों से संवाद कर संबोधित किया।

क्षेत्रीय अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा सरकार व्यवस्था का मूल उद्देश्य ग्रामीण समाज को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। जब तक गांव, मजदूर और अन्नदाता मजबूत नहीं होंगे, तब तक देश की प्रगति अधूरी रहेगी। इसी दृष्टिकोण के साथ इस मिशन को लागू किया गया है ताकि ग्रामीण परिवारों की आय के साधन सुरक्षित किए जा सकें। कहा कि विकसित भारत जी राम जी योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले श्रमिकों को 125 दिनों तक कार्य उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है। साथ ही कार्य न मिलने की स्थिति में आर्थिक सहायता का प्रावधान भी किया गया है, जिससे जरूरतमंद परिवारों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। सदर विधायक ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चलाई जा रही योजनाएं जमीनी स्तर पर असर दिखा रही हैं। पूर्व विधायक ने कहा कि विकसित भारत रोजगार एवं आजीविका गारंटी मिशन ग्रामीण जनता के लिए विश्वास और अवसर का माध्यम है। इस योजना से श्रमिकों और किसानों को सम्मानजनक रोजगार मिलेगा। गांवों में ही विकास के नए रास्ते खुलेंगे। जिला महामंत्री सुधीर श्रीवास्तव, जिला उपाध्यक्ष दुर्गेश वार्ष्णेय, ब्लॉक प्रमुख ओम कृष्ण सागर, अमित पाठक, भाजपा नेता विश्वजीत गुप्ता, रितेश चौहान, राघव सिंह, मनोज शर्मा, जयपाल दिवाकर, अनुज सक्सेना आदि उपस्थित रहे।

प्रधान पति समेत चार के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

संवाददाता, ओरछी

अमृत विचार : थाना फैजगंज बेहटा क्षेत्र के गांव सिसरका में बुधवार देर शाम चुनावी रंजिश और वर्चस्व की जंग ने हिंसक रूप ले लिया। वर्तमान प्रधान पति ने अपने तीन साथियों के साथ मिलकर पूर्व प्रधान नरेंद्र सिंह के घर पर धावा बोल दिया। घर में घुसकर सरिया और डंडों से जमकर उत्पात मचाया और मारपीट की। घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने दबंगई करने वाले प्रधान पति समेत चार लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। आरोपी पुलिस की पकड़ से दूर हैं।

पीड़ित पूर्व प्रधान नरेंद्र सिंह ने तहरीर देकर बताया कि वर्तमान प्रधान पति तनवीर उर्फ टिंकल, ललित, आशीष और पंकज ने अचानक उनके घर पर हमला कर दिया। वह लोहे की सरिया और डंडे लेकर आए थे। दबंगों ने घर के भीतर घुसकर परिजनों को पीटा और जमकर तोड़फोड़ की। सीसीटीवी फुटेज में हमलावरों का चेहरा और उनकी करतूत साफ नजर आ रही है। जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हुई। ग्रामीणों के अनुसार हमलावरों में शामिल युवक शातिर किस्म का है। जिस पर दूसरे जिलों में भी कई रिपोर्ट दर्ज हैं। हमलावरों के खिलाफ पिछले कुछ समय से आधा दर्जन तहरीर पहुंची हैं लेकिन पुलिस की सुस्ती की वजह से उनके हौसले बुलंद हैं। राजनीतिक दबाव की वजह से मामला रफा दफा करा दिया जाता है। ग्रामीणों के अनुसार पुलिस समय से अगर सख्त कार्रवाई करती तो बुधवार की घटना न होती। आरोपी फरार हैं।

पदोन्नति के बाद प्राधिकरण की सचिव बनीं कोमल

बदायूं, अमृत विचार : उच्च न्यायालय के आदेश अनुसार अपर सिविल जज कोमल श्रीवास्तव की पदोन्नत हुई है। उन्हें जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव बनाया गया है। जबकि प्राधिकरण की सचिव शिवकुमारी को विकास कुमार की जगह अपर जिला जज फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाया गया। विकास कुमार को महिलाओं से संबंधित अपराध का न्यायाधीश बनाया गया। पुष्पेंद्र चौधरी, सिविल जज सीनियर डिवीजन फास्ट ट्रैक अब कोमल श्रीवास्तव की जगह अपर सिविल डिविजन कोर्ट संख्या एक के न्यायाधीश होंगे। सिविल जज जूनियर डिवीजन, बिसौली पंकज कुमार पांडे को सिविल जज सीनियर डिवीजन फास्ट ट्रैक कोर्ट के न्यायाधीश होंगे। वह पुष्पेंद्र चौधरी का स्थान ग्रहण करेंगे। सिविल जज जूनियर डिवीजन बिसौली का न्यायालय रिक्त हो गया है।

भाजपा प्रतिनिधि मंडल ने अधिकारियों संग की बैठक

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में मौजूद भाजपा का प्रतिनिधि मंडल और डीएम अवनीश राय।

- प्रभात फेरी में ग्रामीणों पर लाठीचार्ज करने के दोषियों पर कार्रवाई करने को कहा

अमृत विचार : इस्लामनगर थाना क्षेत्र के ब्यौर कासिमाबाद में प्रभात फेरी के दौरान हुए लाठीचार्ज की घटना को लेकर भाजपा के प्रतिनिधि मंडल ने पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में डीएम अवनीश राय और एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह से मुलाकात की और दोषियों पर कार्रवाई करने को कहा।

थाना इस्लामनगर क्षेत्र के गांव में प्रभात फेरी के दौरान 16 जनवरी को पुलिस ने लाठीचार्ज किया था। गुरुवार को भाजपा के प्रतिनिधि मंडल ने गांव जाकर ग्रामीणों और लाठीचार्ज में घायल हुए लोगों से बात की। उनकी समस्याएं सुनी। प्रतिनिधि मंडल ने पीड़ितों और घायलों को पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस पर बुलाया और डीएम व एसएसपी के सामने पेश किया। घायलों ने प्रशासन के सामने पूरी घटना की जानकारी देते हुए अपनी आपबीती साझा की। प्रतिनिधि मंडल ने डीएम व एसएसपी से घटना की निष्पक्ष जांच कराकर दोषी पुलिसकर्मियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई किए जाने और पीड़ितों को न्याय दिलाने का बात रखी। प्रतिनिधि मंडल में क्षेत्रीय अध्यक्ष दुर्विजय सिंह शाक्य, जिलाध्यक्ष राजीव कुमार गुप्ता, सदर विधायक महेश चंद्र गुप्ता, दातागंज विधायक राजीव कुमार सिंह, बिल्सी विधायक हरीश शाक्य उपस्थित रहे।

निर्देश के बाद भी नहीं दी रिपोर्ट

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- एमओआईसी निजी अस्पतालों को नहीं कर रहे चिन्हित

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर सभी एमओआईसी को फिर से निर्देशित किया गया है। सभी को कहा गया है कि झोलाछापों पर नजर रखें उनकी सूची तत्काल मुहैया कराएं। विभाग की टीम भी काम कर रही है। किसी को छोड़ा नहीं जाएगा।

– डॉ. रामेश्वर मिश्रा, सीएमओ

अमृत विचार : निजी अस्पतालों की सूची बनाने के सीएमओ के निर्देश के बाद भी अभी तक किसी एमओआईसी ने झोलाछापों को चिन्हित कर सूची नहीं दी है। झोलाछापों पर कार्यवाही के डर से स्वास्थ्य विभाग के जिम्मेदार हीला हवाली कर रहे हैं।

जनपद में झोला छापों के खिलाफ चलाए गए अभियान के बाद भी निजी चिकित्सकों की दुकानों धड़ल्ले से चल रही हैं। गांव से लेकर शहरी और कस्बों में मुख्य रोड पर बड़े बड़े नर्सिंग होम चल रहे हैं। इनके खिलाफ शिकायत करने के बाद भी कार्यवाही नहीं की जाती है। कागजों में चले अभियान से झोलाछापों को अभयदान मिला हुआ है। झोला छापों पर ठोस कार्यवाही नहीं होने से शासन तक शिकायत पहुंच रहीं है। ऊपर तक शिकायत न पहुंचे इसके लिए दिसम्बर में सीएमओ डॉ. रामेश्वर मिश्रा ने जिले के सभी ब्लाकों के एमओआईसी को निर्देशित किया था कि वह अपने क्षेत्र में प्राइवेट डॉक्टरों को चिन्हित करें उनकी सूची कार्यालय को उपलब्ध कराएं। इससे उनके खिलाफ कार्यवाही की जा सके। सीएमओ के आदेश के 50 दिन बाद भी किसी एमओआईसी ने झोलाछापों को न तो चिन्हित किया और न ही उनकी सूची बना कर सीएमओ कार्यालय को दी है।

कार्यवाही के नाम पर दिए नोटिस

उझानी बिसौली और सहसवान में करीब दर्जन भर से अधिक प्राइवेट अस्पताल संचालित किए जा रहे हैं। तहसीलों में कार्यवाही के नाम पर केवल नोटिस दिए गए हैं। किसी के खिलाफ कार्यवाही नहीं की गई है। कादरचौक में एक प्राइवेट नर्सिंग होम के खिलाफ पिछले दिनों कार्यवाही की थी, लेकिन अस्पताल फिर भी संचालित हो रहा है। अस्पताल के एक हिस्से में बनी ओपीडी सील की थी, जबकि अन्य हिस्सा खुला छोड़ दिया गया था। इसमें आज भी मरीजों का इलाज किया जा रहा है।

कार के नीचे फंस गए युवक की मौत

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

इसी कार से खिचड़ा युवक।

- दूसरे वाहन चालक ने कार चालक को नीचे युवक के फंसने की दी थी जानकारी

अमृत विचार : सदर कोतवाली क्षेत्र के लालपुर तिराहे के पास एक कार के नीचे युवक खिचड़ता हुआ आया। पीछे से आए दूसरे कार सवार ने कार के नीचे खिचड़ने की जानकारी दी। चालक ने कार रोककर देखा तो युवक की मौत हो चुकी थी। राहगीरों की सूचना पर पुलिस पहुंची। मौके पर भीड़ जमा हो गई। सड़क पर दोनों ओर वाहनों की कतार लग गई। पुलिस कार चालक से पूछताछ कर रही है।

शुक्रवार देर शाम एक कार शहर के बाहर से लालपुल की ओर शहर में आ रही थी। इसी दौरान पीछे से आए एक कार सवार ने ओवरटेक करते हुए कार चालक को अवगत कराया कि उनकी कार के नीचे कोई युवक खिचड़ता हुआ आ रहा है। चालक ने कार रोकी तो उसके होश उड़ गए। कार के नीचे एक युवक था जिसकी मौत हो चुकी थी। सूचना मिलने पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। मौके पर जाम लग गया। पुलिस ने मृतक की जेब चेक की। जिसमें आधार कार्ड मिला। आधार कार्ड के अनुसार मृतक बिल्सी क्षेत्र के गांव रायपुर निवासी घलेंद्र पुत्र चुन्नी लाल हैं। वहीं कार चालक प्रवेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि वह गांव असरासी निवासी हैं। शहर में भी उनका आवास है। वह रोज गांव से शहर आते हैं। रास्ते में उनकी कार से किसी भी प्रकार का हादसा नहीं हुआ है। फिर युवक कार में कैसे फंसा इसकी जानकारी नहीं है। पुलिस ने मृतक के परिजनों को अवगत कराया है। बताया जा रहा है कि घलेंद्र राजमिस्त्री थे। वह शुक्रवार सुबह अपनी रिश्तेदारी में दावत खाने के लिए बाइक से गए थे। जहां स लौटते समय परिजनों को सूचना मिली कि उनका एक्सीडेंट हो गया है। परिजनों को शव मोर्चरी में रखा मिला। परिजनों ने आरोप लगाया कि जब वह बाइक से गए थे शव गाड़ी के नीचे कैसे फंस गया होगा। परिजनों ने संदिग्धता प्रतीक की है। पुलिस जांच कर रही है।

ग्राम पंचायतों को जारी किया जाएगा जीएसटी नंबर

कुंवरगांव, अमृत विचार : ग्राम पंचायतों में हो रहे विकास कार्यों में अब जीएसटी का बिल लगेगा। शुक्रवार को जीएसटी अधिकारी मोहित कुमार ब्लॉक सालारपुर पहुंचे और विकास कार्य संबंधी फाइलें चेक की।

एडीओ पंचायत शिव कुमार ने बताया कि ग्राम पंचायतों में हैंडपंप रिबोर, नाली व खड़ंजा, सीसी निर्माण कार्यों में रेता, बजरी, सीमेंट आदि में अब तक जीएसटी नंबर का प्रयोग नहीं कहा जाता है। ग्राम पंचायतों में विकास कार्य कराने वाले ठेकेदार जीएसटी से वंचित रहते थे लेकिन हर गांव की जीएसटी नंबर की फाइलें तैयार कराई जा रही है। उन्होंने बताया ब्लॉक क्षेत्र की 77 ग्राम पंचायतों के जीएसटी फाइलें बनेगी।

विकसित भारत
विकसित उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश दिवस

24-26 जनवरी, 2026

— का —

भव्य शुभारंभ

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले जनपदों को पुरस्कार

एक जनपद-एक व्यञ्जन (ODOC) योजना की लॉन्चिंग

उत्तर प्रदेश गौरव सम्मान 2025-26 का वितरण

सरदार वल्लभभाई पटेल एम्प्लॉयमेंट एंड इंडस्ट्रियल जोन योजना का शुभारंभ

— द्वारा —

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

अमित शाह
मंत्री, गृह एवं सहकारिता, भारत सरकार

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

— गरिमामयी उपस्थिति —

पंकज चौधरी
राज्य मंत्री, वित्त, भारत सरकार

केशव प्रसाद मौर्य
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

ब्रजेश पाठक
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

जयवीर सिंह
मंत्री, पर्यटन एवं संस्कृति, उत्तर प्रदेश

राकेश सचान
मंत्री, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग, उत्तर प्रदेश

बृज लाल
सदस्य, राज्य सभा

संजय सेठ
सदस्य, राज्य सभा

सुषमा खर्कवाल
महापौर, लखनऊ

डॉ. नीरज बोरा
विधायक, लखनऊ उत्तर

जय देवी
विधायक, मलिहाबाद

डॉ. राजेश्वर सिंह
विधायक, सरोजनी नगर

योगेश शुक्ल
विधायक, बक्शी का तालाब

ओ. पी. श्रीवास्तव
विधायक, लखनऊ पूर्व

अमरेश कुमार
विधायक, मोहनलालगंज

डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह
सदस्य, विधान परिषद

इंजी. अवनीश कुमार सिंह
सदस्य, विधान परिषद

मुकेश शर्मा
सदस्य, विधान परिषद

उमेश द्विवेदी
सदस्य, विधान परिषद

राम चन्द्र प्रधान
सदस्य, विधान परिषद

डॉ. लालजी प्रसाद 'निर्मल'
सदस्य, विधान परिषद

एवं अन्य गणमान्य महानुभाव

दिनांक : 24 जनवरी, 2026 | समय : अपराह्न 12:30 बजे | स्थान : राष्ट्र प्रेरणा स्थल, लखनऊ

प्रमुख आकर्षण

• राष्ट्र प्रेरणा स्थल पर शिल्प मेला, ODOC व्यञ्जन मेला एवं विकसित भारत-विकसित उत्तर प्रदेश पर आधारित प्रदर्शनी • बृज, बुंदेली, अवधी, भोजपुरी बोलियों एवं हिन्दी और संस्कृत भाषाओं में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां • समस्त जनपदों में स्थानीय कलाकारों, कवियों, साहित्यकारों की संगोष्ठियां, कविता पाठ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिता, रोड शो एवं मल्लखंब/ कबड्डी जैसे पारंपरिक खेलों का आयोजन • दिल्ली, महाराष्ट्र एवं अन्य राज्यों में उद्यमिता, व्यापार, नवाचार, शिक्षा, कला, विज्ञान, प्रशासन आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले उत्तर प्रदेश के व्यक्तियों का सम्मान • फिजी, मॉरीशस, मालदीव, सिंगापुर, थाईलैंड आदि देशों में भारतीय दूतावासों के सहयोग से उत्तर प्रदेश दिवस का भव्य आयोजन

प्रगति की गति अपार - डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | लाइव प्रसारण DD NEWS & Youtube.com/DDNEWS

अम्बा हैल्थ क्लीनिक
ISO:9001:2008 एवं Trademark Certified Clinic
डॉ. आर. एस. सिंह
B.A.M.S.
(आयुर्वेदाचार्य)
स्त्री-पुरुष रोग विशेषज्ञ
30 वर्षों से चिकित्सा का अनुभव प्राप्त
ISO.9001:2015 Certify Tredmark Clinic
★पतले-दुबले ★गाल पिचके ★कमजोर स्त्री-पुरुष ★मोटापा व वजन बढ़ाने के लिए
परामर्श लें।
चिकित्सा जानकारी
भूख न लगना, अपच, कब्ज, गैस बनना, खाने के बाद शौचालय जाना, बच्चों का शारीरिक विकास न होना, पुलिस व फोर्स आदि नौकरी में नाप तौल में कमी होना, बच्चों का बिस्तर गीला करना, मोटे पेट व थुल-थुले व्यक्ति का वजन कम करना, कील-मुंहासे, झाइयां, सफेद दागों व सावलापन हटाना, सुन्दर दिखाना, बालों का समय से पहले झड़ना, टूटना, सफेद होना एवं गंजापन होना, खूनी व वादी बवासीर आदि सभी बिमारियों का परामर्श लें।
किसी भी प्रकार का नशा जैसे
शराब, अफीम, गुटखा, सुल्फा, गांजा बीड़ी, सिगरेट आदि नसा छुड़ाने की रोगी को बिना लाये बिना बताये जानकारी प्राप्त करें।
स्त्री-पुरुष गुप्त समस्याएं
● स्वपन दोष, शीघ्रपतन, मर्दाना कमजोरी होना
● हस्तमैथुन, धात जाने से कमी होना
● इन्द्री का ढीलापन-छोटापन व पतलापन होना
● वीर्य में शुक्राणु का कम होना
● ल्यूकोरिया, बांझपन, बच्चेदानी में रसोली होना
● यौन अंगो का ढीलापन या इच्छा कम होना
● मासिक धर्म अनियमित होना या उम्र से पहले बन्द होना
वैवाहिक जीवन को सफल बनायें
अविकसित सीना को सुडौल आकर्षक बनायें
Sexually Transmitted Bacterial Disease
सुजाक, गिनोरिया, एड्स, यौन अंगो पर खुजली या छाले पड़ने पर तुरन्त डाक्टर से सम्पर्क करें
गलत फिल्में देखने व फोन पर बातें करने से या पेशाब में चिपचिपा पदार्थ निकलने पर तुरन्त सम्पर्क करें
डॉ. साहब
आपके विश्वास पर सभी बिमारियों को ठीक करने की कोशिश कर सकते हैं दावा या गारंटी नहीं दे सकते
मिलें सुबह 11 से सायं 5 बजे तक
दिनांक :-
11 जनवरी 2026, रविवार
25 जनवरी 2026, रविवार
निकट बरेली कॉलेज, होटल मोती महल काली बाड़ी चौराहा, बरेली
9837069463
7599211076

श्रीराम सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में मां सरस्वती की हुई पूजा, छात्र-छात्राओं ने नेता जी सुभाष चंद्र बोस का जन्मदिन भी मनाया

श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया बसंत पंचमी का पर्व, हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम

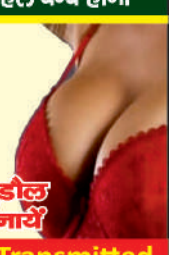

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : मां वीणा वादिनी विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती का प्राकट्य दिवस जिले भर में श्रद्धा और भक्ति भाव से मनाया गया। स्कूलों में मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

शहर के मीरा चौकी स्थित श्रीराम सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती का प्राकट्य दिवस, धर्म रक्षा हेतु अपने प्राणों का बलिदान देने वाले वीर बालक हकीकत राय का बलिदान दिवस एवं मां भारती के श्रेष्ठ नायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्मदिन हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान अलंकार रस्तोगी, पूजा रस्तोगी, सिद्धार्थ कश्यप, ओम प्रकाश वैश्य, प्रधानाचार्य कालिका प्रसाद गंगवार. यज्ञकर्ता पंडित बृजेश मिश्रा, प्रवेश मिश्रा रहे। प्रधानाचार्य कालिका प्रसाद गंगवार ने देशभक्त अमर शहीद नेताजी सुभाष चंद्र बोस एवं देश धर्म की रक्षा हेतु अपना बलिदान देने वाले वीर बालक हकीकत राय के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर नवीन शिशुओं का पाटी पूजन कराकर विद्यारंभ संस्कार कराया गया। वसंतोत्सव से संबंधित मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने आगंतुक अतिथि महानुभावों का मन मोह लिया. प्रधानाचार्य कालिका प्रसाद गंगवार ने आगंतुक अतिथियों का परिचय कराया तथा कार्यक्रम का संचालन अनुज सक्सेना ने किया। इस अवसर पर तरन वैश्य, अनीता गुप्ता, राजकुमार सिंह सेंगर, कमलेश कुमार, अनुज पटेल, दिनेश कुमार शर्मा सहित समस्त आचार्य परिवार उपस्थित रहा।

स्कूल में हवन पूजन करते शिक्षक। ● अमृत विचार

मिलाप सनातन धर्म पब्लिक स्कूल में बसंत पंचमी के पर्व पर विद्यालय में बसंत उत्सव का कार्यक्रम किया गया। जिसमें मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण किया गया एवं सरस्वती मां के जन्मदिन को बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। पंजाबी मंदिर से निकलने वाली प्रभात फेरी का स्वागत किया गया एवं कीर्तन किया गया जिसमें विद्यालय प्रांगण गुंजायमान हुआ।

विद्या की देवी मां सरस्वती का मनाया जन्मोत्सव

बदायूं, अमृत विचार : पंजाबी चौक स्थित श्री गुरु नानक जूनियर हाई स्कूल प्रांगण में शुक्रवार को बसंत पंचमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। सभी बच्चे और विद्यालय कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने सरस्वती मां के समक्ष दीप प्रज्वलित व माल्यार्पण किया। इसके उपरांत कक्षा 8 की अर्पिता ने सरस्वती वंदना अन्वी, और कक्षा 7 की आराध्य श्रीवास्तव कक्षा 6 की हिमांशी व अवनी गुप्ता ने भी अपने विचार कविता व भाषण द्वारा व्यक्त किए। कक्षा 6 की राशि व उन्नति ने आयो रे शुभ दिन आयो रे, गाने पर नृत्य किया। प्रधानाचार्य नीलम अग्रवाल, उपाध्यक्ष वीना कोचर, वरिष्ठ उपाध्यक्ष गुरदीप सिंह, विद्यालय की अध्यक्ष रजनी अनेजा, राजेंद्र अनेजा, मंजीत सिंह, रणजीत सिंह, संजय मलिक एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

मां सरस्वती को पुष्प अर्पित करते शिक्षकगण।

स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाई बसंत पंचमी

बिल्सी, अमृत विचार : शुक्रवार को बाबा इंटरनेशनल स्कूल में कक्षा पी.जी. से के.जी. तक के विद्यार्थियों के मध्य वसंत पंचमी का पर्व हर्षोल्लास एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया। वसंत पंचमी के पर्व पर विद्यार्थी एवं शिक्षक पीले रंग की वेशभूषा धारण कर विद्यालय पहुंचे, जिससे संपूर्ण परिसर पीले रंग की छटा से सराबोर हो गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के डायरेक्टर अनुज वार्ष्णेय, निर्देशिका साधना वार्ष्णेय एवं प्रधानाचार्य रूपा माहेश्वरी द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन, तिलक एवं माल्यार्पण कर किया गया। विद्यालय डायरेक्टर अनुज वार्ष्णेय ने कहा कि मां सरस्वती का जन्मदिन बसंत पंचमी के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर विद्यालय प्रशासक अमित माहेश्वरी एवं समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

मां सरस्वती की आराधना करते बच्चे। ● अमृत विचार

विद्या की देवी मां सरस्वती को समर्पित पर्व बसंत पंचमी

बदायूं, अमृत विचार : ब्लूमिंगडेल स्कूल प्रांगण में बसंत पंचमी पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। इस मौके पर विशेष प्रार्थना सभा के साथ अनेक कार्यक्रम बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का शुभारम्भ स्कूल प्रबंधन द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण कर किया गया। तत्पश्चात बच्चों ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत कर स्वर संगम की शुरुआत की। स्कूल अध्यक्ष पम्मी मेंहदीरत्ता, प्रधानाचार्य संजीव सिंह राठौर, मैनेजिंग हेड ईशान मेंहदीरत्ता, श्वेता मेंहदीरत्ता, उपप्रधानाचार्य परशुराम मिश्रा, एकेडमिक हेड सौरभ गांगुली, कॉर्डिनेटर अंजला सोनी, मृणाल सक्सेना, सुषमा वर्मा एवं समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

चल-अचल संपत्ति का नहीं दिया ब्योरा

31 जनवरी तक संपत्ति का ब्योरा नहीं देने पर शिक्षकों का रुकेगा फरवरी का वेतन

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- महानिदेशक शिक्षा ने बीएसए को निर्देश जारी कर ब्योरा अपलोड कराने को कहा
- शिक्षकों और अधिकारियों को मानव संपदा पोर्टल पर अपलोड करना है ब्योरा

अमृत विचार : परिषदीय और माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक और शिक्षा अधिकारियों के द्वारा चल अचल संपत्ति का ब्योरा अपलोड़ करने में लापरवाही बरती जा रही है। इस पर महानिदेशक स्कूल शिक्षा ने नाराजगी जताई है। बीएसए और जिला विद्यालय निरीक्षक को आदेश दिए है कि 31 जनवरी तक शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों का चल अचल संपत्ति का ब्योरा मानव संपदा पोर्टल पर अपलोड कराएं। चेतावनी दी है कि निर्धारित समय पर ब्योरा अपलोड करने पर फरवरी माह का वेतन रोक दिया जाएगा।

महानिदेशक स्कूल शिक्षा मोनिका रानी ने जिला विद्यालय निरीक्षक और बेसिक शिक्षा अधिकारी को जारी किए पत्र में कहा है कि शासन के निर्देश के क्रम में सभी अधिकारियों-कर्मचारियों को अपनी चल-अचल संपत्ति का ब्योरा 31 जनवरी तक मानव संपदा पोर्टल पर अपलोड करना है। लेकिन शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों के द्वारा ब्योरा अपलोड़ करने में लापरवाही बरती जा रही है, जोकि शासन के आदेशों के प्रति घोर लापरवाही को उजागर कर रहा है। कड़ी आपत्ति जताते हुए आदेश दिए है कि अगर शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने चल अचल संपत्ति का ब्योरा मानव संपदा पोर्टल पर निर्धारित तिथि तक अपलोड नहीं किया तो उनका फरवरी माह का वेतन रोक दिया जाएगा। महानिदेशक शिक्षा द्वारा कड़ी आपत्ति जताने पर शिक्षा अधिकारियों ने शिक्षकों, खंड शिक्षा अधिकारियों और कर्मचारियों को आदेश जारी कर निर्धारित तिथि तक चल अचल संपत्ति का ब्योरा मानव संपदा पोर्टल दर्ज कराने को कहा है। साथ ही वेतन रोकने की चेतावनी भी दी है।

15 हजार शिक्षक और कर्मचारी हैं कार्यरत

बेसिक और माध्यमिक शिक्षा विभाग में करीब 15 हजार शिक्षक, अधिकारी और कर्मचारी कार्यरत हैं। इनमें बेसिक के 8500 शिक्षक, दो हजार अधिकारी कर्मचारी कार्यरत हैं। वहीं माध्यमिक में तीन हजार के आस पास शिक्षक, कर्मचारी कार्यरत हैं। इन सभी को अपनी चल अचल संपत्ति का ब्योरा मानव संपदा पोर्टल पर अपलोड करना है। पूर्व में यह नियम राजपत्रित अधिकारियों के लिए ही बनाया गया था। जमीन, मकान और दुकान आदि अचल संपत्ति खरीदने पर विभाग को जानकारी देनी होती थी। नई गाइडलाइन के मुताबिक, अब शिक्षा विभाग को भी शामिल किया गया है।

> खंड शिक्षा अधिकारी से लेकर शिक्षक और कर्मचारियों को चल अचल संपत्ति की जानकारी हर साल देनी होती है। इसकी समय सीमा 31 जनवरी तय की गई है। कोई शिक्षक, कर्मचारी अधिकारी संपत्ति का ब्योरा नहीं देगा तो उसका वेतन रोक दिया जाएगा। इसके लिए मानव संपदा पोर्टल पर ऑनलाइन जानकारी भरनी होगी। आदेश जारी कर दिए गए हैं। – **वीरेंद्र कुमार सिंह**, बीएसए

धूमधाम से मनाया श्री श्री गौर-निताई का 39वां वर्षगांठ महोत्सव

बदायूं, अमृत विचार : शहर के बिरबावाड़ी मंदिर परिसर में श्री श्री गौर-निताई का 39वां वर्षगांठ महोत्सव श्रद्धा और उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया गया। महोत्सव के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंदिर परिसर में एकत्र हुए।कार्यक्रम के दौरान दुग्ध अभिषेक किया गया, जिसके बाद फूलों की होली खेली हुई। भजन-कीर्तन और जयघोष के बीच पूरा वातावरण भक्तिमय बना रहा। श्रद्धालु भक्ति भाव में लीन नजर आए।

आरती करने के बाद श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं, युवाओं और बच्चों की भी भागीदारी रही। आयोजन को सफल बनाने में ट्रस्ट के सदस्यों एवं स्वयंसेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस मौके पर पंकज, अरुण, अनिल, श्याम, ऋषिराम, पवन, राकेश, अभिषेक, अजय, गौरांग, अक्षत, कृष्णा, हर्ष, अग्र, देवास आदि मौजूद रहे।

गायत्री शक्तिपीठ पर हुआ पांच कुंडीय गायत्री महायज्ञ

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : गायत्री शक्तिपीठ एवं आध्यात्मिक चेतना केंद्र पर आत्मीय परिजनों ने मां सरस्वती के पूजन के साथ युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का आध्यात्मिक दिवस श्रद्धा व धूमधाम से मनाया। शक्तिपीठ पर भक्ति, साधना और आध्यात्मिक चेतना का वातावरण बना रहा। पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ हुआ। आत्मीय परिजनों ने विश्व कल्याण की कामना से आहुतियां समर्पित कीं। दीक्षा संस्कार एवं विद्याराम संस्कार भी हुए।

परिव्राजक सचिन देव ने कहा कि मां सरस्वती ज्ञान, विवेक और सद्बुद्धि प्रदान करती हैं। विद्या का वास्तविक उद्देश्य मानव को संस्कारित, संयमी और समाजोपयोगी बनाना है। युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विचार आज के समय में और भी अधिक प्रासंगिक हैं, जो व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा देते हैं। मुख्य यजमान डॉ. श्रीराम अवतार शर्मा व श्रीमती दमयंती शर्मा का 50वां विवाह दिवस मनाया गया। रामचंद्र प्रजापति, मदनलाल झा, संतोष शर्मा, संजीव शर्मा, कृपा शंकर पाठक, हरिओम शर्मा, लक्ष्मी नारायण शर्मा, कालीचरण, राजश्री देवी, सत्यपाल, कमला देवी, सुशील कुमार गुप्ता, बृजेश कुमारी, दीपक शर्मा आदि मौजूद रहे।

महायज्ञ में आहुति देते श्रद्धालु।

निशान यात्रा में शामिल श्रद्धालु और बच्चे। ● अमृत विचार

श्रद्धालुओं ने निकाली निशान यात्रा, लगाए जयकारे

संवाददाता, ओरछी

अमृत विचार : कस्बा फैजगंज बेहटा के वार्ड संख्या सात स्थित शिव मंदिर परिसर में शुक्रवार को खाटूश्याम की मूर्ति स्थापना के दो साल पूरे पर स्थापना दिवस मनाया गया। श्रद्धालुओं ने नगर में निशान यात्रा निकाली।

श्रद्धालु ढोलक-बाजे के साथ प्रभु का गुणगान करते हुए निर्धारित मार्गों पर घूमे। जिससे नगर का माहौल भक्तिमय हो गया।

कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालु भजन-कीर्तन करते हुए चल रहे थे। साथ ही भगवान श्याम के जयकारे लगा रहे थे। निशान शोभायात्रा का नगर में जगह-जगह पुष्प वर्षा की। इस दौरान क्षेत्राधिकारी बिसौली सुनील कुमार व थानाध्यक्ष फैजगंज बेहटा राजकुमार सिंह भारी पुलिस बल के साथ मौके पर मौजूद रहे।

तुलसी विवाह का प्रसंग सुन भाव विभोर हुए श्रद्धालु

संवाददाता, बिल्सी

अमृत विचार : तहसील क्षेत्र के ग्राम नगला डल्लू स्थित रामदास बृजलाल मेमोरियल इंटर कॉलेज में आयोजित श्री शिव महापुराण कथा के छठे दिन भक्तों की अपार भीड़ उमड़ी। कथा व्यास दीपक शंखधार ने शालिग्राम एवं तुलसी विवाह के पावन प्रसंग के साथ-साथ भक्त प्रह्लाद और हिरण्यकश्यप की कथा को भावपूर्ण शैली में विस्तार से प्रस्तुत किया।

कथा व्यास ने शालिग्राम-तुलसी विवाह की महत्ता बताते हुए कहा कि इस विवाह के आयोजन से परिवार में सुख-समृद्धि, सौभाग्य और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। तथा गृहस्थ जीवन के कष्ट दूर होते हैं। विवाह प्रसंग का सजीव वर्णन सुनकर पंडाल में मौजूद श्रद्धालु मंत्रमुग्ध हो गए। भक्त प्रह्लाद और उसके पिता हिरण्यकश्यप का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि अहंकार और अत्याचार का अंत निश्चित है, जबकि सच्ची भक्ति सदैव विजय दिलाती है। हिरण्यकश्यप द्वारा प्रह्लाद को अनेक कष्ट दिए जाने के बावजूद भगवान विष्णु के प्रति उसकी अटूट आस्था डगमगाई नहीं। आरती के उपरांत प्रसाद वितरण किया गया।

तुलसी विवाह का प्रसंग सुनाते कथा व्यास।

अटल आवासीय विद्यालय प्रवेश परीक्षा 22 को

बदायूं, अमृत विचार: बरेली स्थित अटल आवासीय विद्यालय में शैक्षिक सत्र 2026-27 की प्रवेश प्रक्रिया शुरू होने जा रही है। कक्षा छह में बालक व बालिकाओं को कक्षा छह और नौ में प्रवेश दिया जाएगा। कक्षा नौ और छह में बालक बालिकाओं की 334 सीटें रिक्त हैं। इच्छुक अभ्यर्थी 31 जनवरी तक आवेदन कर सकते हैं। प्रवेश परीक्षा 22 फरवरी को होगी। परीक्षा के लिए शहर स्थित श्री कृष्णा इंटर कॉलेज को केंद्र बनाया गया है। जहां करीब 600 से अधिक बच्चे परीक्षा में बैठेंगे।

प्रवेश प्रक्रिया में कोविड काल के दौरान अनाथ हुए बच्चों को प्राथमिकता दी जाएगी। वही छात्र प्रवेश के पात्र होंगे, जिनके अभिभावक उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड में पंजीकृत निर्माण श्रमिक हों।

बिल्सी में धूमधाम से निकाली गई मां शारदे की शोभायात्रा

संवाददाता, बिल्सी

अमृत विचार : नगर के बिजलीघर रोड स्थित नव दुर्गा मंदिर समिति की ओर से शुक्रवार को बसंत पंचमी महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में मां शारदे की शोभायात्रा निकाली गई। जिसका जगह-जगह लोगों ने स्वागत किया।

कोतवाल मनोज कुमार सिंह ने फीता काटकर मां शारदे की शोभायात्रा का शुभारंभ किया। उसके बाद शोभायात्रा को निकाला गया। जिसमें भगवान गणेश जी, हनुमान जी, मां दुर्गा जी, शंकर भगवान, राधा कृष्णा की झांकियां शामिल रही। शोभायात्रा बिजलीघर से प्रारंभ होकर बंबा चौराहा, सोमानी तिराहा, थाना मार्ग, सीताराम मोड़, बालाजी तिराहा, स्टेट बैंक मार्ग होती हुई नव दुर्गा मंदिर पर समाप्त हुई। नगर के खैरी रोड पर बालाजी मंदिर और राजकीय डिग्री कालेज गेट के निकट भक्तों ने शोभायात्रा को जलपान कराकर स्वागत किया। इसको सफल बनाने शुभम शर्मा, पवन वाष्र्णेय, आलोक कुमार, हरपाल, जगदीश प्रेमी, नत्थूलाल आर्य, एसपी सिंह, धर्मपाल शर्मा, श्रीपाल, विनेश बाबू, नन्हे लाल, प्रेमपाल, आदि का सहयोग रहा।

शोभायात्रा में शामिल झांकी।

शोभायात्रा का स्वागत कर कराया भंडारा

बिल्सी, अमृत विचार : नगर के खैरी रोड स्थित श्री बालाजी मंदिर एवं बैंक ऑफ बड़ौदा के निकट शुक्रवार को बसंत पंचमी और मां सरस्वती के जन्मोत्सव के अवसर पर श्रद्धालुओं द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया। भंडारे में नगर व आसपास के क्षेत्रों से पहुंचे सैकड़ों श्रद्धालुओं ने माता रानी का प्रसाद ग्रहण किया।पूरे परिसर में धार्मिक उल्लास और भक्तिमय वातावरण बना रहा। इस दौरान श्रद्धालुओं ने जमकर डांस किया। इससे पूर्व नगर में निकली बसंत पंचमी की भव्य शोभायात्रा का श्री बालाजी मंदिर के समीप श्रद्धालुओं ने फूल-मालाओं और पुष्पवर्षा कर जोरदार स्वागत किया। इसको सफल बनाने में रामनिवास देवल, अरविंद राठौर, रामभरोसे लाल, जितेंद्र माहेश्वरी, ऋतिक देवल, भुवनेश गुप्ता, मुकेश कुमार, बिपिन कावरा, महेंद्र पाल, नीरज देवल, जुगल किशोर आदि रहे।

बदायूं डायरी

रामलला की वर्षगांठ पर निकाली शोभा यात्रा

उसहैत, अमृत विचार : रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की तीसरी वर्षगांठ पर भगवा सेना के अध्यक्ष ध्रुव देव गुप्ता एवं प्रदेश अध्यक्ष हिमांशु पंडित के नेतृत्व में कालसेन बाबा मंदिर में हवन पूजन के बाद भव्य राम रथ यात्रा का निकाली गई। मुख्य अतिथि अमित कुमार सिंह रिंकू भैय्या एवं विशिष्ट अतिथि मुजरिया थानाध्यक्ष ज्योति सिंह समाजसेवी ज्वाला प्रसाद गुप्ता अरविंद गुप्ता ने भगवान श्रीराम का तिलक कर आरती उतार कर रामरथ को भगवा झंडा दिखा कर जय श्रीराम के जय घोष के साथ शुभारंभ किया। भगवा सेना द्वारा आयोजित राम रथ शोभायात्रा को हर्षोल्लास के साथ मुख्य स्थानो से निकाला गया। इस अवसर पर धर्मपाल यादव, श्रीराम कश्यप, अखिलेश गुप्ता, नरेश चंद्र गुप्ता, रविन्द्र मिश्रा, राममूर्ति कश्यप, रवि गुप्ता, सुरेश मेंबर, बलजीत शाक्य, सुनील वर्मा, विजय भारद्वाज, राजू राठौर, अर्जुन शर्मा, पुष्पेंद्र श्रीवास्तव, सुमित शाक्य, विवेक शर्मा सहित सैकड़ों रामीक्त शोभा यात्रा में शामिल हुए।

पराक्रम दिवस पर कंपोजिट विद्यालय में गूंजा जय हिंद

कादरचौक, अमृत विचार : कंपोजिट विद्यालय कौआ नगला में महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पराक्रम दिवस के रूप में मनाई गई। प्रधानाध्यापक एवं विद्यालय स्टाफ द्वारा नेताजी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया।कार्यक्रम शुरू किया गया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को नेताजी के संघर्षपूर्ण जीवन, आज़ाद हिंद फौज के गठन और उनके राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत विचारों की जानकारी दी। इसके बाद विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत, कविताएं प्रस्तुत की, तथा तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा, जैसे नारों का सामूहिक उद्घोष किया गया।

अखंड रामायण पाठ का समापन

करियामई, अमृत विचार : बिकास खंड इस्लामनगर के गांव करियामई स्थित भव्य श्री राम जी के मंदिर में बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में शुक्रवार को अखंड रामायण पाठ समापन कर भंडारे का आयोजन किया गया। अयोध्या में भगवान श्री राम जी के मंदिर व बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में गुरुवार से अखंड रामायण कीर्तन के के बाद शुक्रवार को हवन पूजन आरती के साथ समापन हुआ।समापन के बाद श्री बजरंग सेवा दल सुंदरकांड कमेटी द्वारा भंडारे का आयोजन किया, जिसमें कन्याओं को खीर पूड़ी का प्रसाद खिलाया और उन्हें भेंट स्वरूप दक्षिणा दी। उसके बाद भक्तों ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया और जय श्री राम का जयघोष किया। इस मौके पर बजरंग सेवा दल कमेटी से मनोज उपाध्याय, अखिलेश उपाध्याय, राकेश उपाध्याय, राजेंद्र मास्टर, मुकेश गुप्ता, दीपू शर्मा के साथ समस्त सुंदरकांड कमेटी, राजेन्द्र मिश्रा आदि मौजूद रहे।

स्कूल में बच्चों ने मनाई बसंत पंचमी

बदायूं, अमृत विचार : लॉर्ड कृष्णा इंटरनेशनल स्कूल में शुक्रवार को बसंत पंचमी के अवसर पर विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती का विधिवत पूजा-अर्चना किया गया। आगामी शैक्षणिक सत्र हेतु द्वितीय एंट्रेंस एग्जाम का भी सफल आयोजन किया गया।

एंट्रेंस परीक्षा में लगभग 230 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। परीक्षा का आयोजन पूर्णत: सुव्यवस्थित, शांत एवं अनुशासित वातावरण में किया गया। एंट्रेंस एग्जाम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षिक क्षमता का आकलन कर उन्हें गुणवत्तापूर्ण एवं संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान करना है। इस अवसर पर विद्यालय के संस्थापक वेदव्रत त्रिवेदी, सह-संस्थापक तेजस्वी त्रिवेदी, निदेशिका छवि शर्मा एवं रीता शर्मा, शैक्षिक निदेशक देवव्रत त्रिवेदी व प्रधानाचार्य दीपक त्यागी मौजूद रहे।

न्यूज ब्रीफ

गलत दिशा में वाहन चलाने पर एआरटीओ ने किए चालान

बदायूं, अमृत विचार : राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत एआरटीओ प्रवर्तन व प्रशासन हरिओम, पीटीओ अभिनव कुमार चौधरी ने ओवरलोड वाहन, गलत दिशा वाहन संचालन, वाहनों पर हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट, मानक के अनुसार नंबर प्लेट न होने, बिना हेलमेट के वाहन संचालित करने संबंधी अभियान चलाया। इस दौरान 19 माल वाहन चेक किए गए। जिसमें 4 वाहन ओवरलोड पाए गए। जिनका चालान किया गया। इसके अलावा 8 वाहन गलत दिशा में संचालित करने, 11 पर एचएसआरपी न होने, 31 बिना हेलमेट चलने वालों पर कार्रवाई की गई।

कांग्रेसियों ने हड़ताली आशा कर्मियों को दिया समर्थन

बदायूं, अमृत विचार : अपनी विभिन्न मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट आशा कर्मियों की हड़ताल शुक्रवार को 39वें दिन भी जारी रही। आशा कर्मियों की हड़ताल को शुक्रवार को कांग्रेसियों ने समर्थन दिया और कहा कि सरकार को उनकी समस्याओं को सुनना चाहिए। शुक्रवार को मालवीय आवास गृह पर जुटी आशा कर्मियों ने अपने खून से मुख्यमंत्री को पत्र लिखने के फैसले को आल इंडिया सेंट्रल काउंसिल ऑफ ट्रेड यूनियंस के प्रदेश अध्यक्ष विजय विद्रोही के आग्रह पर स्थगित कर दिया। जिलाध्यक्ष जौली वैश्य ने कहा कि केंद्र सरकार 2 फरवरी को अपना बजट प्रस्तुत करने जा रही है। इसलिए दिल्ली में बैठी सरकार को 45/ 46 वे भारतीय श्रम सम्मेलन की सिफारिशों राज्य के साथ लागू करने के लिए बाध्य करने हेतु 30 जनवरी को गांधी भगत सिंह अम्बेडकर के रास्ते, आशा कर्मियों के बेहतर जीवन के वास्ते, नारे के साथ 9 फरवरी को लखनऊ कूच किया जाएगा। इस मौके पर मुन्नी, विनय, सुनीति, अलका, मीना, राजेश्वरी, गिरिजा , सुमनलता, आदि ने भी अपने विचार रखे।

सपा सचिव ने परिजनों को दिए 50 हजार रुपये

उझानी, अमृत विचार : उझानी के गांव कुड़ा नरसिंहपुर स्थित मेंथा फैक्ट्री के केबिन में दम घुटने से तीन सुरक्षाकर्मियों की मौत हो गई थी। सपा के राष्ट्रीय सचिव योगेंद्र तोमर मृतक जुगेंद्र यादव के घर गांव बसावनपुर पहुंचे। शोकाकुल परिजनों को सांत्वना दी। मृतक के परिजन को 50 हजार रुपये का चेक देकर आर्थिक मदद दी।

आपात स्थिति से निपटने को बदायूं सिटी मॉल में मॉक ड्रिल

अग्निशमन विभाग ने बुझाई आग, एम्बुलेंस से जिला अस्पताल भेजे घायल

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : भारत सरकार के निर्देश पर पराक्रम दिवस पर कानून-व्यवस्था, आपदा प्रबंधन और सुरक्षा प्रतिक्रिया प्रणाली को प्रभावी बनाने और आपात स्थिति से निपटने के उद्देश्य से बदायूं सिटी मॉल में ब्लैक आउट (मॉक ड्रिल) का अभ्यास कराया गया। पूरा समय अंधेरा छाया रहा। मॉल के कुछ हिस्से में आग लगाई गई और अग्निशमन विभाग ने बुझाई। हादसे में घायलों को उठाकर एम्बुलेंस से ले जाया गया। डीएम अवनीश राय, एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह, एसपी सिटी विजयेंद्र द्विवेदी, एसपी देहात डॉ. ह्रदेश कठेरिया, सीओ सिटी रजनीश उपाध्याय मॉक ड्रिल के दौरान मौजूद रहे।

मॉक ड्रिल के दौरान आग लगने की काल्पनिक स्थिति उत्पन्न कर फायर सर्विस की टीम द्वारा तत्काल मौके पर पहुंचकर अग्निशमन उपकरणों के माध्यम से आग पर काबू पाने, घायलों को सुरक्षित निकालने, प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराने और रेस्क्यू ऑपरेशन का अभ्यास किया गया। सायरन बजाकर आपातकाल होने की स्थिति से अवगत कराया गया। फायर फाइटिंग ने आगजनी पर काबू पाया। आपदा के समय विभिन्न विभागों के साथ आपसी समन्वय, संचार व्यवस्था व त्वरित निर्णय क्षमता का परीक्षण भी किया गया। घायलों को तत्काल जिला अस्पताल भेजा गया। अभ्यास में पुलिस फायर सर्विस, डायल 112 और चिकित्सा विभाग की टीमों ने प्रतिभाग करके एयर रेड के दौरान बचाव के तरीकों और बरती जाने वाली सावधानी का प्रदर्शन किया।

मॉक ड्रिल के दौरान मौजूद डीएम अवनीश राय और एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह।

घायल को इलाज के लिए ले जाता कर्मचारी।

मॉक ड्रिल के मुख्य उद्देश्य

- आतंकी हमला/बम धमाका जैसी स्थिति से निपटने का अभ्यास
- आग, दंगा, भगदड़ या आपदा की स्थिति में त्वरित कार्रवाई
- पुलिस, फायर ब्रिगेड, एंबुलेंस और प्रशासन के बीच समन्वय
- पुलिस बल की तैयारी, रिस्पॉन्स टाइम और रणनीति की जांच
- आम नागरिकों को सतर्क और जागरूक करना

आग लगने के बाद मॉल से बाहर आते लोग। ● अमृत विचार

ब्लैक आउट के दौरान रहें सतर्क

- घर, प्रतिष्ठान, वाहन, मोबाइल की फ्लैशलाइट और बिजली के उपकरण तुरंत बंद करें।
- इनवर्टर व जनरेटर बंद करें ताकि बाहरी रोशनी समाप्त हो सके।
- खिड़कियों व दरवाजों के परदे बंद करें ताकि रोशनी बाहर न दिखे।
- वाहन चला रहे हों तो तुरंत किनारे लगाकर बंद कर दें, हेडलाइट और इंडिकेटर बंद रखें।
- सभी सदस्य विशेषकर बच्चे, बुजुर्गों और दिव्यांगजनों को सुरक्षित रखें।
- रेडियो, मोबाइल या अन्य माध्यमों से सरकारी निर्देश सुनते रहें।
- पड़ोसियों को भी सतर्क करें, विशेषकर अकेले रह रहे लोगों को।
- जरूरी दवाइयां और टॉर्च आदि सामान पहले से तैयार रखें।

डीएम ने किया एसआईआर के कार्यों का निरीक्षण

बदायूं, अमृत विचार : जिलाधिकारी व जिला निर्वाचन अधिकारी अवनीश राय ने शुक्रवार को विकासखंड म्याऊं व जगत आदि ब्लॉकों का निरीक्षण कर विशेष प्रगाण पुनरीक्षण (एसआईआर) कार्यक्रम के कार्यों की प्रगति का निरीक्षण किया। इस दौरान डीएम ने कहा कि सभी पात्र व्यक्तियों के मतदाता कार्ड अवश्य बनने चाहिए। उन्होंने कहा कि विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण के कार्यों को पूरी गंभीरता, निष्पक्ष व पारदर्शिता के साथ संपन्न कराये। इस अवसर पर संबंधित अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

एसआईआर कार्य का निरीक्षण करते डीएम।

नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को दिलाई शपथ

शपथ ग्रहण समारोह के दौरान मौजूद नवनिर्वाचित पदाधिकारी। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : जिला बार एसोसिएशन के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। एल्डर कमेटी के चेयरमैन गौहर अली और मुख्य चुनाव निर्वाचन अधिकारी सुरेंद्र पाल सिंह ने पदाधिकारियों को शपथ दिलाई।

देवपाल सिंह ने अध्यक्ष, संदीप मिश्रा ने महासचिव, अनिल जौहरी ने वरिष्ठ उपाध्यक्ष, मरगूब अहमद खान उर्फ सोनी ने कनिष्ठ उपाध्यक्ष, अमित सोलंकी ने ज्वाइंट सेक्रेटरी, अनिल यादव ने ज्वाइंट सेक्रेटरी प्रकाशन, नीलू मिश्रा ने ज्वाइंट सेक्रेटरी पुस्तकालय, अवधेश कुमार ने कोषाध्यक्ष, आदित्य यादव व सुरेंद्र पाल ने वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य और राष्ट्र गौरव, पवन गौतम, सतीश पाल, कुमारेश कुलश्रेष्ठ, सुमन कश्यप, नीरज सक्सेना ने कनिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य पद के लिए शपथ ली। एल्डर कमेटी के सदस्य जगदीश शरण वर्मा मौजूद रहे।

खोदाई के दौरान मिले चांदी के सिक्के

संवाददाता, ककराला

अमृत विचार : गांव अंतामई स्थित तालाब में डालकर पाटा जा रहा है। टीले की खुदाई करने के दौरान जेसीबी चालक को चांदी के सिक्कों से भरी मटकी मिली जिसे लेकर वह भाग खड़ा हुआ। खोजने के दौरान लोगों को भी सिक्के मिले हैं। यह सिक्के तुगलक काल के बताए जा रहे हैं। उन पर अरबी फारसी में लिखा हुआ है। इस मामले में थाना अलापुर पुलिस कुछ भी बताने से इंकार कर रही है।

आसपुर मार्ग स्थित प्राचीन टीले की मिट्टी अवैध तरीके से उठाकर अंतामई तालाब को पाटा जा रहा है। ग्रामीणों के अनुसार प्राचीन टीला (खेरे) पर जेसीबी से अवैध खनन के दौरान जेसीबी से की जा रही खुदाई के दौरान चांदी के सिक्के से भरी मटकी निकली। मटकी के टीले से बाहर आते ही जेसीबी चालक उसे लेकर फरार हो गया। चांदी के सिक्कों से भरी मटकी मिलने की सूचना पर तमाम ग्रामीण टीले के पास जुट गए। उनके द्वार सिक्कों की खोजबीन शुरू कर दी। ग्रामीणों के अनुसार कुछ लोगों को सिक्के मिले भी हैं। इन पर अरबी भाषा में लिखा हुआ है। जिन ग्रामीणों को सिक्के मिले हैं। पहले तो उन्होंने दिखाने से इंकार कर दिया। काफी देर बाद एक व्यक्ति से सिक्का दिखाया। जो कि चांदी का था। उस पर अरबी भाषा में लिखा हुआ है। चांदी के सिक्के मिलने की सूचना अलापुर पुलिस को दी गई। लेकिन पुलिस ने कुछ भी बताने से इंकार कर दिया है। आसपुर मार्ग स्थित प्राचीन टीला बेहद प्राचीन है। बताया जाता है कि उक्त टीला अंग्रेजी शासन में सराय हुआ करता था। यहां अंग्रेज अफसर आराम करते थे। इसके आस पास क्षेत्र भी आबाद था। इस इस टीले पर कई बार मिट्टी के बर्तन और खजाना मिलने की चर्चा पहले भी रहीं टीले की खुदाई के दौरान आस पास के ग्रामीणों को कई बार मिट्टी के बर्तन और सिक्के मिल चुके है। फिलहाल खजाने को लेकर कस्बे मे कौतूहल बना हुआ है।

जेसीबी से किया टीले की मिट्टी का खनन।

● जेसीबी चालक लेकर भाग गया मटकी, जुटी ग्रामीणों की भीड़

सिक्का दिखाता ग्रामीण ● अमृत विचार

सड़क निर्माण को लेकर ब्लॉक में धरना-प्रदर्शन

संवाददाता, करियामई

अमृत विचार : गांव की बदहाल सड़कों का संज्ञान लेकर कुछ दिन पूर्व एमएलसी वागीश पाठक ने अपने जनप्रतिनिधि गांव में भेजे। गांव का हाल देखने के बाद जिला और ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को जल्द सड़क निर्माण कराने का आग्रह किया। लेकिन जिम्मेदारों पर कोई असर नहीं हुआ। हालात जस के तस बने हुए हैं। इस पर आक्रोशित ग्रामीणों ने ब्लॉक पहुंचकर धरना प्रदर्शन किया। साथ ही सड़क निर्माण के लिए ज्ञापन भी सौंपा। करियामई गांव की बदहाल हैं सड़कें, जलभराव और गंदगी से ग्रामीण परेशान हैं। यह गांव विकास के दावे जमीनी हकीकत से कोसों दूर हैं। अभी कुछ दिनों पूर्व ग्रामीणों ने पानी में खड़े होकर विरोध दर्ज कराया था। जिसका संज्ञान लेते हुए वागीश पाठक ने अपने जनप्रतिनिधि गांव भेजे। वहां के हालत की जानकारी मिलने बाद एमएलसी वागीश पाठक ने इस्लामनगर बीडीओ के साथ अन्य अधिकारियों को फोन कर सड़क निर्माण के लिए आग्रह किया। इस बात को दस दिन से अधिक का समय बीत गया। लेकिन गांव में सड़क निर्माण शुरू नहीं हो सका। शुक्रवार को गांव निवासी दिनेश गुप्ता के नेतृत्व में ग्रामीणों ने ब्लॉक पर पहुंचकर विरोध जताया। साथ ही शिकायती पत्र देकर शीघ्र सड़क निर्माण के लिए मांग की। साथ ही चेतावनी दी है कि अगर जल्द ही काम शुरू नहीं हुआ तो वह ब्लॉक मुख्यालय पर अनशन करने के लिए बाध्य होंगे।

● ग्रामीणों ने खंड विकास अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर की सड़क निर्माण की मांग

दुकान बंद करके लौट रहे दो भाइयों पर किया हमला

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

घायल का हाल जानते सदर विधायक।

अमृत विचार : दुकान बंद करके लौट रहे दो भाइयों पर सदर कोतवाली क्षेत्र में कुल्हाड़ी से हमला किया गया। किसी ने घटना का वीडियो बनाकर सोशल साइट्स पर वायरल किया। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। देर रात सदर विधायक महेश चंद्र गुप्ता और व्यापारी मंडल के जिलाध्यक्ष नवनीत गुप्ता ने घायलों का हाल जाना। आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है।

मोहल्ला कृष्णापुरी निवासी दीपक गुप्ता ने बताया कि वह गुरुवार शाम अपने भाई नितिन गुप्ता के साथ चूना मंडी स्थित दुकान बंद करके घर लौट रहे थे। गांधी ग्राउंड चौराहा स्थित शिव मंदिर के पास मनोज कुमार ठाकुर और उनके बेटे दीपक ने मारपीट की और कुल्हाड़ी से हमला किया। बचाव के दौरान नितिन गुप्ता के हाथ में कुल्हाड़ी लगी। बचाव के दौरान दीपक भी घायल हो गए। राहगीरों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को जिला अस्पताल भेजा गया। सदर विधायक ने आरोपियों को जल्द गिरफ्तार करने को कहा है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती धूमधाम से मनाई

बिसौली, अमृत विचार : विकास क्षेत्र बिसौली के संविलियन विद्यालय हर्रायपुर में बसंत पंचमी पर्व पर गायत्री महायज्ञ हुआ। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती भी मनाई गई। गायत्री परिवार के संजीव कुमार शर्मा ने वेदमंत्रोचारण कर यज्ञ संपन्न कराया।

उन्होंने कहा कि बसंत पंचमी शिक्षा साक्षरता विद्या और विनय का पर्व है। संग्रह करने और बढ़ाने योग्य संपदा धन नहीं, ज्ञान है। व्यक्ति अपना दृष्टिकोण बदले, नित नूतन ज्ञान अर्जित करें। विद्यालय के प्रधानाध्यापक कुंवर सेन, शिक्षिका चित्रा, उमेश चंद्र, हेमलता ने मां सरस्वती का पूजन किया। इस मौके पर ग्राम प्रधान धर्मपाल, विद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष वीरपाल सिंह, पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र कुमार, राजेश कुमार, रामकेश यादव, विनोद यादव, विकास कुमार, सोमवीर सिंह आदि ने यज्ञ भगवान को लोक कल्याणार्थ गायत्री मंत्र और महामृत्युंजय मंत्र की विशेष आहुतियां समर्पित कीं।

कार्यक्रम के दौरान मौजूद बच्चे और स्टाफ। ● अमृत विचार

सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते कायस्थ महासभा के पदाधिकारी।

कायस्थ महासभा ने मनाई नेता जी सुभाष चंद्र बोस की जयंती

बदायूं, अमृत विचार : शुक्रवार को पराक्रम दिवस के अवसर पर कायस्थ महासभा के द्वारा नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती मनाई। शहर के सुभाष चौक पर स्थित नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के पदाधिकारियों ने माल्यार्पण किया गया। इसके बाद बसंत पंचमी के अवसर पर खिचड़ी भोग कार्यक्रम के तहत खिचड़ी का भी वितरण किया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष एडवोकेट दीपक सक्सेना, महामंत्री धीरज सक्सेना, ओमकार सक्सेना, दीपक सक्सेना, यश वर्धन सक्सेना आदि मौजूद रहे।

इंटर कॉलेज का सात दिवसीय एनएसएस शिविर शुरू

बिसौली, अमृत विचार : बिसौली के शरह बरौलिया स्थित सिद्ध बाबा इंटर कॉलेज के एनएसएस के सात दिवसीय शिविर का आरंभ हुआ। मुख्य वक्ता कॉलेज प्रबंधक अमित पाठक और नेहरू इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य आलोक पाठक ने दीप प्रज्वलित किया। मुख्य वक्ता ने कहा कि कहा कि एनएसएस युवाओं में सेवा, अनुशासन और राष्ट्र निर्माण की भावना विकसित करता है। ऐसे शिविर विद्यार्थियों को समाज के प्रति उत्तरदायित्व समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने सभी स्वयंसेवकों से शिविर की गतिविधियों में पूर्ण निष्ठा और सक्रिय सहभागिता निभाने का आह्वान किया। कार्यक्रम अधिकारी अनमोल उपाध्याय ने शिविर की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रधानाचार्य राजकुमार शर्मा, नेहरू इंटर कॉलेज के प्रबंधक सुमित पाठक, नीरज चौहान, विपलव भारती, प्रवीण मिश्रा, विपुल प्रताप सिंह, नितिन मिश्रा आदि उपस्थित रहे। संचालन रामौतार मौर्य ने किया।

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार

क्लासीफाइड

विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें

9756905552, 8445507002

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी हाईस्कूल की मार्कशीट वर्ष 2009 जिसका अनुक्रमांक 0947790 व इण्टरमीडिएट की मार्कशीट वर्ष 2012 जिसका अनुक्रमांक 0762895 है। वास्तव में कहीं खो गये हैं। काफी तलाशने के बाद अभी तक नहीं मिले। **किशन कुमार पुत्र श्री सुरेश कुमार पता:- बबूरा पो. बिलसण्डा जिला पीलीभीत**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आधार कार्ड सं. 947870693668 में मेरा नाम भूलवश अजय बाबू दर्ज हो गया है जोकि गलत है जबकि मेरा वास्तविक नाम अजय बाबू श्रीवास्तव है। शैक्षणिक दस्तावेजों में भी मेरा नाम अजय बाबू श्रीवास्तव ही दर्ज है। **अजय बाबू श्रीवास्तव पुत्र मुन्नालाल निवासी मो. नौगवां कस्बा फतेहगंज प. तह. मीरगंज जिला बरेली।**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पहले मेरा नाम मान सिंह था लेकिन भूलवश कुछ दस्तावेजों में रणधीर सिंह दर्ज हो गया था जिसे बदलकर मैंने पुन: अपना नाम मान सिंह कर लिया है। भविष्य में मुझे मान सिंह के नाम से ही जाना व पहचाना जाये। **मान सिंह पुत्र छत्रपाल निवासी ग्राम मेहंदा मजरा ढारवा परगना औरंगाबाद तह. व ब्लाक मितौली जिला खीरी।**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी पुत्री के आधार कार्ड में नाम भूलवश SHAZMA HUSSAIN दर्ज हो गया है जबकि उसका वास्तविक नाम SHAMZA है। अन्य सभी दस्तावेजों में भी नाम SHAMZA ही दर्ज है। **शुजात हुसैन पुत्र श्री मुबारक हुसैन निवासी टिसुआ जिला बरेली।**

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

सुविधा

गांव में सुविधा होने से ग्रामीणों को नहीं करनी पड़ेगी भागदौड़

ग्राम पंचायतों में बनेंगे आधार, संशोधन भी होगा

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- 40 ग्राम पंचायतों के सचिवालयों में उपलब्ध कराई जाएगी आधार बनाने की सुविधा
- पंचायती राज विभाग ने ग्राम पंचायतों का चयन कर शासन में भेजी सूची

ग्राम पंचायतों में मुहैया कराई जाएगी सुविधा

शासन के निर्देश मिलने के बाद जिला पंचायती राज विभाग द्वारा गांव का चयन कर सूची शासन को भेजी है। डीपीएम दुर्गेश कुमार ने बताया कि आधार कार्ड में संशोधन के साथ उसमें सुधार किए जाने की सुविधा ग्राम पंचायतों में मुहैया कराई जाएगी। जिसकी तैयारी शासन स्तर पर चल रही है। शासन के निर्देश पर 40 ग्राम पंचायतों के नाम शासन में भेजे गए हैं। वहां से स्वीकृति मिलने पर पंचायत भवनों में आधार बनाने और उनमें संशोधन का काम होने लगेगा।

अमृत विचार : नया आधार कार्ड बनवाने और उनमें संशोधन कराने के लिए ग्रामीणों को इधर-उधर भटकना पड़ रहा है, लेकिन अब उन्हें कहीं भी भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। न ही डाकघर, बैंक आदि स्थान पर घंटों लाइन में लगना पड़ेगा। ग्रामीणों की इस समस्या को देखते हुए पंचायत घरों में यह सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। जिला पंचायती राज विभाग की ओर से जिले की 40 ग्राम पंचायतों के नाम की सूची में शामिल कर शासन को भेजे गए हैं। शासन से स्वीकृति मिलते ही जल्द ही ग्रामीणों को यह सुविधा मिला शुरू हो जाएगी।

बच्चों का नया आधार कार्ड बनवाने और पूर्व से बने आधार में संशोधन कराने के लिए ग्रामीणों को शहर और तहसील मुख्यालय तक दौड़ लगानी पड़ती है। उन्हें डाकघरों के साथ ही साथ बैंकों के भी चक्कर लगाने पड़ते है। ग्रामीण मुख्य डाकघरों मे तो सुबह चार बजे से ही टोकन लेने के लिए गेट पर लाइन लगाकर खड़े हो जाते हैं।

इसके बाद तारीख मिलने बाद जिस दिन सही कराने के लिए ग्रामीणों को आना पड़ता है। जिसके कारण ग्रामीणों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। जिले के डाकघर और कुछ बैंकों में आधार कार्ड बनाने और उनमें सुधार का काम किया जाता है। लेकिन इन स्थानों पर ग्रामीणों की लंबी लाइन लगी दिखाई देती है।

इस दिक्कत को ध्यान में रखते हुए जिले की ग्राम पंचायतों में संचालित होने वाले ग्राम सचिवालयों में आधार कार्ड बनाने के साथ उसमें सुधार करने की शुरुआत करने की तैयारी शासन स्तर से की जा रही है। पंचायती राज विभाग से जिले की 40 ग्राम पंचायतों की सूची मांगी गई है।

ताकि ग्रामीण जनता को उसके गांव में आधार कार्ड को बनाने के साथ सुधार करने की सुविधा मुहैया हो सके।

पिकअप की टक्कर से गोवंश की मौत, हंगामा

बदायूं, अमृत विचार : मुरादाबाद-फर्रुखाबाद राजमार्ग पर अलापुर थाना क्षेत्र में पिकअप की टक्कर से गोवंश की मौत हो गई। लोगों की सूचना पर शिव तांडव सनातन कल्याण संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष और विश्व हिंदू महासंघ के राष्ट्रीय सचिव राहुल त्रिवेदी मौके पर पहुंचे।

सूचना मिलने पर पुलिस पहुंची और उन्हें राजमार्ग से हटाने का प्रयास किया लेकिन वह नहीं माने और पिकअप चालक पर कार्रवाई की मांग की। एक उपनिरीक्षक ने उनसे कहा कि क्या तमाशा बनाकर रख दिया है। इस पर राहुल गुस्सा गए और कहा कि गोवंश की मौत उन्हें तमाशा लग रही है। इसी दौरान उसावां की ओर से डीएम अवनीश राय गुजरे। वह गाड़ी से उतरे और राहुल से बात की। डीएम ने उनकी बात सुनी। गोवंश की स्थिति देखी और न्याय का आश्वासन दिया। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

सांसद के आवास पर मनाया शिवपाल यादव का जन्मदिन

सपा के राष्ट्रीय महासचिव का जन्मदिन मनाने के दौरान मौजूद युवा।

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव, पूर्व कैबिनेट मंत्री और जसवंत नगर विधायक शिवपाल सिंह यादव का जन्मदिन सांसद आदित्य यादव के आवास पर मनाया गया। कार्यकर्ताओं ने केक काटकर उनके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु और सक्रिय राजनीतिक जीवन की कामना की। वक्ताओं ने कहा कि शिवपाल सिंह यादव समाजवादी आंदोलन के उन सशक्त स्तंभों में से हैं। जिन्होंने संगठन को जमीनी स्तर से मजबूत करने का कार्य किया है। उनका संपूर्ण राजनीतिक जीवन संघर्ष, अनुशासन और संगठनात्मक क्षमता का प्रतीक रहा है। पार्टी को कठिन परिस्थितियों में एकजुट रखने और समाजवादी विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने में उनकी भूमिका सदैव निर्णायक रही है। अनिल गोस्वामी, शिवम राठौर, सुशांत सिंह राठौर, राहुल कुर्मी, टीटू पाल, शिवा, विमल पटेल, नक्षत्र पाल, जवर सिंह यादव आदि मौजूद रहे।

अमृत विचार

बरेली, शनिवार, 24 जनवरी 2026

न्यूज ब्रीफ

सरकारी जमीन पर कब्जे का लगाया आरोप

गोला गोकर्णनाथ, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के गांव सेमरिया निवासी रामाआसरे पुत्र जसकरन लाल ने सरकारी जमीन से कब्जा हटवाने की मांग को लेकर एसडीएम को प्रार्थना पत्र सौंपकर कार्रवाई किए जाने की मांग की है। एसडीएम प्रतीक्षा त्रिपाठी को दिए प्रार्थना पत्र में उन्होंने कहा कि तेंदुआ गांव में उनकी जमीन है, जहां विपक्षी कमलेश कुमार, अवधेश कुमार, राकेश कुमार खेत किनारे नाली को जोतकर अपने खेत में मिलाने की कोशिश में लगे हुए हैं। मना करने पर उन लोगों ने गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी है।

मारपीट व जाति सूचक गाली दी, दो के खिलाफ नामजद रिपोर्ट

गोला गोकर्णनाथ, अमृत विचार : हैदराबाद थाना क्षेत्र के बांसगांव निवासी फूलमती पत्नी रामसरन ने पुलिस में दर्ज कराई रिपोर्ट में कहा है कि 8 जनवरी को 2 बजे उनका पति अगौरा लेकर घर पहुंचे तभी वहां से निकल रहे गांव निवासी सनी पुत्र अरविंद और नन्हे पुत्र अरुण ने बिना किसी बात के गाली गलौज कर उनसे मारपीट करने लगे, जब वह और उनकी बेटी बचाने दौड़ी तो दोनों को धक्का देकर नाली में गिरा दिया, जिससे वह दोनों चोटिल हो गई। विपक्षी जान से मारने की धमकी देते चले गए। उन्होंने दोनों के नामजद रिपोर्ट दर्ज कराकर कार्रवाई किए जाने की मांग की है।

एनआईसी कर्मी की पिटाई कर सिर फोड़ा

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : शहर के मोहल्ला शिव कॉलोनी निवासी अजीत शर्मा एनआईसी में कर्मचारी हैं। उन्होंने बताया कि वह गुरुवार की शाम एनआईसी से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कराकर अपने घर लौटे थे। शाम करीब 7:30 बजे पड़ोस में हाल ही में किराए से रहने आए दीनू उर्फ कपिल पुत्र अवधेश उनके घर के बाहर आकर गाली-गलौज करने लगा। आरोप है कि दीनू ने अजीत शर्मा और उनकी पत्नी को मारने की धमकी दी और फिर डंडे से सिर पर प्रहार कर दिया, जिससे अजीत शर्मा का सिर फट गया। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

बाघ के हमले में मृत बच्चे के परिजनों को दिए 50 हजार

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

मृतक बच्ची के परिजनों को आर्थिक सहायता देते विधायक रोमी साहनी।

अमृत विचारः थारू क्षेत्र में बाघ के हमले में जान गंवाने वाले चार वर्षीय बच्चे अराध्यम के परिजनों से मिलने विधायक रोमी साहनी उनके घर पहुंचे। उन्होंने शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया और तत्काल 50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। साथ ही सरकार से हर संभव मदद दिलाने का आश्वासन भी दिया।

गौरतलब है कि दो दिन पूर्व ग्राम परसिया में थारू परिवार के चार वर्षीय बच्चे अराध्यम पुत्र राधे पर बाघ ने हमला कर दिया था, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। अराध्यम के माता-पिता खेतों में मजदूरी करते हैं और घटना के समय बच्चा उनके साथ खेत गया हुआ था। इसी दौरान बाघ ने बच्चे पर हमला कर उसे मार डाला। घटना की सूचना मिलते ही विधायक रोमी साहनी लखनऊ से सीधे ग्राम परसिया पहुंचे और पीड़ित परिवार से मुलाकात की। उन्होंने बच्चे की मां अनीता को 50 हजार रुपये की सहायता राशि सौंपते हुए भरोसा दिलाया कि सरकार की ओर से भी पीड़ित परिवार को उचित सहायता दिलाई जाएगी।

भुता ब्लॉक के जूनियर हाईस्कूल के 100 से अधिक छात्र-शिक्षक एक्सपोजर विजिट पर अमृत विचार कार्यालय पहुंचे

छात्र-छात्राओं ने अमृत विचार अखबार को बनते हुए देखा

कार्यालय संवाददाता, बरेली

बरेली के भुता ब्लॉक से शैक्षिक भ्रमण पर आए छात्र-छात्राओं को अमृत विचार प्रिंटिंग प्रेस में अखबार छपने की प्रक्रिया समझाते हुए।

- सीओओ पार्थो कुनार ने बीईओ के नेतृत्व में पहुंचे छात्रों और शिक्षकों को नियमित अखबार पढ़ने की शपथ दिलाई

अमृत विचार : राष्ट्रीय आविष्कार मिशन के तहत एक्सपोजर विजिट पर भुता ब्लॉक के जूनियर हाईस्कूल के 100 से अधिक छात्रों और शिक्षकों ने खंड शिक्षा अधिकारी शशांक शुक्ला के नेतृत्व में गुरुवार सुबह आईवीआरआई कैंपस का भ्रमण किया। हिन्दी दैनिक अमृत विचार के कार्यालय और प्रिंटिंग प्रेस पहुंच कर अखबार के छपने की प्रक्रिया को देखा। अखबार के दफ्तर पहुंचने पर बीईओ, शिक्षकों और छात्रों का अमृत विचार के सीओओ पार्थो कुनार ने स्वागत किया और उन्हें अमृत विचार अखबार की विकास यात्रा के साथ भविष्य की संभावनाओं के बारे में जानकारी दी। भ्रमण कार्यक्रम पूरा करने के बाद बीईओ ने अमृत विचार टीम का आभार जताया। अखबार बनने और छपने की प्रक्रिया देखकर छात्र बेहद रोमांचित नजर आए। इस दौरान सीओओ पार्थो कुनार सभी छात्रों और शिक्षकों को नियमित रूप से अपने घर पर अखबार मंगाने और उसे पढ़ने की शपथ दिलाई।

भुता ब्लॉक के उच्च प्राथमिक और कंपोजिट विद्यालयों के छात्रों का गुरुवार का दिन बेहद कौतूहल भरा रहा। शैक्षिक भ्रमण पर निकले छात्रों और शिक्षकों ने गुरुवार पीलीभीत रोड पर स्थित अमृत विचार अखबार के कार्यालय पहुंच कर पहले अखबार बनने की प्रक्रिया देखी। खबरों के लिखने, उनके संपादन, चयन और फिर पेजीनेशन की प्रक्रिया को देखकर रोमांचित हुए। बच्चों ने जाना कि वह सुबह जो अखबार पढ़ते हैं वह बनता कैसे है। बच्चों ने कौतूहल से कुछ सवाल भी पूछे। अमृत विचार की टीम ने बच्चों को अखबार छपाई की प्रक्रिया के बारे में बताया। खबरों की रिपोर्टिंग से लेकर प्रसार विभाग, मार्केटिंग, ब्रांड और प्रोडक्शन विभाग की कार्यप्रणाली से अवगत बताया गया। बच्चों के साथ आए एआरपी फहीम अहमद, विमल अवस्थी, वीरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि बच्चों ने यूनिट का भ्रमण कर काफी कुछ सीखा है। जीवन में आगे भी यह काम आएगा। बच्चों ने कहा कि प्रेस भ्रमण कर उन्हें बहुत अच्छा महसूस हुआ। इस मौके पर विकास शुक्ला एवं बहुत सारे शिक्षक साथियों का अतुलनीय सहयोग रहा।

लूट करने के बाद मैनेजर की हत्या, खेत में दफनाया शव

पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर हत्यारोपी दोस्त दबोचा

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : बारादरी क्षेत्र के संजय नगर निवासी इवेंट मैनेजर पूजा राणा (30) की निर्मम हत्या कर दी गयी। हत्यारे ने शव को पीलीभीत रोड स्थित एक डिग्री कॉलेज के पीछे खेत में गड्ढा खोदकर दफन कर दिया। पूजा की बरामदगी में जुटी पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर रिठौरा निवासी उसके दोस्त विमल को गिरफ्तार कर वारदात का खुलासा कर दिया है। इवेंट मैनेजर की मोबाइल बरामदगी के दौरान आरोपी ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। इसके बाद पुलिस ने जवाबी फायरिंग में आरोपी के पैर में गोली मारकर गिरफ्तार कर लिया।

परिजनों के अनुसार, पूजा 12 जनवरी को अपनी मां महेंद्र देवी और बहन शालिनी को बता कर शादी समारोह के इवेंट में गई थी, लेकिन देर रात तक घर वापस नहीं लौटी। अगली सुबह पिता प्रेम सिंह ने फोन किया, लेकिन मोबाइल स्विच ऑफ मिला। आसपास तलाश और रिश्तेदारों से जानकारी जुटाने के बाद भी कुछ पता नहीं चलने पर परिजनों ने पुलिस को सूचित किया। इसके बाद पुलिस ने इलाके में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली, जिससे आरोपी का सुराग मिला। पुलिस ने उसे हिरासत में लिया और कड़ी पूछताछ में उसने हत्या करने के बाद शव को नकटिया नदी के पास खेत में दफन करने की पूरी घटना स्वीकार कर ली। आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने नकटिया नदी के पास खेत से पूजा का शव बरामद किया और पीलीभीत की बड़ी नहर से उसकी स्कूटी भी बरामद कर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

एसपी सिटी मानुष पारीक ने बताया कि शक के आधार पर आरोपी को हिरासत में लिया गया था। पूछताछ के दौरान उसने सभी सच्चाई उगल दी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ हत्या, साक्ष्य मिटाने और पुलिस पर हमला करने जैसी गंभीर धाराओं में मामला दर्ज कर आगे की विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। वहीं, मृतका के पिता प्रेम सिंह ने आरोप लगाया कि पूजा स्कूटी से निकली थी और उसने सोने की तीन अंगूठियां, दो चेन, पेंडेंट और कुंडल पहन रखे थे। उनका कहना है कि लूट के इरादे से ही आरोपी ने मफलर से गला घोंटकर हत्या की।

आग से झुलस कर गाय की मौत

फूलबेहड़, अमृत विचारः सुंदर पुलिस चौकी क्षेत्र के गांव अगरा में शुक्रवार दोपहर उस समय अफरा-तफरी मच गई। जब डॉ. गया वर्मा के घर के बाहर बनी भूसा रखने की घारी में अचानक आग लग गई। एक गाय की मौत हो गई, जबकि बछड़ा गंभीर रूप से झुलस गया।

हादसा दोपहर करीब 2:45 बजे हुआ। डॉ. गया वर्मा की भूसा भरी घारी में अचानक आग भड़क उठी। जब तक लोग कुछ समझ पाते। इससे पहले ही आग ने विकराल रूप ले लिया। घारी से तेज लपटें उठती देख ग्रामीण मौके पर पहुंचे और आग बुझाने का प्रयास शुरू किया। आग इतनी तेजी से फैल रही थी कि आसपास के घरों तक पहुंचने का खतरा बन गया। इसी दौरान घारी में बंधी एक गाय और बछड़ा आग की चपेट में आ गए। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक घारी में बंधी गाय की जलकर मौत हो चुकी थी, जबकि बछड़ा गंभीर रूप से झुलस गया।

शासकीय योजनाओं का अनुपालन करना जरूरी

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

- निजी चिकित्सकों की संवेदीकरण कार्यशाला का हुआ आयोजन

अमृत विचारः निजी चिकित्सकों को शासकीय योजनाओं के बारे में जानकारी देने के लिए संवेदीकरण कार्यशाला सीएमओ कार्यालय सभागार में हुई, जिसकी अध्यक्षता सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने की।

सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने बताया कि निजी चिकित्सकों की संवेदीकरण कार्यशाला का उद्देश्य उन्हें समस्त शासकीय योजनाओं से अवगत कराना है। साथ ही उनके क्रियान्वयन को लेकर जानकारी देना था। जिससे निजी चिकित्सकों द्वारा भी शासकीय योजनाओं का लाभ आम जनमानस तक पहुंच सके। इसके लिए उन्हें एचएमआईएस पोर्टल की जानकारी दी गई। इस दौरान एचएमआईएस फॉर्म को भरना बताया गया। पोर्टल पर एंट्री को करने के बारे में जानकारी दी गई। जिन चिकित्सकों द्वारा अपने चिकित्सालय में सामान्य प्रसव या सर्जरी की जा रही हैं उन्हें भी पोर्टल पर फीड करने के निर्देश दिए गए। टीकाकरण, जन्म और मृत्यु की जानकारी को भी पोर्टल पर भरना आवश्यक है। इसका सर्टिफिकेट भी देना अनिवार्य है। जिससे सही जानकारी शासन तक पहुंच सके। निरीक्षण के दौरान कमी पाए जाने पर आवश्यक कार्यवाही भी की जाएगी। जनपद में इसके लिए 72 चिकित्सालय पंजीकृत है। उन्होंने कहा कि सभी मरीजों की केस सीट जरूर बनाएं। केस सीट पर प्रिस्क्रिप्शन को साफ़-साफ़ लिखना जरूरी है। डिलीवरी व आउटडोर मरीज सहित अन्य रिकॉर्ड के लिए रजिस्टर भी बनवाएं। इस दौरान उन्होंने ऐसे चिकित्सालयों के प्रबंधन की प्रशंसा की जो नियमित रिपोर्टिंग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि टीकाकरण को भी पोर्टल पर रिपोर्ट जरूर करें।

संदिग्ध हालात में सड़क किनारे मिला व्यक्ति का शव

भुता, अमृत विचार। थाना क्षेत्र के प्रीति कॉलेज के पास गिरधरपुर रोड पर सड़क किनारे संदिग्ध अवस्था में एक व्यक्ति का शव पड़ा मिला ।सूचना पर पहुंची पुलिस ने पड़ोस के गांव खड़सरा प्रेमपाल व गिरधरपुर के महिपाल ने शव की शिनाख्त लीलाधर (55) के रुप में की है।

पुलिस ने बताया कि राहगीरों की सूचना पर शुक्रवार शाम शव पड़े होने की सूचना मिली। सूचना पर थाना प्रभारी निरीक्षक रविंद्र कुमार ने पहुंचकर जांच पड़ताल की। तभी पड़ोस के गांव के खड़सरा निवासी प्रेमपाल व गिरधरपुर निवासी महिपाल ने इनकी शिनाख़्त ग्राम घनश्यामपुर थाना बिलसंडा निवासी लीलाधर के रूप में की है। पुलिस ने शव को सील कर पोस्टमार्टम भेज दिया है। मृतक लीलाधर के दो बेटे व पत्नी सितारगंज में मजदूरी आदि का कार्य करते हैं । पुलिस मामले की जांच कर रही है।

न्यायालय श्रीमान् उपजिलाधिकारी महोदय सहसवान (बदायूं)

कलीमुल हफीक पुत्र स्व. श्री अब्दुल हफीज निवासी मो. कस्बा पट्टीयकीन मुहम्मद पर. तह. सहसवान जिला बदायूं **बनाम** अंगूरी पत्नी ज्ञानदेव निवासी ग्राम रसूलपर कलां परगना व तहसील सहसवान जिला बदायूं

धारा– 116 उ.प्र.रा. सं.

ग्राम सिलहरी पर. व तह. सहसवान जिला बदायूं हरगाह वादी ने आपके नाम एक नालिश बाबत के दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आज व तारीख 28.01.2026 ई. बवक्त 10 बजे दिन के असालतन या वकालतन वकील के जो मुकदमा के हालात करार बाकई बाकिफ किया गया हो और कुल उमूरात अहम मुतालिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई शख्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हो और जवाबदेही दाबा को करे और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेजात पेश करें जिन पर आप बताइए अपनी जवाबदेही के इस्तेमाल करना चाहते हो। आपको इत्तला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिर आपके मसमुअ और फैसला होगा। बसब्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज तारीख माह सन् 20.02.2026 ई. को जारी किया गया।

आदेशानुसार: न्यायालय उपजिलाधिकारी महोदय सहसवान (बदायूं)

पूर्वोत्तर रेलवे

ई–टेन्डरिंग निविदा सूचना सं. 08/2026

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिये मंडल रेल प्रबंधक (इंजी.) पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर निम्नलिखित कार्य हेतु आनलाईन (ई–टेन्डरिंग) के माध्यम से ''खुली'' निविदा आमंत्रित करते हैः–

क्रम सं.-1, कार्य का विवरणः इज्जतनगर मंडल में वमइं/मुख्या. के अधिकार क्षेत्र में एन.एस.जी.-3 से एन.एस.जी.-6 स्टेशनों पर दिव्यांगजनों के लिये सुविधाओं का प्रावधान। अनुमानित लागत रूपयों में: ₹ 2,09,08,525.53, बयाना राशि रूपयों में: ₹ 2,54,600/-, निविदा प्रपत्र का मूल्यः शून्य, स्वीकृति पत्र जारी होने की तिथि से कार्य पूर्ण करने की अवधि 08 माह।

(1) ई-निविदा दिनांक 16-02-2026 को 15:00 बजे तक आनलाइन जमा कर सकेंगे।

(2) ई-निविदा की प्रस्तुति हेतु पूर्ण विवरण भारतीय रेलवे के IREPS वेबसाईट ***www.ireps.gov.in*** पर देखें।

मण्डल रेल प्रबन्धक (इन्जी.),
मुजाधि/डब्लू-428 **इज्जतनगर**

गाड़ियों की छतों व पावदान पर कदापि यात्रा न करें।

पूर्वोत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना सं.: DCE-BL-05-2026

उप मुख्य इंजीनियर/पुल लाईन/पूर्वोत्तर रेलवे/गोरखपुर भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्यो हेतु ई-निविदा आमन्त्रित करते हैं:–

क्रम सं.-1, ई-निविदा सं.-DCE-BL-05-2026, कार्य का विवरणः पूर्वोत्तर रेलवे के ओपेन वेब गर्डर पुल लखनऊ मण्डल पर स्थित पुल सं.-391UP (17x61.0m), वाराणसी मण्डल पर स्थित पुल सं.-137UP (13x30.5m) एवं 137DN (13x30.5m) तथा इज्जतनगर मण्डल पर स्थित पुल सं.-270(8x30.5m) के टाप कार्ड पर इन्सपेक्शन पाथवे तथा इण्डरेकर पर सीढ़ियो का प्रावधान। अनुमानित लागतः ₹ 6,91,03,518.82, बयाने की राशिः ₹ 4,95,500.00, निविदा प्रपत्र का मूल्यः शून्य, स्वीकृति पत्र जारी होने के तिथि से कार्य की समापन अवधिः 18 (अट्ठारह) माह।

- ई-निविदा खुलने की तिथिः दिनांक 17-02-2026 को 11:00 बजे। • ई-निविदा की प्राप्ती की तिथिः दिनांक 17-02-2026 को 10:59 बजे। • ई-निविदा सूचना, योग्यता मापदण्ड, नियम एवं शर्तो का पूर्ण विवरण वेबसाईट ***www.ireps.gov.in*** पर उपलब्ध है।

उप मुख्य इंजीनियर/पुल लाईन
मुजाधि/डब्लू-427 **गोरखपुर**

गाड़ियों की छतों व पावदान पर कदापि यात्रा न करें।

20 जनवरी से गन्ने का शुरू होगा सर्वे

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- 5 फरवरी तक चलेगा अभियान, शासन को जाएगी खेतों में शेष गन्ने की रिपोर्ट

अमृत विचार : गन्ना किसानों के खेतों में जो गन्ना अभी शेष है उसका सर्वे किया जाएगा। शासन के निर्देशों के बाद गन्ना विभाग ने 20 जनवरी से 5 फरवरी तक खड़े गन्ने का सर्वे करने का निर्णय लिया है। सर्वे के दौरान पांच बिंदुओं पर काम किया जाएगा। सर्वे पूरा होने के बाद विभाग शासन को रिपोर्ट भेजेगा।

पिछले साल नवंबर से जनपद की दोनों चीनी मिलों पर गन्ना पेराई की जा रही है। करीब 50 प्रतिशत से अधिक गन्ना चीनी मिलों पर पहुंच चुका है। अब जो गन्ना खेतों में शेष बचा है उसका सर्वे किया जा रहा है। 20 जनवरी से गन्ना विभाग ने सर्वे शुरू कर दिया है। सर्वे के दौरान मिश्रित प्लाट की पहचान की जा रही है। साथ ही गन्ना प्लॉटों का चयन किया जा रहा है। किस क्षेत्र में कितने प्लाट हैं, जिसमें गन्ना खड़ा है। खेतों में खड़े गन्ने का बीज प्रमाणीकरण किया जा रहा है कि कौन से प्लाट का गन्ना ठीक है। खेतों में खड़े गन्ने का बीज आरक्षित किया जा रहा है।

जिला गन्ना अधिकारी अशर्फी लाल ने बताया कि खेतों में खड़े गन्ने का सर्वे को शेखूपुर चीनी मिल का 6 टीमें लगाई गई हैं, जबकि बिसौली की यदु शुगर मिल की 10 टीमें काम कर रही हैं। दोनों चीनी मिलों के कर्मचारी अपने अपने क्षेत्र में गन्ना प्लाटों का सर्वे कर रहे हैं। सर्वे के रिपोर्ट तैयार की जाएगी जो शासन को भेजी जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रयास किया जा रहा है कि किसानों से संपर्क कर जल्द गन्ना चीनी मिलों तक पहुंचाया जाए।

शेखूपुर चीनी मिल के जूस की गुणवत्ता पर उठे सवाल

जिला गन्ना अधिकारी अशर्फी लाल ने बताया कि शेखूपुर चीनी मिल के जूस की गुणवत्ता कम है। जूस की गुणवत्ता 70 प्रतिशत होनी चाहिए जो इस समय 68,60 है। चीनी मिल से कहा गया है कि जूस की गुणवत्ता बनाए रखने को सूखा और बीमार गन्ना नही लिया जाए। कहा कि जूस की गुणवत्ता मानक के अनुसार न होने पर चीनी के उत्पादन पर असर पड़ता है। हालांकि इस बार चीनी परता गत वर्ष की अपेक्षा बेहतर है। फिर भी जूस में सुधार किया जाना जरूरी है।

लोक जन संघर्ष पार्टी का धरना प्रदर्शन चौथे दिन भी जारी

केशवापुर, अमृत विचार : ब्लाक कुम्भी की ग्राम पंचायत बांसगांव के बार्ड 7 में गांव की समस्याओं को लेकर लोक जन संघर्ष पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव रामनिवास शुक्ल द्वारा किया जा रहा सत्याग्रह धरना प्रदर्शन शुक्रवार चौथे दिन भी जारी रहा। जिसमें अब तक किसी भी अधिकारी के न पहुंचने से ग्रामीणों में उबाल है।

जयंती पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस को किया नमन

गोला के सीजीएन पीजी कॉलेज में नेताजी की जयंती मनाते प्राचार्य और प्राध्यापक।

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचार : चंद्रशेखर कृषि महाविद्यालय जमुनाबाद में बसंत पंचमी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती उत्साह से मनाई। विद्यार्थियों को नेताजी के विचारों और राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका के बारे में बताया गया।

मुख्य अतिथि अधिष्ठाता डॉ. अनिल कुमार सिंह ने कहा कि विद्या का अर्थ सिर्फ जानकारी नही बल्कि विद्या व्यक्ति को विवेकशील, संवेदनशील तथा उत्तरदायी बनाती है। सह प्राध्यापक डॉ. अरुण कुमार, डॉ. आनंद कुमार पांडे, डॉ. राजकुमार, डॉ. रणधीर कुमार यादव, डॉ. अनूप कुमार, डॉ. संदीप कुमार, डॉ. हिमांशु मिश्रा, डॉ. सतेन्द्र कुमार आदि मौजूद रहे। कृषक समाज इंटर कॉलेज में प्रधानाचार्य अनंत प्रकाश सरोज की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ। प्रधानाचार्य ने मां सरस्वती और नेताजी सुभाष चंद्र बोस के चित्रों पर माल्यार्पण कर शुभारंभ किया। छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। छात्राओं के मध्य नेताजी सुभाष चंद्र बोस के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान विषयक निबंध और भाषण प्रतियोगिता हुई। संचालन स्काउट एवं क्रीड़ा प्रभारी देवेंद्र सिंह ने किया। सीजीएन पीजी कॉलेज के नेहरू पार्क में मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण, पुष्पार्चन तथा पूजन-हवन मुख्य यजमान प्राचार्य प्रो. पंकज सिंह ने किया। शिक्षकों ने भी मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर पूर्णाहुति डाली।इस दौरान डॉ. शेषमणि विश्वकर्मा, डॉ. विश्वनाथ,, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. अनिल यादव, अमित कुमार, डॉ. अरूण कुमार सिंह, डॉ. योगेश कनौजिया, डॉ. गौरव अवस्थी, पूर्वा श्रीवास्तव, नीलम शर्मा आदि शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी डॉ. अमिताशु मिश्र, प्रवीण कुमार गुप्ता, राकेश कुमार, श्रवण कुमार, विपिन कुमार एवं छात्र/छात्राएं मौजूद रहे।

कल्पना ने मदार के पत्ते पर बनाई मां सरस्वती की तस्वीर

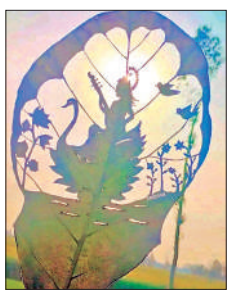

रोशननगर, अमृत विचार : बसंत पंचमी एवं सरस्वती पूजन पर लीफ आर्टिस्ट एडवोकेट कल्पना तिवारी ने मदार की हरी पत्ती पर मां सरस्वती का चित्र उकेरकर सोशल मीडिया पर सभी को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। अलीगंज क्षेत्र के ग्राम मुस्तफाबाद (कबीरधाम) की रहने वाली कल्पना तिवारी ने अब पत्ते पर नही कोल्ड ड्रिंक की डाट, दाल पर चित्र उकेर कर अपनी आर्टिस्ट की पहचान बनाई है। कल्पना तिवारी अपने इस अनोखे टैलेंट लीफ आर्ट की वजह से पूरे जिले में एवं आसपास के क्षेत्रों में जानी जाती हैं।

उद्योगपति, स्वतंत्रता सेनानी के योगदान को किया याद

कमलनयन बजाज के चित्र पर माल्यार्पण करते यूनिट हेड ओपी चौहान।

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचारः बजाज चीनी मिल में शुक्रवार को संस्थापक कमलनयन बजाज की जयंती मनाई गई। पलिया चीनी मिल में यूनिट हेड ओपी चौहान ने माल्यार्पण किया। गोला में राकेश यादव और खंभारखेडा में यूनिट हेड अवधेश गुप्ता ने श्रद्धांजलि अर्पित की। शिशिर बजाज ने अपने पिता के औद्योगिक योगदान और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान को समर्पित एक एआई-निर्मित श्रद्धांजलि वीडियो जारी किया। बजाज फाउंडेशन के चेयरमैन शिशिर बजाज ने कहा कि मेरे पिता का मानना था कि जो हम बनाते हैं वह टिकाऊ होना चाहिए और टिकाऊ चीज़ को समाज की सेवा में लगाया जाना चाहिए। जयंती समारोह में यह संदेश दोहराया गया कि सच्ची उद्यमिता केवल लाभ कमाने तक सीमित नहीं, बल्कि राष्ट्र की सेवा और मूल्य आधारित समाज निर्माण से परिभाषित होती है।

कार्रवाई

जिले में फलफूल रहा अवैध बालू और मिट्टी का कारोबार, अवैध खनन करने वालों के साथ भर रही विभाग की झोली

एक साल में 262 वाहन किए जब्त, वसूले 3 .40 करोड़ रुपये

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : जिले में निजी ही नहीं बल्कि सरकारी जमीन से मिट्टी का खनन करने में माफिया तनिक भी कतरा नहीं रहे हैं। वह इसलिए क्योंकि, सफेदपोश और अधिकारियों के संरक्षण में वह धंधे का संचालन कर रहे हैं। हालांकि दिखावे के लिए ही सही खनन विभाग द्वारा की गई कार्रवाई ने राज्य सरकार का खजाना भर दिया। अब तक 262 वाहनों को पकड़ा गया। साथ ही 3.40 करोड़ का जुर्माना भी वसूला है। इसके बाद भी जनपद में बालू और मिट्टी का धंधा भली भांत फलफूल रहा है। जिम्मेदारों की कार्रवाई पर सवालिया निशान खड़े हो रहे हैं।

जिले की पांच तहसीलों में मिट्टी और बालू का जमकर खनन हो रहा है। जिले में चल रहे तमाम निर्माण कार्य में भराव के लिए मिट्टी डाली जा ही है। बिसौली, कादरचौक, जगत, सालारपुर इस्लामनगर, आसफपुर सहित सभी 15 ब्लॉकों में जमकर जेसीबी और डंपर व ट्रैक्टर-ट्राली के जरिए मिट्टी खनन हो रहा है। रातभर अवैध खनन का धंधा चलता है, और विभाग अंधा बना रहता है। रात के अंधेरे में सड़कों पर मिट्टी से भरे डंपर दौड़ते रहते है। मिट्टी से लदे डंपर न तो पुलिस को नजर आते हैं और न ही जिम्मेदार अधिकारियों को सूचना मिलती है। शिकायत के बाद एक्का-दुक्का डंपर सीज कर जिम्मेदारों द्वारा पूरे खेल पर पर्दा डालने का प्रयास किया जाता है। खनन माफिया दिन-रात सरकारी और निजी जमीनों से मिट्टी का खनन करते हुए पर्यावरणीय क्षति के साथ-साथ राजस्व का भी चूना लगा रहे हैं। माफिया की अति सक्रियता के कारण रात के समय दुर्घटना होने का भी खतरा बना रहता है। खनन का यह पहला मामला नहीं है। इससे पूर्व भी अनेकों प्रकरण सामने आ चुके हैं। बावजूद इसके ठोस कार्रवाई न होने के कारण खनन माफियाओं के हौसले बुलंद है।

पकड़े गए हैं 262 वाहन

मिट्टी खनन कार्य में करीब 2 सौ से अधिक जेसीबी और एक हजार से अधिक ट्रैक्टर ट्राली और तीन सौ से अधिक डंपर लगे हुए हैं। खनन विभाग के आंकड़े बताते हैं कि अब 1 अप्रैल 2025 से 20 जनवरी 2026 तक कुल 262 वाहनों को ही पकड़ा गया है। इनसे जुर्माना भी वसूला गया है। जुर्माना और खनन के लिए ली गई परमीशन पर विभाग रॉयल्टी के तहत 3 .40 करोड़ राजस्व जमा किया है। विभाग द्वारा की गई कार्रवाई दर्शाती है कि जिले में किस स्तर पर खनन का धंधा हो रहा है।

रात के अंधेरे में होता है लाखों का खेल

बताया जा रहा है कि प्रतिदिन सौ से 150 डंपर मिट्टी के वाहनों को रात में दौड़ाया जाता है। एक डंपर की कीमत 3500 रुपये में बेचा जाता है। एक डंपर से सात सौ से अधिक रुपये का चूना राजस्व को लगाया जा रहा है। सफेदपोश से लेकर पुलिस और खनन विभाग की मिलीभगत से यह धंधा चलता है। बताया जाता है कि माफियाओं का नेटवर्क इतना मजबूत है कि मिट्टी डालने के साथ रात में ही उसे फैला भी दिया जाता है। ऐसा कर खनन माफिया जमकर काली कमाई कर रहा है।

गंगा से बालू रेत का होता है खनन

जिले में सौ किलोमीटर के दायरें में गंगा का फैलाव है। गंगा किनारे 68 गांव बसे हुए हैं। इन गांवों में गंगा से रेत का अवैध खनन धड़ल्ले से होता है। कादरचौक, उसहैत और कछला से गंगा से रेत मंगवा कर एक सुरक्षित स्थान पर स्टाक किया जाता है। फिर माफिया उस रेत को ट्रक, ट्रैक्टर ट्राली के माध्यम से आस पास के जिले बरेली, चंदौसी, मुरादाबाद, शाहजहांपुर, गाजियाबाद, मेरठ, नोएडा, दिल्ली सहित अन्य स्थानों पर भेज देते हैं।

> अवैध खनन के खिलाफ कार्रवाई करते कई डंपर सीज किए गए हैं। जहां भी अवैध खनन की सूचना मिलती है, वहां पहुंचकर कार्रवाई की जाती है। मुझे अभी आए तीन माह ही बीते हैं। 160 से अधिक वाहनों को पकड़ा गया है। अवैध खनन के खिलाफ कार्रवाई लगातार जारी है।
>
> – **गुलशन कुमार**, खान अधिकारी

लिया हालचाल...

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को मेदांता पहुंचे, उन्होंने महंत नृत्य गोपाल दास का हालचाल जाना। मुख्यमंत्री ने चिकित्सकों से भी उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली। साथ ही आवश्यक उपचार की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। महंत नृत्य गोपाल दास उपचार के लिए मेदांता अस्पताल में भर्ती हैं।

साहब! इन तड़पते बेजुबानों पर भी कर लें नजरें इनायत

नगर और ग्रामीण क्षेत्र में पशुओं की उपचार सेवा रात्रि में उपलब्ध नहीं, हो जाती मौत

प्रशांत सक्सेना, लखनऊ

अमृत विचार : साहब! सड़कों पर घायल, रोते और कराहते इन बेजुबानों पर भी नजरें इनायत कर लें। जो बोल नहीं सकते पर हम आप इनका दर्द महसूस कर सकते हैं। इनके लिए रात में उपचार और संरक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है। ज्यादा तकलीफ हड्डी टूटने, खून बहने और पेट में बच्चा फंसा होने पर होती है। इन्हें रात में न प्राथमिक उपचार मिलता न ही सर्जरी की व्यवस्था है। इसके लिए बरेली, मेरठ, वाराणसी और आगरा भेजना बताया जाता है। जब निराश्रितों के लिए जिलों में सरकारी व्यवस्था नहीं तो आम आदमी इन्हें दूर-दराज अपने खर्च पर क्यों ले जाए।

- **दोपहर ढाई बजे बंद हो जाते अस्पताल इमरजेंसी में नाम की जिम्मेदारी**

नगर हो या ग्रामीण दोपहर 2:50 बजे के बाद पशु चिकित्सालय बंद हो जाते हैं। चिकित्सक नॉन प्रैक्टिस एलाउंस के आदेश का हवाला देकर इमरजेंसी सेवा नहीं देते हैं। मुख्यालय छोड़कर चले जाते हैं और रात में फोन नहीं उठाते हैं। अस्पतालों पर गंभीर रोग का इलाज, जांच और सर्जरी की व्यवस्था नहीं है। सर्जन न के बराबर हैं तो अन्य चिकित्सक भी कम हैं। 1962 सेवा दिन में तत्काल नहीं मिलती। शाम को संचालन बंद हो जाता है। पशुपालन विभाग तकनीक नहीं, बल्कि विकास अंतर्गत आता है। इसलिए मानव की तरह सेवाएं नहीं हैं। सिर, सिंग, मुंह व गर्दन कसी रस्सी या तार से बंधे क्रूरता के शिकार गोवंश घाव व कीड़े से तड़पते रहते हैं। इन्हें पकड़ने के लिए नगर निगम को छोड़ बाकी संसाधनों का रोना रोते हैं। तो कई जिलाधिकारी और पशुपालन के अधिकारी ऐसे हैं, जो इन्हीं संसाधनों से काम चलाकर पशुओं को तत्काल राहत पहुंचाते हैं।

प्रयागराज में गाय के पेट में फंसा रहा बच्चा, मौत

केस-1

21 जनवरी को ग्राम बारा खास में निराश्रित गाय के पेट में बच्चा फंसा होने की सूचना पर संबंधित चिकित्सक मौके पर पहुंचे। टीम ने प्रयास किए, लेकिन बच्चा नहीं निकाल पाए। जिले स्तर पर सर्जरी की व्यवस्था नहीं थी। हालत बिगड़ने पर दूसरे दिन रात में डीएम के निर्देश पर टीम पहुंची। प्राथमिक उपचार दिया पर सर्जरी की व्यवस्था नहीं हो पाई। कुछ देर बाद मौत हो गई।

प्रयागराज में गाय के पेट में फंसा बच्चा निकालती टीम।

लखनऊ में गोवंश को नहीं मिला उपचार, मौत

केस-2

28 दिसंबर की रात करीब एक बजे लखनऊ के बलिंगटन में हादसे में घायल गोवंश तड़पता रहा। बराबर खून बहा। राहगीर करीब 45 मिनट तक नगर निगम और पशुपालन विभाग को फोन मिलाते रहे, लेकिन नहीं उठे। डीएम आवास पर भी जानकारी दी। रात ने उपचार सेवा न होने की वजह से कोई नहीं पहुंचा और कुछ देर बाद मौत हो गई।

लखनऊ में हादसे में घायल गोवंश।

घायल सांड़ को डीएम पीलीभीत ने दिलाई राहत

केस-3

पीलीभीत के गांव नारायनपुर में आंख के पास धारदार हथियार से घायल और गर्दन में कसी रस्सी से घाव व खून से लथपथ सांड़ का संसाधनों के अभाव में ग्रामीण स्तर से रेस्क्यू नहीं हो पाया। बराबर आनाकानी की। डीएम को जैसे ही सूचना मिली तो सीवीओ को निर्देशित करके 13 दिसंबर को नगर पालिका की टीम लगा दी। सांड़ को पकड़कर गोशाला भेजा गया और रस्सी काटकर उपचार किया गया।

पीलीभीत में घायल सांड़।

उन्नाव में नंदी का जबड़ा चीर रही रस्सी

केस-4

उन्नाव के मियागंज ब्लॉक अंतर्गत राजबाग में क्रूरता से एक नंदी के मुंह में बांधी गई रस्सी खाल चीरते अंदर घुस गई। ब्लॉक व पंचायत को जानकारी हुई तो संसाधनों का अभाव बताया। अफसरों ने निर्देशित किया तो टीमें बनी लेकिन पकड़ने का प्रयास किया तो विफल हो गए। इसके बाद प्रयास ही नहीं किया, न ही जिम्मेदारों ने दर्द से कराह रहे नंदी की सुध ली।

उन्नाव में नंदी के जबड़े में बंधी रस्सी और घाव।

फैक्ट्री में करोड़ों रुपये की चोरी का खुलासा, तीन गिरफ्तार

आगरा,एजेंसी:आगरा-मथुरा : राजमार्ग पर स्थित रोजर शू इंडस्ट्रीज लिमिटेड में हुई चोरी का पुलिस ने खुलासा करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। एक अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि पुलिस ने आरोपियों के पास से करीब 7.70 करोड़ रुपये मूल्य का सोना, हीरे, चांदी और नकदी बरामद की। रोजर इंडस्ट्रीज अरतौनी के मालिक दीपक बुद्धिराजा ने 19 जनवरी को सिकंदरा थाना में सूचना दी थी कि पहली मंजिल का गेट टूटा हुआ है और अलमारियों के ताले भी टूटे पड़े हैं। अधिकारी ने बताया कि सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने पाया कि फैक्ट्री के लॉकर में रखी नकदी और भारी मात्रा में कीमती जेवरात चोरी हो चुके हैं। पुलिस ने बताया कि आरोपियों से 66 लाख रुपये से ज्यादा नकद और 7.70 करोड़ रुपये के गहने बरामद किए गए। आरोपियों की पहचान अनुपम शर्मा, अनुराग शर्मा और संजय सिंह उर्फ संजू के रूप में हुई है।

न्यूज ब्रीफ

युवाओं को मिलेगा उद्योग आधारित प्रशिक्षण

अमृत विचार, लखनऊ : गौतम बुद्ध नगर स्थित नोएडा अपैरल एक्सपोर्ट क्लस्टर (एनएईसी) और राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद (एससीवीटी) के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यह एमओयू पश्चिमी उत्तर प्रदेश के युवाओं के लिए कौशल विकास, रोजगार और उद्यमशीलता के नए अवसर खोलेगा। एमओयू के तहत एनएईसी आगामी पांच वर्षों में पश्चिमी यूपी के 18 जिलों के 128 विकास खंडों और 10,323 ग्रामों से जुड़े एक लाख युवाओं को 28 विभिन्न सेक्टरों में अल्पकालीन, उद्योगोन्मुख प्रशिक्षण देगा। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद 70 हजार युवाओं को औद्योगिक इकाइयों में रोजगार उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। कार्यक्रम की खास बात यह है कि कुल प्रशिक्षणार्थियों में 50 प्रतिशत महिलाएं होंगी। गारमेंट उद्योग की वास्तविक जरूरतों के अनुरूप प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाएगा।

प्रेरणा स्थल पर सजेगी विकसित यूपी की झांकी

अमृत विचार, लखनऊ : उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर 24 से 26 जनवरी तक राष्ट्र प्रेरणा स्थल पर आयोजित होने वाले तीन दिवसीय समारोह में प्रदेश की पर्यटन क्षमता, सांस्कृतिक विरासत और विकास यात्रा की भव्य झलक देखने को मिलेगी। 'विकसित भारत, विकसित उत्तर प्रदेश' थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम के माध्यम से उत्तर प्रदेश को अग्रणी पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित करने का संदेश दिया जाएगा। यह जानकारी पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने शुक्रवार को दी। उन्होंने बताया कि उप्र. पर्यटन विभाग के स्टॉल पर विभागीय योजनाओं के साथ-साथ पीपीपी मोड पर क्रियान्वित परियोजनाओं, माघ मेला-2026, बुंदेलखंड के प्रमुख पर्यटन स्थलों, विरासत संरक्षण, इको-टूरिज्म बोर्ड की पहलों तथा यूपीएसटीडीसी की 'लखनऊ दर्शन' इलेक्ट्रिक डबल डेकर बस सेवा जैसे सफल प्रयासों को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया जाएगा।

विद्यार्थियों को पर्यटन से जोड़ेंगी प्रतियोगिताएं

अमृत विचार, लखनऊ : उत्तर प्रदेश दिवस और राष्ट्रीय पर्यटन दिवस के अवसर पर उप्र. पर्यटन विभाग द्वारा युवाओं को पर्यटन से जोड़ने के उद्देश्य से राजधानी स्थित राष्ट्रीय प्रेरणा स्थल में विभिन्न रचनात्मक एवं शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन 24 जनवरी को होंगे, कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता होगी, जिसे जूनियर और सीनियर दो वर्गों में विभाजित किया गया है। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि इस मौके पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा, जो लाइव, ऑनलाइन और इंटरएक्टिव होगी। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को प्रदेश की प्राकृतिक धरोहर, सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक स्थलों और विकासात्मक उपलब्धियों की जानकारी दी जाएगी। युवा पर्यटन के अंतर्गत वॉक्स पॉप फिल्म प्रस्तुति और यूथ रील स्टोरीटेलिंग कार्यशाला का भी आयोजन किया जाएगा।

बिजली चोरी डिफॉल्टर भी अब ले सकेंगे ओटीएस योजना का लाभ

उपभोक्ता अब रेड पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कर ले सकते हैं योजना का लाभ

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: मध्यांचल निगम के एकमुश्त समाधान योजना (ओटीएस) को लाभ वह उपभोक्ता भी उठा सकेंगे, जो वर्ष-2023 में बिजली चोरी में पकड़े जाने के बाद डिफॉल्टर श्रेणी में आ गए थे। ऐसे उपभोक्ता अब रेड पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कर योजना का लाभ उठा सकते हैं। अब तक मध्यांचल डिस्कॉम में 11,077 उपभोक्ता पूरा भुगतान कर लगभग 23.33 करोड़ रुपये की छूट का लाभ ले चुके हैं, इनमें सर्वाधिक 2,446 उपभोक्ता अयोध्या क्षेत्र से हैं। वहीं बिजली चोरी से संबंधित मामलों में 15,663 उपभोक्ताओं ने पंजीकरण कराया, जिसके सापेक्ष 32.53 करोड़ रुपये के असेसमेंट पर 5.87 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है।

ओटीएस योजना के अंतर्गत अब तक कुल 11,98,407 उपभोक्ताओं ने रजिस्ट्रेशन कराया है और 1,147.64 करोड़ रुपये की राजस्व वसूली की जा चुकी है। वहीं शुक्रवार को 4.69 करोड़ रुपये की वसूली दर्ज की गई है। राजधानी में भी योजना को अच्छा रिस्पांस मिल रहा है। अमौसी क्षेत्र में 12,049 उपभोक्ताओं से 17.74 करोड़, जानकीपुरम में 1,922 उपभोक्ताओं से 3.54 करोड़, लखनऊ मध्य क्षेत्र में 1,230 उपभोक्ताओं से 2.30 करोड़ तथा गोमतीनगर क्षेत्र में 646 उपभोक्ताओं से 1.38 करोड़ रुपये की राजस्व प्राप्ति हुई। इसके अलावा योजना के माध्यम से अन्य जिलों जिसमें बरेली क्षेत्र से 288.92 करोड़, अयोध्या से 317.35 करोड़, सीतापुर से 210.64 करोड़, देवीपाटन से 185.70 करोड़ तथा रायबरेली क्षेत्र से 119.67 करोड़ रुपये की वसूली की गई।

घूस की शिकायत पर ऊर्जा मंत्री ने लाइनमैन को किया बर्खास्त, जेई निलंबित

अमृत विचार, लखनऊ : नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने घूसखोरी की शिकायत सामने आने पर कड़ा रुख अपनाते हुए दोषियों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। मंत्री के निर्देश पर एक लाइनमैन की सेवा समाप्त कर दी गई, जबकि एक कनिष्ठ अभियंता (जेई) को निलंबित किया गया है। साथ ही एसडीओ और अधिशासी अभियंता से स्पष्टीकरण मांगा गया है। ऊर्जा मंत्री शुक्रवार को लखनऊ स्थित अपने आवास पर आयोजित जनसुनवाई कर रहे थे। जनसुनवाई के दौरान अमरोहा के नौगांव सादात निवासी मोहम्मद यूसा ने विद्युत संयोजन देने के नाम पर रिश्वत मांगे जाने और जानबूझकर कार्य में टालमटोल करने की शिकायत समक्ष रखी। शिकायत को गंभीरता से लेते हुए मंत्री ने तत्काल पश्चिमांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के प्रबंध निदेशक रवीश गुप्ता से फोन पर बात कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। सख्त निर्देश मिलते ही प्रबंध निदेशक ने बिना विलंब किए कार्रवाई करते हुए कनिष्ठ अभियंता राजीव सिंह को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया, जबकि लाइनमैन अब्बास की सेवा समाप्त कर दी गई। इसके अलावा एसडीओ रितेश प्रसाद और अधिशासी अभियंता राहुल निगम को नियम-10 के तहत स्पष्टीकरण जारी किया गया है। संतोषजनक जवाब न मिलने पर विभागीय कार्रवाई की संस्तुति की गई है।

10 प्रमुख फसलों के एमएसपी की संस्तुति केंद्र को भेजने के निर्देश

अमृत विचार, लखनऊ : कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही की अध्यक्षता में शुक्रवार को विधानभवन स्थित कक्ष में खरीफ (2026-27) की प्रमुख फसलों के मूल्यों की संस्तुति के लिए मूल्य परामर्शदात्री समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में धान ग्रेड-ए, धान सामान्य, ज्वार, मक्का, उड़द, अरहर, मूंग, मूंगफली, सोयाबीन और तिल जैसी 10 प्रमुख फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गहन विचार-विमर्श किया गया।

कृषि मंत्री ने सभी फसलों के लिए प्रस्तावित मूल्यों की संस्तुति तैयार कर भारत सरकार को भेजने के निर्देश दिए, ताकि किसानों को उनकी उपज का उचित और लाभकारी मूल्य सुनिश्चित किया जा सके। बैठक में सहकारिता मंत्री जेपीएस राठौर, खाद्य एवं रसद राज्यमंत्री सतीश शर्मा समेत प्रमुख सचिव रविंद्र, अजय कुमार शुक्ला, सचिव इन्द्र विक्रम सिंह, निदेशक कृषि पंकज त्रिपाठी मौजूद रहे।

लापरवाह उर्वरक कंपनियों पर होगी एफआईआर: शाही

कृषि विभाग के कार्यों की समीक्षा करते मंत्री सूर्य प्रताप शाही और जेपीएस राठौर।

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने उर्वरकों की उपलब्धता और आपूर्ति व्यवस्था में लापरवाही बरतने वाली कंपनियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि जनवरी 2026 के लिए निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत आपूर्ति न करने वाली उर्वरक कंपनियों के खिलाफ तत्काल एफआईआर दर्ज कराई जाए।

विधानसभा स्थित समिति कक्ष में शुक्रवार को संपन्न समीक्षा बैठक में कृषि मंत्री ने स्पष्ट किया कि वर्तमान में प्रदेश को प्रतिदिन औसतन 12 से 13 यूरिया रैक प्राप्त हो रही हैं। 1 अक्टूबर 2025 से अब तक लगभग 1.02 करोड़ किसानों ने पीओएस मशीनों के माध्यम से 50.93 लाख मीट्रिक टन उर्वरक प्राप्त किया है। प्रदेश में इस समय 7.23 लाख मीट्रिक टन यूरिया, 4.35 लाख मीट्रिक टन डीएपी और 3.69 लाख मीट्रिक टन एनपीके उपलब्ध है।

सहकारिता क्षेत्र में 2.07 लाख मीट्रिक टन यूरिया और 1.79 लाख मीट्रिक टन डीएपी का स्टॉक मौजूद है, जबकि निजी बिक्री केंद्रों पर भी पर्याप्त भंडार है। मंडलवार समीक्षा में बरेली, मुरादाबाद, वाराणसी और गोरखपुर मंडलों में उर्वरकों की स्थिति संतोषजनक पाई गई।

सीएम युवा योजना के तहत कर्ज देने में जौनपुर अव्वल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- **यूपी दिवस पर आज मुख्यमंत्री करेंगे सम्मानित आजमगढ़ दूसरे व हरदोई तीसरे स्थान पर**

अमृत विचार: मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (सीएम युवा) योजना के क्रियान्वयन में शत-प्रतिशत से अधिक लाभ देकर जौनपुर पूरे प्रदेश में अव्वल रहा है। यूपी दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जिले को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करेंगे। योजना के तहत दूसरे स्थान पर आजमगढ़ और तीसरे स्थान पर हरदोई रहा।

वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए सरकार ने डेढ़ लाख युवाओं को लोन वितरण का लक्ष्य निर्धारित किया है। अब तक 1,03,353 युवाओं को स्वरोजगार के लिए लोन वितरित किया जा चुका है।

जौनपुर जिले ने इस योजना के क्रियान्वयन में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र सिंह के अनुसार जिले को वर्तमान वित्तीय वर्ष में 2,500 युवाओं को लोन वितरण का लक्ष्य दिया गया था। इसके सापेक्ष 8,240 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 7,033 आवेदन बैंकों को भेजे गए। अब तक 3,315 युवाओं को लोन वितरित किया जा चुका है। इस तरह जौनपुर ने लक्ष्य के सापेक्ष 132 प्रतिशत से अधिक लोन वितरण कर प्रदेश में पहला स्थान प्राप्त किया है। इसके अलावा अंबेडकरनगर चौथे और झांसी पांचवें स्थान पर रहे। कौशांबी, बहराइच, रायबरेली और महराजगंज का प्रदर्शन भी सराहनीय रहा।

14 लखपति दीदी को सम्मानित कर दिल्ली किया रवाना

अमृत विचार, लखनऊ : उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़ी 14 'लखपति दीदियों' को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। साथ ही उन्होंने कालीदास मार्ग स्थित अपने सरकारी आवास पर शुक्रवार को गणतंत्र दिवस परेड में विशेष अतिथि के रूप में शामिल होने के लिए दिल्ली रवाना होने वाली बस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

केशव प्रसाद मौर्य ने बताया कि 'लखपति महिला योजना' के तहत 33 लाख से अधिक महिलाओं का चिन्हांकन किया गया है, जिनमें से 18 लाख से अधिक महिलाएं लखपति श्रेणी में शामिल हो चुकी हैं। दिल्ली जाने वाली लखपति दीदियों में विभिन्न जिलों की महिलाएं शामिल हैं, जो ई-रिक्शा संचालन, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, कैफे संचालन, कृषि, सौंदर्य प्रसाधन और खाद्य उत्पादों जैसे विविध उद्यमों से जुड़ी हैं।

अपने सरकारी आवास पर लखपति दीदियों को सम्मानित करने के दौरान उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या।

तैयारी

विधानसभा चुनाव से पहले गुटबाजी पर लगाम लगाने को जिला स्तर पर निगरानी और समन्वय की दी गई जिम्मेदारी

भाजपा ने यूपी के 84 संगठनात्मक जिलों में नियुक्त किए पर्यवेक्षक

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: सत्तारूढ़ भाजपा ने जमीनी स्तर पर अपनी रणनीति को स्पष्ट करते हुए संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। पार्टी ने प्रदेश के 84 संगठनात्मक जिलों में पर्यवेक्षकों की नियुक्ति कर दी है। संगठन के नए मुखिया का यह फैसला जिला स्तर पर निगरानी और समन्वय की जिम्मेदारी के साथ विधानसभा चुनाव से पहले संगठन पर फोकस करते हुए गुटबाजी पर लगाम लगाने की तैयारी है।

पिछले महीने पंकज चौधरी को प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने के बाद यह पहला बड़ा संगठनात्मक निर्णय माना जा रहा है। जिन 84 संगठनात्मक जिलों में हाल ही में नए जिला अध्यक्ष नियुक्त किए गए थे, वहां अब पर्यवेक्षक तैनात किए गए हैं। इनकी भूमिका केवल रिपोर्टिंग तक सीमित नहीं होगी। उन्हें जिला संगठन, जनप्रतिनिधियों और पार्टी के विभिन्न मोर्चों के बीच समन्वय स्थापित करने, गुटबाजी पर नियंत्रण रखने और नेतृत्व की रणनीति को जमीन पर उतारने की जिम्मेदारी दी गई है।

संगठन में फीडबैक आधारित मॉडल

पंकज चौधरी के नेतृत्व में प्रदेश संगठन तेजी से फीडबैक-आधारित मॉडल पर काम कर रहा है। वे लगातार जिलों और क्षेत्रों का दौरा कर रहे हैं, स्थानीय नेताओं से सीधे संवाद कर रहे हैं और संगठन की नब्ज टटोल रहे हैं।

सभी वर्गों में संतुलन साधने की दिखाई दे रही कोशिश

इस संगठनात्मक कवायद के समानांतर भाजपा के भीतर सामाजिक समीकरण भी केंद्र में हैं। ब्राह्मण, ठाकुर, वैश्य, भूमिहार, ओबीसी और दलित सभी वर्गों में संतुलन साधने की कोशिश साफ दिखाई देती है। आंकड़े बताते हैं कि संगठन और सरकार, दोनों में ब्राह्मण और ठाकुर प्रतिनिधित्व लगभग संतुलित है, जबकि वास्तविक संगठनात्मक प्रभुत्व ओबीसी नेतृत्व के हाथों में है।

दलित राजनीति पर बड़ा फोकस

दलित राजनीति भाजपा के लिए अगला बड़ा फोकस बनती दिख रही है। संगठन और मंत्रिपरिषद में दलित प्रतिनिधित्व बढ़ाने के साथ-साथ, गैर-जाटव दलितों और पहली बार वोट देने वालों तक पहुंच बढ़ाने पर रणनीतिक काम हो रहा है। इसके साथ ही महिलाएं पार्टी की दूसरी बड़ी प्राथमिकता हैं। उज्ज्वला, आवास और मिशन शक्ति जैसी योजनाओं से बने माहौल को संगठनात्मक ताकत में बदलने के लिए जिला-मंडल स्तर पर महिला नेतृत्व को आगे लाने की तैयारी है।

पार्टी नेतृत्व का मानना है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में प्रदेश में सीटों का 62 से घटकर 33 रह जाना केवल राष्ट्रीय मुद्दों का असर नहीं था। इसके पीछे संगठनात्मक शिथिलता, मतदाता संपर्क की कमजोरी और सामाजिक संदेश की अस्पष्टता भी अहम कारण रहे। इसी अनुभव के आधार पर विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के बाद पर्यवेक्षकों को जिलों में भेजने की योजना बनाई गई। मतदाता सूचियों में नामों की कमी, खासकर पारंपरिक समर्थक वर्गों में, पार्टी के लिए चेतावनी की तरह देखी गई। हालांकि, चुनौतियां भी कम नहीं हैं। कानपुर और मुरादाबाद जैसे जिलों में संगठन और जनप्रतिनिधियों के बीच खींचतान लंबे समय से सामने आती रही है। पार्टी के भीतर यह स्वीकार किया जा रहा है कि यदि इन अंतर्विरोधों को समय रहते नहीं सुलझाया गया, तो चुनावी नुकसान तय है। पर्यवेक्षक व्यवस्था को इन्हीं कमजोर कड़ियों को जोड़ने के औजार के रूप में देखा जा रहा है।

सौर ऊर्जा को बढ़ावा देगा औरैया मॉडल

अमृत विचार, लखनऊ : औरैया जिले ने आवासीय सौर ऊर्जा को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और दूरदर्शी पहल करते हुए प्रदेश के लिए मॉडल प्रस्तुत किया है। औरैया जिले में अब नए आवासीय भवनों के नक्शे पास कराने के लिए सोलर रूफटॉप सिस्टम और रेन वाटर हार्वेस्टिंग को अनिवार्य कर दिया गया है। इसे सरकार ग्रीन एनर्जी और सतत विकास की दिशा में अन्य जिलों में लागू करने की तैयारी में है। निर्णय का उद्देश्य केवल बिजली बचत तक सीमित नहीं है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और जल संरक्षण को भी मजबूती देना है। नई व्यवस्था के तहत नगर पालिका, नगर पंचायत और नगर निगम स्तर पर बोर्ड बैठक में प्रस्ताव पारित कर इसे लागू किया जा सकता है।

अमृत विचार

शनिवार, 24 जनवरी 2026

अगर आप सच बोलते हैं, तो आपको कुछ भी याद रखने की जरूरत नहीं है।

–मार्क ट्वेन, अमेरिकी लेखक

क्रिकेट पर कलह

टी-20 विश्व कप जैसे वैश्विक आयोजन से ठीक पहले बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड द्वारा इसे खेलने से इनकार करना, एक व्यापक राजनीतिक संकेत देता है। अंतरिम सरकार के खेल सलाहकार आसिफ नजरुल और बीसीबी अध्यक्ष अमीनुल इस्लाम 'बुलबुल' का यह कहना कि टीम भारत नहीं जाएगी, तब और अधिक प्रश्न खड़े करता है, जब भारत एक स्थिर सरकार, सुदृढ़ सुरक्षा तंत्र और सफलतापूर्वक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों का रिकॉर्ड रखता है। ऐसे में असुरक्षा का तर्क वस्तुपरक से ज्यादा राजनीतिक है। क्रिकेट प्रेमियों के लिए यह निराशापूर्ण है। भारत-बांग्लादेश या पाकिस्तान-बांग्लादेश जैसे मुकाबलों में जो क्रिकेटीय रोमांच और भावनात्मक तीव्रता होती है, उसे स्कॉटलैंड जैसी टीम से भर पाना मुश्किल है। प्रतिस्पर्धात्मक आकर्षण और दर्शकीय ऊर्जा की दृष्टि से यह एक 'खानापूरी' जैसा ही प्रतीत होता है।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में अधिकांश बोर्ड सरकारी प्रभाव से पूरी तरह मुक्त नहीं होते, खिलाड़ियों की खेलने की इच्छा के बावजूद बहुधा सरकारी अनुमति बाधक बनती है, जो खेल की स्वायत्तता पर गंभीर प्रश्न है। आईपीएल में कोलकाता नाइट राइडर्स द्वारा मुस्तफ़ीजुर रहमान को रिलीज़ करने का बीसीसीआई का निर्देश विवादित हो सकता है, पर एक फ्रेंचाइज़ी-आधारित, निजी व्यावसायिक लीग में ऐसे निर्देश को समूचे बांग्लादेशी क्रिकेटरों या राष्ट्र के अपमान के रूप में प्रस्तुत करना अतिशयोक्ति है। एक खिलाड़ी के अनुबंधीय मसले को राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न बना देना संतुलित प्रतिक्रिया नहीं कही जा सकती। बांग्लादेश द्वारा आईपीएल के प्रसारण पर रोक लगाना और विश्व कप का बहिष्कार करना दोनों कदम अंततः अपने ही दर्शकों के हितों के विरुद्ध जाते हैं। लगभग दो करोड़ क्रिकेट-प्रेमियों को एक बड़े टी20 आयोजन से वंचित करना किस हद तक न्यायसंगत है? टेस्ट और एकदिवसीय क्रिकेट की घटती लोकप्रियता के बीच टी20 ही वह प्रारूप है, जो युवाओं को जोड़ता है, इसलिए यह कदम खेल-भावना को ठेस पहुंचाने जैसा है। आर्थिक दृष्टि से भी यह निर्णय उसे भारी पड़ सकता है। अनुमानतः 27 मिलियन अमेरिकी डॉलर (लगभग 240 करोड़ रुपये) का प्रत्यक्ष नुकसान, साथ ही ब्रॉडकास्ट और स्पॉन्सरशिप राजस्व में गिरावट— ये सब बीसीबी की वित्तीय सेहत पर असर डालेंगे। खिलाड़ी भी मैच फीस और प्रदर्शन-आधारित बोनस से वंचित रहेंगे। दीर्घकाल में यह प्रतिभा विकास और घरेलू ढांचे पर भी असर डाल सकता है। आईसीसी यदि इस कदम को राजनीति प्रेरित मान कर अनुशासनात्मक कार्रवाई करता है, तो सदस्यता निलंबन जैसी कठोर कार्रवाई से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में बांग्लादेश की भागीदारी ठप पड़ सकती है और द्विपक्षीय श्रृंखलाएं अनिश्चितकाल के लिए टल सकती हैं। इससे नुकसान केवल भारत या आईसीसी का नहीं, स्वयं बांग्लादेश का अधिक होगा। भारत और बीसीसीआई को भी प्रसारण व दर्शकीय राजस्व में कमी का सामना करना पड़ सकता है।

सबसे बड़ा सवाल यह कि क्या क्रिकेट को कूटनीति का औजार बनाया जाना चाहिए? इतिहास साक्षी है कि खेल संवाद के पुल बनाते हैं, दीवारें नहीं। बांग्लादेश सरकार और बीसीबी के पास अभी भी संवाद, मध्यस्थता और संतुलित समाधान का मार्ग खुला है।

प्रसंगवश

बेटियों की शिक्षा: विकास के दावों के बीच टूटता भविष्य

हर वर्ष 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। यह दिन देश की बेटियों के सम्मान, अधिकार और सशक्तिकरण की याद दिलाता है। यह दिवस जितना उत्सव का प्रतीक है, उतना ही आत्ममंथन का अवसर भी देता है। आज जब भारत विश्व मंच पर विकास, डिजिटल प्रगति और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की बात करता है, तब भी देश की लाखों बालिकाएं ऐसी हैं, जो शिक्षा की दहलीज़ तक पहुंचकर बीच रास्ते लौट आती हैं। यही कारण है कि आज भी हमारे सामाजिक और शैक्षिक विकास के दावों को कठोर प्रश्नों के घेरे में खड़ा करती है।

पिछले कुछ दशकों में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में निश्चित रूप से सुधार हुआ है। शिक्षा मंत्रालय की यू-डाइस प्लस 2021–22 रिपोर्ट बताती है कि प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं का नामांकन लगभग लड़कों के बराबर पहुंच चुका है। यह उपलब्धि दर्शाती है

संध्या राजपुरोहित

शिक्षिका

कि समाज और सरकार दोनों स्तरों पर प्रयास किए गए हैं, लेकिन जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर ऊंचा होता है, यह समानता धीरे-धीरे टूटने लगती है। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर पहुंचते-पहुंचते बड़ी संख्या में बालिकाएं शिक्षा व्यवस्था से बाहर हो जाती हैं। यही वह मोड़ है, जहां सपनों से भरी आंखें अधूरे भविष्य के साथ पीछे रह जाती हैं।

यूनेस्को की ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट भी इस सच्चाई की पुष्टि करती है कि भारत उन देशों में शामिल है, जहां माध्यमिक शिक्षा पूरी न कर पाने वाली बालिकाओं की संख्या अब भी चिंताजनक है। रिपोर्ट यह बताती है कि गरीबी, सामाजिक भेदभाव और लैंगिक असमानता बालिकाओं की शिक्षा के बड़े अवरोध बने हुए हैं। शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि सामाजिक संरचना का आईना बन जाती है।

यदि इस परिदृश्य को आदिवासी अंचलों के संदर्भ में देखा जाए तो स्थिति और भी गंभीर दिखाई देती है। जनगणना 2011 के अनुसार देश की लगभग 8.6 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जनजातियों की है, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में उनकी भागीदारी, विशेषकर बालिकाओं की, इस अनुपात से बेहद कम है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण और शिक्षा मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि आदिवासी समुदायों में बालिकाओं का स्कूल छोड़ने का प्रतिशत सामान्य आबादी की तुलना में अधिक है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और राजस्थान जैसे राज्यों के आदिवासी बहुल जिलों में यह समस्या लगातार गहराती जा रही है।

आदिवासी बालिकाएं केवल आर्थिक अभाव से ही नहीं जूझतीं, बल्कि पलायन, भाषा की कठिनाइयों, स्कूलों की दूरी और सामाजिक परंपराओं का भी बोझ उनके कंधों पर होता है। आजीविका की तलाश में जब परिवार पलायन करता है, तो सबसे पहले शिक्षा की डोर बेटी के हाथ से छूटती है। अस्थायी बस्तियों में न स्कूल होता है, न शिक्षकीय सहयोग और न ही पढ़ाई के लिए अनुकूल वातावरण। परिणामस्वरूप बालिकाएं घरेलू श्रम, मजदूरी और देखभाल की जिम्मेदारियों में उलझ जाती हैं। बालिकाओं के स्कूल-कॉलेज छोड़ने के पीछे सामाजिक कारणों की श्रृंखला और भी लंबी है। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में स्कूल-कॉलेज की दूरी और सुरक्षित परिवहन की कमी अभिभावकों की चिंता बढ़ाती है। कई स्कूलों में शौचालय, स्वच्छता और पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव बालिकाओं की उपस्थिति को प्रभावित करता है। किशोरावस्था में पहुंचते ही मासिक धर्म से जुड़ी सामाजिक चुप्पी और भ्रांतियां अनेक बालिकाओं को स्कूल से दूर कर देती हैं।

अमेरिका का 150 बरस पुराना ख्वाब है ग्रीनलैंड

राजेश जैन

वरिष्ठ पत्रकार

ग्रीनलैंड दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है। क्षेत्रफल लगभग 21.7 लाख वर्ग किलोमीटर, लेकिन आबादी सिर्फ 60 हजार के आसपास। यहां का 80 प्रतिशत हिस्सा बर्फ से ढका रहता है। न घने जंगल, न हाईवे, न चमकते शहर। कई महीनों तक सूरज डूबता नहीं और कई महीनों तक रात खत्म नहीं होती। देखने में शांत, ठंडा और वीरान लगने वाला यह द्वीप आज वैश्विक राजनीति के सबसे गर्म मोर्चों में बदल चुका है। वजह है- अमेरिका की पुरानी, लेकिन अब खुली और आक्रामक चाहत। डोनाल्ड ट्रंप का संदेश बिल्कुल साफ है- ग्रीनलैंड चाहिए, हर हाल में चाहिए, लेकिन सवाल यह है कि अमेरिका को इस बर्फीले, कम आबादी वाले द्वीप की इतनी ज़रूरत क्यों है और क्या अमरीका इसे हासिल कर पाएगा।\

ग्रीनलैंड पर अमेरिका की नजर नई नहीं है। 1867, 1910, 1946; तीन बार अमेरिका ने डेनमार्क को ऑफर दिया। 1946 में तो 100 मिलियन डॉलर का सोना तक देने को तैयार था। हर बार जवाब मिला– न, लेकिन ट्रंप ने डिप्लोमेसी से आगे बढ़कर सीधी ज़िद पकड़ ली- अगर खरीदा नहीं जा सकता, तो दबाव डालो।

बता दें कि ग्रीनलैंड डेनमार्क का स्वायत्त क्षेत्र है। डेनमार्क का साफ संदेश है- ग्रीनलैंड बिकाऊ नहीं है। ग्रीनलैंड की अपनी सरकार, अपनी संसद और अपनी पहचान है। डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे डरिक्सन ने अमेरिकी प्रस्ताव को बेतुका बताया। ग्रीनलैंड के नेताओं ने कहा- यह जमीन नहीं, हमारी आत्मा है। यूरोप के देशों ने भी डेनमार्क का समर्थन किया। ग्रीनलैंड बिकेगा, इसकी संभावना लगभग शून्य है, क्योंकि आज दुनिया सिर्फ ताकत से नहीं, कानून, संप्रभुता और जनमत से चलती है, लेकिन दबाव जारी रहेगा- कभी आर्थिक, कभी कूटनीतिक, कभी रणनीतिक।

ग्रीनलैंड दुनिया के नक्शे पर ऐसी जगह स्थित है, जो यूरोप, उत्तरी अमेरिका और एशिया के बीच सेतु जैसा काम करता है। उत्तर में आर्कटिक महासागर, पास ही रूस, नीचे यूरोप और पश्चिम में अमेरिका। मतलब साफ है- जो ग्रीनलैंड को कंट्रोल करता है, वह आर्कटिक का चौकीदार बन जाता है। आज युद्ध सिर्फ जमीन पर नहीं लड़े जाते। आसमान, समुद्र, अंतरिक्ष और साइबर स्पेस- हर मोर्चे पर मुकाबला है। ऐसे में ग्रीनलैंड जैसी लोकेशन सोने से भी ज्यादा कीमती हो जाती है।

ग्रीनलैंड में अमेरिका पहले से मौजूद है। यहां स्थित थुले एयर बेस (अब पिटुफिक स्पेस बेस) अमेरिकी मिसाइल डिफेंस सिस्टम का अहम हिस्सा है। यहीं से अमेरिका रूस की बैलिस्टिक मिसाइल गतिविधियों पर नजर रखता है, सैटेलाइट ट्रैक करता है, आर्कटिक क्षेत्र की निगरानी करता है। अगर अमेरिका को पूरा ग्रीनलैंड मिल जाता है, तो वह आर्कटिक का फुल कंट्रोल सेंटर बन सकता है। रूस लगातार आर्कटिक में नए सैन्य ठिकाने, नई पनडुब्बियां, नए एयरबेस और नई मिसाइलें तैनात कर रहा है। ऐसे में अमेरिका के लिए ग्रीनलैंड रूस पर नजर रखने का वॉच टावर है।

आज की दुनिया मोबाइल, चिप्स, इलेक्ट्रिक कार, मिसाइल सिस्टम और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर चल रही है। इन सबकी जान हैं- रेयर अर्थ एलिमेंट्स। बिना इनके आधुनिक तकनीक ठप हो जाती है, लेकिन इन पर अभी चीन का दबदबा है। करीब 60–70 प्रतिशत सप्लाई चीन से आती है। अमेरिका इस निर्भरता से बाहर निकलना चाहता है और यहीं ग्रीनलैंड अहम हो जाता है। इस द्वीप की धरती के नीचे रेयर अर्थ मिनरल्स का बड़ा खजाना छिपा है। अगर अमेरिका को ग्रीनलैंड मिल जाता है, तो टेक्नोलॉजी की जंग में चीन को सीधी चुनौती मिल सकती है।

दुनिया की ऊर्जा भूख खत्म नहीं हुई है। तेल और गैस अब भी वैश्विक राजनीति का ईंधन हैं। ग्रीनलैंड के आसपास समुद्र की गहराइयों में तेल और प्राकृतिक गैस के बड़े भंडार होने की संभावना है। अभी बर्फ और मौसम खुदाई में रुकावट हैं, लेकिन जैसे-जैसे आर्कटिक पिघल रहा है, ये संसाधन सुलभ होते जा रहे हैं। अमेरिका इसे भविष्य का ऊर्जा बैंक मानकर चल रहा है।

ग्लोबल वॉर्मिंग सिर्फ पर्यावरण संकट नहीं, यह भू-राजनीतिक बदलाव भी है। आर्कटिक की बर्फ पिघलने से एशिया से यूरोप जाने के नए समुद्री रास्ते खुल रहे हैं। सफर हजारों किलोमीटर छोटा हो सकता है। इस रूट को कहा जा रहा है- आर्कटिक सिल्क रोड ग्रीनलैंड इस रास्ते का प्राकृतिक गेटवे है। जो इस रूट को कंट्रोल करेगा, वह वैश्विक व्यापार की दिशा तय करेगा। अमेरिका यह मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहता।

रूस आर्कटिक में सैन्य ताकत बढ़ा रहा है। चीन निवेश के जरिए पैर जमा रहा है। चीन खुद को नियर-आर्कटिक स्टेट कहता है, भले ही उसका आर्कटिक से सीधा भौगोलिक रिश्ता न हो। ग्रीनलैंड में चीन ने एयरपोर्ट, माइनिंग और इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश की कोशिश की। अमेरिका को डर है कि अगर उसने ग्रीनलैंड पर पकड़ नहीं बनाई, तो उसका उत्तरी दरवाजा दुश्मनों के लिए खुल जाएगा, इसलिए ग्रीनलैंड सिर्फ जमीन नहीं, रणनीतिक दीवार है।

अमेरिका, चीन और रूस; तीनों की नजरें इस बर्फीली धरती पर टिकी हैं। ग्रीनलैंड असल में भविष्य की वैश्विक राजनीति का रणक्षेत्र है। अंत में यह समझना ज़रूरी है कि ग्रीनलैंड की लड़ाई आज की नहीं, ढेढ़ सौ साल से ज्यादा पुरानी है। जलवायु परिवर्तन, तकनीकी प्रतिस्पर्धा और नई वैश्विक शक्ति-संरचना ने इस द्वीप को रणनीतिक केंद्र में ला खड़ा किया है। यहां जो आज निवेश, सैन्य मौजूदगी और राजनीतिक प्रभाव बनाएगा, वही भविष्य के नियम लिखेगा। ग्रीनलैंड फिलहाल भले ही बर्फ से ढका हो, लेकिन इसके नीचे छिपी संभावनाएं दुनिया की राजनीति को पिघला रही हैं, इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि ग्रीनलैंड सिर्फ एक द्वीप नहीं, बल्कि 21वीं सदी की महाशक्ति बनने की चाबी है।

ग्रीनलैंड पर अमेरिका की नजर नई नहीं है। 1867, 1910, 1946 तीन बार अमेरिका ने डेनमार्क को ऑफर दिया। 1946 में तो 100 मिलियन डॉलर का सोना तक देने को तैयार था। हर बार जवाब मिला–न।

आमने

वर्ष 2019 में आयोजित परीक्षाओं की ओएमआर शीट में बदलाव हुए थे और इस मामले की कड़ियां पूर्व मुख्यमंत्री के घर तक जाती हैं। इस पूरे मामले में तत्कालीन मुख्यमंत्री के निजी सुरक्षा अधिकारी की आखिर क्या भूमिका थी?

–भजनलाल शर्मा

मुख्यमंत्री, राजस्थान

सामने

मुख्यमंत्री भजनलाल जी, मैंने तो अभी आपके ऊपर कोई आरोप नहीं लगाए हैं। मैं तो फीडबैक के आधार पर युवाओं के हित में आपसे आग्रह कर रहा हूं। मेरी मंशा केवल यह जानने की है कि भर्ती परीक्षाओं को लेकर युवाओं के मन में जो शंकाएं हैं, उनका समाधान सरकार कब और कैसे करेगी?

–अशोक गहलोत

पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

तमाम खूबियों के बावजूद क्यों पिछड़ा उत्तर प्रदेश

अरविंद जयतिलक

लेखक

आज उत्तर प्रदेश का स्थापना दिवस है। आजादी के ढाई वर्ष बाद 24 जनवरी, 1950 को उत्तर प्रदेश राज्य के गठन की अधिसूचना जारी हुई। भौगोलिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश प्राचीनतम 'गोंडवाना लैंड' का एक हिस्सा है। कैम्ब्रियन युग में विन्ध्य क्रम की शैलों ने इसे धरातलीय स्वरुप दिया। भौगोलिक विविधताओं एवं सांस्कृतिक समृद्धियों से आच्छादित उत्तर प्रदेश 1836 से 1877 तक 'उत्तर-पश्चिम प्रांत' और 1877 से 1937 तक 'संयुक्त प्रांत आगरा एवं अवध' के नाम से जाना गया। 1937 में इसे एक नया नाम 'संयुक्त प्रांत' मिला। 1858 तक उत्तर प्रदेश की राजधानी आगरा, 1858 से 1921 तक इलाहाबाद और फिर 1921 में लखनऊ हो गई। गौर करें तो भरपूर मानव संसाधन, उर्वर भूमि और प्राकृतिक समृद्धि-संपन्नता से लैस होने के बावजूद भी उत्तर प्रदेश आर्थिक मोर्चे पर वह अपेक्षित मुकाम हासिल नहीं कर पाया, जिसे देश के तमाम राज्यों ने हासिल किया।

देखा जाता है कि जिस राज्य में कानून-व्यवस्था मजबूत होती है और अवसंरचना का तेजी से विस्तार होता है, उस राज्य के विकास का पहिया तेजी घूमता है। उससे निवेश और प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि होती है और राज्य समृद्धि की ओर छलांग लगाता है। गौर करें तो विकास का पहिया चार तरह के इंजनों के बूते दौड़ता है। एक, निजी निवेश यानी नई परियोजनाओं में निजी क्षेत्र का निवेश। दूसरा, सार्वजनिक खर्च यानी बुनियादी ढांचे वाली विकास परियोजनाओं में सरकार का निवेश। तीसरा, आंतरिक खपत यानी वस्तुओं व सेवाओं की खपत और चौथा वाह्य खपत यानी वस्तुओं का निर्यात। उत्तर प्रदेश में इन चारों इंजनों को गतिशील देखा जा रहा है। यह संभव इसलिए हुआ है कि राज्य में कानून का शासन स्थापित हुआ है और अपराधियों के हौसले पस्त हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने अवसंरचनाओं को मजबूती देने के लिए बिजनेस रिफार्म एक्शन प्लान पर अमल किया है, जिससे निवेशकों को आकर्षित करने में मदद मिल रही है। सरकार ने अपनी नीतियों के बरक्स निवेश मित्र पोर्टल बनाकर उस पर 227 सेवाएं शामिल कर उद्यमियों को निवेश के लिए आकर्षित किया है।

सरकार की 'एक जिला एक उत्पाद' की नीति से स्थानीय स्तर पर रोजगार को बढ़ावा मिला है और निर्यात में तेजी आई है। एक जिला एक उत्पाद मिशन से हर वर्ष हजारों करोड़ रुपये के उत्पादों का निर्यात हो रहा है। इससे लोगों की आमदनी बढ़ रही है। उत्तर प्रदेश की सरकार ने 2018 में प्रदेश की राजधानी लखनऊ में इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन प्रारंभ किया और वह क्रम लगातार जारी है। इसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। पिछले साल के वैश्विक निवेशक सम्मेलन के दौरान प्राप्त 40 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव राज्य में दुनिया भर के निवेशकों की बढ़ती रुचि का प्रमाण है।

सरकार उत्तर प्रदेश को महाराष्ट्र और गुजरात की तर्ज पर विकसित करने के लिए पांच ग्राउंड बैंकिंग सेरेमनी का आयोजन कर चुकी है। तकरीबन चार लाख से अधिक लोगों को नए उद्योगों से रोजगार मिला है। एक आंकड़े के मुताबिक उत्तर प्रदेश में अब तक 15 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश हो चुका है। पांच लाख करोड़ से अधिक की 8300 से अधिक परियोजनाएं वाणिज्यिक परिचालन में हैं। दस लाख करोड़ रुपये की 8100 से अधिक परियोजनाएं जारी हैं। देखें तो उत्तर प्रदेश सरकार ने निवेश बढ़ाने और 'ईज ऑफ डूइंग' बिजनेस को सुधारने में उल्लेखनीय प्रगति की है। आज उत्तर प्रदेश 'ईज ऑफ डूइंग' बिजनेस मामले में महाराष्ट्र के बाद देश में दूसरे स्थान पर है।

सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कारोबारियों को प्रोत्साहित किया है। राज्य में तकरीबन 90 लाख से अधिक इकाइयां हैं, जो तकरीबन डेढ़ करोड़ लोगों को रोजगार देती हैं। यह भारत के कुल एमएसएमई की संख्या 6.33 करोड़ में लगभग 14 प्रतिशत का योगदान देता है। अर्थव्यवस्था के मामले में 2017 में पांचवे नंबर पर रहने वाला उत्तर प्रदेश आज तमिलनाडु, कर्नाटक और गुजरात को पीछे छोड़ देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का तमगा हासिल कर चुका है।

आंकड़ों पर गौर करें तो उत्तर प्रदेश का सकल राज्य घरेलू उत्पाद 2016-2017 के दरमियान 12.75 लाख करोड़ रुपये था, जो आज 2024-25 में बढ़कर 25 लाख करोड़ रुपये हो चुका है। यह 2025-26 में 30.8 लाख करोड़ होने का अनुमान है। यानी देखें तो 2017 के बाद इसमें 80 फीसदी से अधिक का ग्रोथ होना तय है। इसी तरह 2012 से 2017 के दरमियान प्रतिव्यक्ति आय 48,520 रुपये थी जो आज बढ़कर एक लाख आठ हजार पांच सौ बहत्तर रुपये हो चुकी है। इसी तरह 2012-2017 के बीच सिर्फ 302 किमी एक्सप्रेस वे का निर्माण हुआ था, जबकि 2017-2025 के दरमियान तकरीबन दो हजार किमी से अधिक एक्सप्रेस वे निर्माणाधीन है।

भरपूर मानव संसाधन, उर्वर भूमि व प्राकृतिक समृद्धि-संपन्नता होने के बावजूद उत्तर प्रदेश आर्थिक मोर्चे पर अपेक्षित मुकाम हासिल नहीं कर पाया। आज यूपी का स्थापना दिवस है।

सोशल फोरम

दुनिया की सबसे लंबी सड़क

विभूति भूषण शर्मा

ब्लॉगर

अगर आपको एक यादगार और रोमांचक रोड ट्रिप का सपना है, तो पैन अमेरिकन हाईवे आपकी लिस्ट में जरूर होना चाहिए। यह सड़क अलास्का के ठंडे इलाकों से शुरू होकर अर्जेंटीना के दक्षिणी सिरे तक जाती है। इसकी कुल लंबाई करीब 30,500 किलोमीटर है और यह 14 देशों से होकर गुजरती है।

इस लंबे सफर में हर तरह के नजारे देखने को मिलते हैं। अलास्का की बर्फीली वादियां, कोस्टा रिका के हरे भरे वर्षावन, ऊंचे पहाड़, सूखे रेगिस्तान, समुद्र के किनारे और घने जंगल। यह सड़क प्रकृति की लगभग हर खूबसूरती को एक ही यात्रा में दिखा देती है। डेरियन गैप इस हाईवे का एकमात्र हिस्सा है, जहां सड़क पूरी नहीं है। यहां पनामा और कोलंबिया के बीच लगभग 160 किलोमीटर का घना जंगल है, जिसकी वजह से रास्ता टूट जाता है और यात्रियों को अलग रास्ता अपनाना पड़ता है। यही हिस्सा इस रोड ट्रिप को और भी ज्यादा रोमांचक बना देता है।

–फेसबुक वॉल से

सामयिकी

स्वच्छ हवा का संकट और घटते वित्तीय संसाधन

'क्लीन एयर फंड' की ताज़ा वैश्विक रिपोर्ट ने एक बार फिर इस कड़वी सच्चाई को सामने रखा है कि दुनिया के तमाम देश और विकास एंजेसियां स्वच्छ हवा के लिए बड़े-बड़े वादे तो जरूर करती हैं, लेकिन उनका धन उन्हीं परियोजनाओं में जा रहा है, जो हवा को और ज़हरीला बना रही हैं। यह स्थिति केवल नीतिगत विफलता नहीं है, बल्कि एक ऐसे वैश्विक अन्याय का उदाहरण है, जिसका सबसे भारी बोझ भारत जैसे विकासशील देशों को उठाना पड़ रहा है। यह चिंताजनक स्थिति है और इस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

'क्लीन एयर फंड' की रिपोर्ट के मुताबिक 2023–24 के दौरान कई देशों की सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने जीवाश्म ईंधन को लंबे समय तक बनाए रखने वाली परियोजनाओं में वित्तीय राशि 80 फीसद बढ़ाकर 9.5 अरब डॉलर कर दी। इसके उलट, स्वच्छ हवा और वायु गुणवत्ता सुधार के लिए दी जाने वाली सहायता घटकर 3.7 अरब डॉलर रह गई, जो कुल वैश्विक विकास सहायता का महज एक फीसद ही है। यह आंकड़ा बताता है कि विकास वित्त और मानव स्वास्थ्य के बीच की खाई कितनी गहरी होती जा रही है।

कुमार सिद्धार्थ

वरिष्ठ पत्रकार

हर वर्ष होने वाले अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन चाहे वे जलवायु पर हों या स्वास्थ्य पर, ये स्वच्छ हवा को मानव अधिकार के रूप में स्वीकार करते हैं, मगर जब बजट आवंटन की बात आती है, तो वही सरकारें और संस्थाएं पीछे हट जाती हैं। ऐसा लगता है कि वैश्विक निर्णय लेने वाली संस्थाएं प्रदूषण से होने वाली मौतों और बीमारियों की वास्तविक कीमत को समझने के बजाय आर्थिक और कारोबारी हितों को ज़्यादा महत्व दे रही हैं। इससे कई देशों के समाने जोखिम लगातार बढ़ रहा है।

स्थिति तब और गंभीर हो जाती है, जब दुनिया की सबसे बड़ी विकास एजेंसी यूएसएड के बंद होने और विश्व बैंक पर जीवाश्म ईंधन ऋण बढ़ाने के दबाव जैसी चर्चा सामने आती हैं। इन फैसलों ने स्वच्छ हवा के लिए चल रहे वैश्विक प्रयासों की रीढ़ कमजोर कर दी है। क्लीन एयर फंड की मुख्य कार्यकारी जेन बर्स्टन की चेतावनी इस संदर्भ में बेहद अहम है। अगर दिशा नहीं बदली गई, तो आने वाले वर्षों में करोड़ों और लोग जहरीली हवा के कारण जान गंवाएंगे।

गौरतलब है कि आज वायु प्रदूषण दुनिया भर में हर साल लगभग 57 लाख लोगों की जान ले रहा है। यह संख्या 2040 तक 62 लाख तक पहुंच सकती है। यह कोई संभावित खतरा नहीं, बल्कि एक चलती-फिरती महामारी है, जो चुपचाप समाज के सबसे कमजोर तबकों को निगल रही है। यह संकट सिर्फ़ स्वास्थ्य से जुड़ा नहीं है; यह बताता है कि वैश्विक राजनीति में किसकी ज़िंदगी की कीमत क्या है। लिहाजा, अब इसे समझने और सचेत होने की जरूरत है।

रिपोर्ट बताती है कि स्वच्छ हवा के लिए उपलब्ध सीमित वित्तीकय अनुदान का वितरण बेहद असमान है। वर्ष 2023 में फिलीपींस, बांग्लादेश और चीन को वायु गुणवत्ता सुधार के लिए 65 फीसद बाहर से सहायता राशि मिली, जबकि उप-सहारा अफ्रीका के लिए सहायतासहायता राशि 91 फीसद घटकर केवल 1.18 करोड़ डॉलर रह गई। यानी जिन इलाक़ों में स्वास्थ्य ढांचा सबसे कमजोर है, वहीं मदद सबसे कम पहुंच रही है। भारत इस वैश्विक असमानता का सबसे बड़ा उदाहरण है। दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में भारत के शहर लगातार ऊपर बने हुए हैं। दिल्ली, पटना, लखनऊ, कानपुर, धनबाद, गाजियाबाद ये नाम अब केवल शहर नहीं, बल्कि वैश्विक प्रदूषण चेतावनी बन चुके हैं। सर्दियों के महीनों में उत्तर भारत का बड़ा हिस्सा गैस चैंबर में बदल जाता है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

1952 में शामिल की गईं झांकियां

गणतंत्र दिवस की परेड 1950 में शुरू हुई, लेकिन झांकियां औपचारिक रूप से 1952 में शामिल की गईं। शुरुआती सालों में झांकियां छोटी-मोटी होती थीं। ये संस्कृत और प्राकृत शब्द 'झांकी' से आई हैं, जिसका मतलब है नजारा या झलक। ये मंदिरों के रथ उत्सव और भक्ति काल की जुलूसों से प्रेरित हुआ करती थीं। कई झांकियों पर लोग जमे हुए पोज में खड़े होकर लोककथाएं, खेती या पौराणिक दृश्य दिखाते थे। गणतंत्र दिवस परेड में हर साल आमतौर पर 22 से 30 झांकियां होती हैं। ये राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों, मंत्रालयों और प्रमुख सरकारी संस्थाओं की होती हैं। इनमें संगीत, लोक नृत्य, स्थानीय कपड़े और थीम वाली कहानियां दिखाकर भारत की संस्कृति, इतिहास और विकास के काम दिखाए जाते हैं। पहले झांकियां एकता सिखाती थीं, अब हाई-टेक वाली प्रगति की तस्वीर पेश करती हैं। ये झांकियां सिर्फ परेड का हिस्सा नहीं, बदलते भारत का आईना हैं। हम गरीब से अमीर, पिछड़े से आगे, साधारण से तकनीकी देश बने, लेकिन विविधता बरकरार हर राज्य अपनी कहानी लाता है।

बदलते भारत की कहानी

गणतंत्र दिवस की झांकियों का सफर

मशहूर कमेंटेटर जसदेव सिंह बताते थे कि गणतंत्र दिवस परेड के दौरान राजपथ (अब कर्तव्यपथ) पर दर्शक झांकियों का हर्षध्वनि से स्वागत करते हैं। ये सिलसिला अब भी जारी है। जसदेव सिंह ने करीब आधी सदी तक रेडियो और टीवी पर गणतंत्र दिवस परेड का आंखों देखा हाल सुनाया था। गणतंत्र दिवस की सुबह जब कर्तव्य पथ पर सूरज निकलता है, तो मार्च करते जवान, मिलिट्री बैंड, डांस या कोई करतब दिखाते स्कूली बच्चे और हवाई जहाजों के फ्लाईपास्ट के बीच झांकिया लाखों-करोड़ों लोगों का अपनी तरफ ध्यान खींचती हैं। ये चलती-फिरती कलाकृतियां रंग, आवाज और प्रतीकों से भरी होती हैं। ये भारत की एकता में विविधता की कहानी बयान करती हैं।

विवेक शुक्ला
पूर्व सूचना अधिकारी
यूएई एंबेसी

झांकियों में संस्कृति के साथ सामाजिक मुद्दों का भी समावेश

अब जब हम झांकियां देखते हैं, तो याद आता है, 1950 का साधारण भारत आज दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था है, स्पेस पावर, डेमोक्रेसी की मिसाल। झांकियां हमें बताती हैं कि विकास सिर्फ अर्थशास्त्र नहीं, संस्कृति, पर्यावरण, सामाजिक न्याय सबको साथ लेकर चलना है। आप कह सकते हैं कि झांकियों में 1970-80 के दशक में बदलाव आने लगा। अब झांकियां सिर्फ संस्कृति नहीं, सामाजिक मुद्दों पर फोकस करने लगीं। केरल ने 1976 में साक्षरता अभियान दिखाया। तमिलनाडु ने भरतनाट्यम नृत्य पेश किया। झांकियां 1991 के बाद उद्योग और शहरों की तरफ मुड़ीं। तब देश में आर्थिक उदारीकरण की बयार बहने लगी थी। असली बदलाव 1990 और 2000 के शुरुआत में आया। झांकियां बड़ी और कुछ हटकर बनने लगीं। ये हाई-टेक भी हो गईं। डीआरडीओ (DRDO) की झांकी 2000 के बाद गणतंत्र दिवस परेड का नियमित हिस्सा बनने लगीं। ये भारत की रक्षा प्रौद्योगिकियों और आत्मनिर्भरता को दर्शाती है, जिसमें नवीनतम मिसाइलें, रडार सिस्टम, ड्रोन रोधी प्रणालियां, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियां और स्वदेशी हथियार प्रदर्शित किए जाने लगे। इनका थीम अक्सर 'रक्षा कवच' होता है। कृषि मंत्रालय (या संबंधित कृषि निकाय जैसे ICAR) की झांकी गणतंत्र दिवस परेड का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है, जो अक्सर जैविक खेती, मोटे अनाज (मिलेट्स), पशुधन या कृषि नवाचारों जैसे विषयों पर केंद्रित होती है। इसकी 2023 में 'मिलेट ईयर' पर आधारित झांकी थीं।

सभी राज्यों में खास है दिल्ली की झांकी

इस बीच, सरकार ने 2024 में नया रोटेशन सिस्टम शुरू हुआ, ताकि हर राज्य/केंद्र शासित प्रदेश को हर तीन साल में कम से कम एक बार मौका मिले। पिछले साल 2025 की थीम थी 'स्वर्णिम भारतः विरासत और विकास'। बीते साल 16 राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों की झांकियां निकलीं। उत्तर प्रदेश का महाकुंभ मेला को दर्शाती झांकी को बहुत पसंद किया गया था। चूंकि गणतंत्र दिवस का मुख्य आयोजन दिल्ली में होता है, इसलिए दिल्ली की झांकी को देखने के लिए जनता खासी उत्सुक रहती है। वैसे भी दिल्ली लघु भारत है। दिल्ली की झांकी 1952 की परेड का हिस्सा थी। दिल्ली के शुरुआती दौर की झांकियों में सामाजिक और केंद्र सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं पर ही फोकस रहता था। दिल्ली की 1965 की झांकी में देश के कृषि क्षेत्र में बढ़ते कदमों को दिखाया। तब तक देश में हरित क्रांति आ चुकी थी और उस महान क्रांति की नींव राजधानी के भारतीय कृषि अनुसंधान केंद्र (पूसा) और जोंती गांव में ही रखी गई थी। 1965 की झांकी में जोंती के किसान भी शामिल थे। दिल्ली की 1966 की झांकी में सबको शिक्षा देने का वादा था। 1978 में वयस्क शिक्षा और 1979 की झांकी में शराबबंदी पर फोकस था, लेकिन 1990 के दशक बाद दिल्ली को विधानसभा मिल गई। तब यहां की झांकियों का रंग यहां के समाज से मेल खाने लगा। इसका नमूना मिला 1993 में जब दिल्ली की झांकी में यहां की गंगा-जमुनी तहजीब को पेश किया गया। इससे मिलती-जुलती थीम पर 1999 में शाहजहांबाद की जान और शान चांदनी चौक के जीवन, समाज और संस्कृति पर झांकी निकली थी। इसे बहुत पसंद किया गया था। करगिल की जंग विषय था दिल्ली की झांकी का साल 2000 में। करगिल की जंग में कैप्टन अनुज नैयर और कैप्टन मोहम्मद हनीफउद्दीन समेत दिल्ली के कई शूरवीरों ने अपनी जान का नजराना दिया था। अमीर खुसरो के जीवन पर आधारित झांकियां साल 2000 और फिर 2004 में निकलीं। मिर्जा गालिब की शख्सियत पर 2001 में झांकी निकली थी। मेट्रो रेल 2003 तथा 2006 दिल्ली की झांकी के फोकस में रही। दिल्ली की 2019 की झांकी में महात्मा गांधी पर फोकस किया गया। इसमें महात्मा गांधी के दिल्ली में बिताए गए 720 दिनों को दर्शाया गया।

खैर, झांकियों का काम 26 जनवरी को खत्म नहीं होता। कई झांकियां बाद में सार्वजनिक जगहों पर लगाई जाती हैं या सांस्कृतिक आयोजनों, प्रदर्शनियों और स्कूलों में इस्तेमाल होती हैं। ये जैव-विविधता, विरासत संरक्षण, शहर के विकास और सामाजिक कामों के बारे में जागरूकता फैलाती रहती हैं।

सखी री बसंत आया

ठंड कमजोर पड़ते ही सूर्य की गर्माहट धरती को सींचने लगती है। इसी क्षण बसंत के आगमन की मधुर आहट सुनाई देने लगती है। बसंत केवल एक ऋतु नहीं, अपितु नवजीवन, उल्लास और नई शुरुआत का गहन संदेश है। पतझड़ के बाद पेड़-पौधों की नई पत्ती एवं फूलों के साथ प्रकृति का पुनः जागृति होना और खुले आसमान में पक्षियों के झुंड का विचरण ऋतुराज के आरंभ की अनुपम छटा हैं। साथ ही सरसों के पीले खेत लहलहाते हैं, आम के बौर खिल उठते हैं और कोयल की कूक गगन में गूंजती है और अनगिनत फूलों की महक हवा में घुल जाती है, जो वसुंधरा का श्रृंगार कर बसंत का स्वागत करती है।

मानव जीवन में बसंत ऋतु प्रेम, प्रतीक्षा और मानवता का संदेश लेकर आती है। प्रकृति का नवजीवन, सौंदर्य और उल्लास मानवीय भावनाओं में प्रेम, आशा और करुणा का संचार करता है। बसंत पंचमी ज्ञान एवं चेतना के साथ आध्यात्मिकता का प्रतीक हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बसंत ऋतु में प्रकृति का यह परिवर्तन जैसे- हरियाली का फैलना, फूलों का खिलना और मौसम का सुहावना होना, जो मानव मस्तिष्क पर सीधा और सकारात्मक प्रभाव डालता है। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, यह प्रभाव मुख्य रूप से सूर्य की रोशनी, हार्मोनल बदलाव और पर्यावरणीय उत्तेजनाओं से जुड़ा होता है। इस ऋतु में सूर्य की अधिक रोशनी से सेरोटोनिन हार्मोन का स्तर बढ़ता है, जो मूड को बेहतर बनाता है, विटामिन-डी का उत्पादन बढ़ता है, जो प्रतिरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत करता है। यह मौसम अवसाद से राहत देता है और ऊर्जा का स्तर बढ़ाता है। इसलिए बसंत ऋतु मस्तिष्क के लिए एक प्राकृतिक 'मूड बूस्टर' का काम करती है।

अंबिका अंबी
लेखिका

सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय परंपरा में बसंत ऋतु का विशेष स्थान है। यह ऋतु न केवल प्रकृति के पुनर्जागरण का प्रतीक है, बल्कि विभिन्न प्रमुख पावन त्योहारों का केंद्र भी है, जो जीवन, ज्ञान, भक्ति, प्रेम और उल्लास के संदेश लेकर आते हैं। बसंत में मुख्य रूप से बसंत पंचमी, महाशिवरात्रि और फाल्गुन की होली जैसे त्योहार मनाए जाते हैं। बसंत पंचमी ऋतुराज बसंत के आगमन की प्रमुख तिथि है। इस दिन विद्या की देवी माता सरस्वती की पूजा होती है, जो ज्ञान एवं रचनात्मकता की प्रतीक है।

महाशिवरात्रि फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को आती है। यह भगवान शिव की आराधना का प्रमुख पर्व है। बसंत की इस ऋतु में यह त्योहार शिव-पार्वती प्रेम और जगत के संतुलन का प्रतीक बन जाता है। फाल्गुन की होली वसंत का सबसे रंगीन और खुशनुमा उत्सव है, जो होलिका दहन से शुरू होकर रंगों की होली तक, यह पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत, प्रेम, मित्रता और सामाजिक एकता का संदेश देता है।

बसंत की बहार में रंगों का यह उत्सव प्रकृति के उल्लास को दर्शाता है। बसंत ऋतु के सभी त्योहार भारतीय संस्कृति में ज्ञान, भक्ति, मानवता और प्रेम उल्लास की ऊर्जा है, जो सांस्कृतिक रूप से नवीनीकरण, आशा और सामूहिक उत्सव का प्रतीक बनाए रखती है।

बसंत ऋतु मात्र मौसम का बदलाव नहीं, बल्कि जीवन का एक जीवंत आह्वान है। जैसे-जैसे ठंडी हवाएं गर्म होकर मधुर बनती हैं, वैसे ही हमारे मन की जड़ता भी पिघलने लगती है। यह ऋतु अपने अंदर की सुस्ती को त्यागकर, हर पल उत्साह से जीने की प्रेरणा देती है और साथ सिखाती है कि हर एक अंत के बाद नई शुरूआत प्रतीक्षारत होता है। इसलिए जीवन से कभी हार नहीं माननी चाहिए। बसंत ऋतु धर्म, प्रकृति, संस्कृति और शिक्षा चारों को एक सूत्र में पिरोता है और प्रेम, आध्यामिकता एवं मानवता का संदेश देता है। बसंत जीवन में एक नई शुरुआत का भी शुभ संदेश देता है।

ऋतुराज का आगमन

आप घर का दरवाजा, खिड़की, रोशनदान खोल लीजिए। बाहर ऋतुराज बसंत अपने पूरे वैभव के साथ उपस्थित है। निकलिए और उसका स्वागत कीजिए। उदासी के दस महीने कट गए। पुराने साल को पुराने कैलेंडर की तरह रद्दी में डालिए, मगर ये गौर भी कीजिएगा कि कोरोना महामारी के खौफ ने बहुत कुछ सिखाया भी। बसंत का साहस देखने लायक है, वह जिंदगी के तमाम दु:खों और संतापों को धकिया कर आपकी तरफ लपका आ रहा।

हमारे देश में ऋतुओं/मौसमों का कमाल देखने लायक है। सावन बरसता है, तो केवल खेत-खलिहान ही नहीं, सूखा मन भी भीगता है। पुरवाई चलती है, तो मन-मयूर थिरकने लगता है। ये माघ के कृष्णपक्ष की पंचमी तो असाधारण है। मन को मथने वाले देवता मंमथ, जिन्हें रूप का राजा कामदेव कहते हैं और रानी रति की षोड़शोपचार पूजा का दिन यही बसंतपंचमी है-बाकी तो आप समझदार हैं ही। वाणी की देवी सरस्वती की जयंती भी इसी दिन यानी प्रेम और मस्ती के दरम्यान विवेक व संयम का साथ किसी भी दशा में छोड़ना नुकसानदायक हो सकता है।

संतोष कुमार तिवारी
नैनीताल

बसंत गहरे अर्थ में प्रकृति और मानवजीवन के बीच एकीकरण का महापर्व है। मन को बेलगाम न होने दीजिए। उत्कंठा के वेग का मनोविज्ञान समझिए। बसंत है तो क्या हुआ। अभी तो पूरा फागुन पड़ा है। आम में बौर आ गए, अब मन के बौराने का समय भी सन्निकट है। बसंत-सेना फागुन की अगवानी करने को बेताब है। इन दोनों के मध्य महाशिवरात्रि है। भूतभावन शंकर की बारात सजेगी। मैं तो कहता हूं दूल्हा के वेश में शिवदर्शन अत्यंत मंगलकारी होगा। जब गरल पीते शिव इतने उदार, आशुतोष हैं। उन्हें भार्या रूप में पर्वत-पुत्री पार्वती मिलेंगी। वहीं पार्वती, जिन्होंने भगवान शिव को पतिरुप में पाने के लिए घोर तप किया और अपर्णा कहलाईं। शिव उन्हें ब्याहकर किसी महल या रनिवास में रखने के बजाय फिर सीधे हिमालय पहुंचते हैं।

बहरहाल चारो ओर मस्ती है। जेठ की गरम हवा के बदले फागुनी बयार कानों में मधु घोल रही। गृहस्थ तो अपनी नोन लकड़ी से जूझते हुए अनुरागी मौसम में थोड़ा- थोड़ा बहक रहा, लेकिन यहां तो साधु-संन्यासियों का मन भी मचल उठा। कुछ भी हो, बासंती मौसम को मन में उतरने की आजादी दीजिए। फिर देखिए उसका असर। जीवन मे संताप कम नहीं, मगर तमाम बखेड़े व चिंताओं के बने रहने की वजह भी हमी आप हैं। दिमाग को प्रकृति से विमुख करके लोग बेतहाशा भागे जा रहे, अरे! आगे खाई हैं साथियों।

संघर्ष की पाठशाला से सेवा के पथ तक

सूरज कुमार सिंह
खंड शिक्षा अधिकारी
देवरिया

जॉब का पहला दिन

आजमगढ़ की मिट्टी में पले-बढ़े सपने जब बागपत की धरती पर आकर जिम्मेदारी का रूप लेते हैं, तो यह सिर्फ स्थान परिवर्तन नहीं होता। यह वर्षों के संघर्ष, धैर्य और आत्मविश्वास की परिणति होती है। खंड शिक्षा अधिकारी के रूप में नौकरी का पहला दिन मेरे जीवन का ऐसा अध्याय था, जहां पीछे मुड़कर देखने पर मेहनत की लंबी पगडंडी दिखती थी और आगे सेवा की व्यापक राह।

बागपत स्थित कार्यालय में प्रवेश करते ही माहौल की गंभीरता महसूस हुई। फाइलों की आवाजाही, कर्मचारियों की व्यस्तता और दीवारों पर टंगी योजनाएं- सब कुछ मानो यह बताने के लिए पर्याप्त था कि यह पद केवल अधिकार का नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व का है। चारों ओर की निगाहें जिज्ञासु थीं। लोगों के मन में सवाल था, इतनी कम उम्र में खंड शिक्षा अधिकारी कैसे? उस क्षण समझ आया कि पद से पहले भरोसा अर्जित करना होता है और भरोसा केवल काम से बनता है।

नौकरी के पहले दिन मन में मिश्रित भावनाएं थीं। एक ओर नई जिम्मेदारियों का डर, तो दूसरी ओर कुछ नया सीखने और व्यवस्था में सकारात्मक बदलाव लाने का उत्साह। यह उपलब्धि अचानक नहीं मिली थी। इसके पीछे प्रतियोगी परीक्षाओं की लंबी, कठिन और अनुशासनपूर्ण यात्रा रही है। तैयारी के दिनों में कई बार असफलताओं से सामना हुआ, कई बार खुद पर संदेह भी आया, लेकिन हर बार लक्ष्य ने फिर खड़ा किया। आज का तकनीकी युग प्रतियोगी परीक्षाओं को पहले से कहीं अधिक जटिल बना चुका है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, डिजिटल अध्ययन सामग्री की भरमार, सोशल मीडिया पर तुलना और लगातार बदलते परीक्षा पैटर्न- इन सबके बीच ध्यान, धैर्य और निरंतरता बनाए रखना अपने आप में चुनौती है। तैयारी के दौरान अनेक अभ्यर्थियों, शिक्षकों और अधिकारियों से संवाद का अवसर मिला। इन संवादों ने न सिर्फ ज्ञान बढ़ाया, बल्कि प्रशासनिक सोच को समझने का दृष्टिकोण भी दिया। इस ताकत के पीछे जो सबसे प्रबल स्तंभ था वह मेरी मां के हौंसले और सपनों से बुना था और हर असफलता पर उन्होंने यही कहा कि छोटी असफलताएं बड़ी सफलता को प्राप्त करने की दिशा निर्धारित करती हैं बस धैर्य रखना पड़ता है। आज वह इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनके लालन-पालन व संघर्षमयी जीवन हमेशा एक नई ऊर्जा व सकारात्मक अभिप्रेरणा से नित नए कार्यों हेतु बल प्रदान करता है।

बागपत पहुंचकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश की कार्यसंस्कृति और प्रशासनिक व्यवस्था को करीब से देखने का अवसर मिला। यहां की समयबद्धता, अनुशासन और जमीनी स्तर पर काम करने की परंपरा ने विशेष रूप से प्रभावित किया। शिक्षा व्यवस्था में सुधार और नवाचार की व्यापक संभावनाएं स्पष्ट दिखीं। पहले ही दिन यह एहसास हुआ कि अधिकारी होना लक्ष्य नहीं, बल्कि व्यवस्था को बेहतर बनाना उद्देश्य है। नौकरी का पहला दिन मेरे लिए केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं था, बल्कि एक संकल्प का आरंभ था। ईमानदारी से काम करने, सीखते रहने और शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने का संकल्प। यह कहानी उन युवाओं के लिए है, जो तकनीकी युग की चुनौतियों के बीच भी अपने सपनों पर भरोसा रखते हैं। शुरुआत कठिन हो सकती है, रास्ता लंबा हो सकता है, लेकिन यदि इरादा स्पष्ट हो और मेहनत निरंतर, तो मंजिल अपने आप रास्ता दे देती है। अंत में स्वलिखित पंक्तियों से अपनी बात खत्म करता हूं-

हवा ऐसी चली कि कोई समझ ही नहीं पाया 'सूरज'...
किसी को मिली ज़न्नत तो किसी के हिस्से दोजख़ आया।

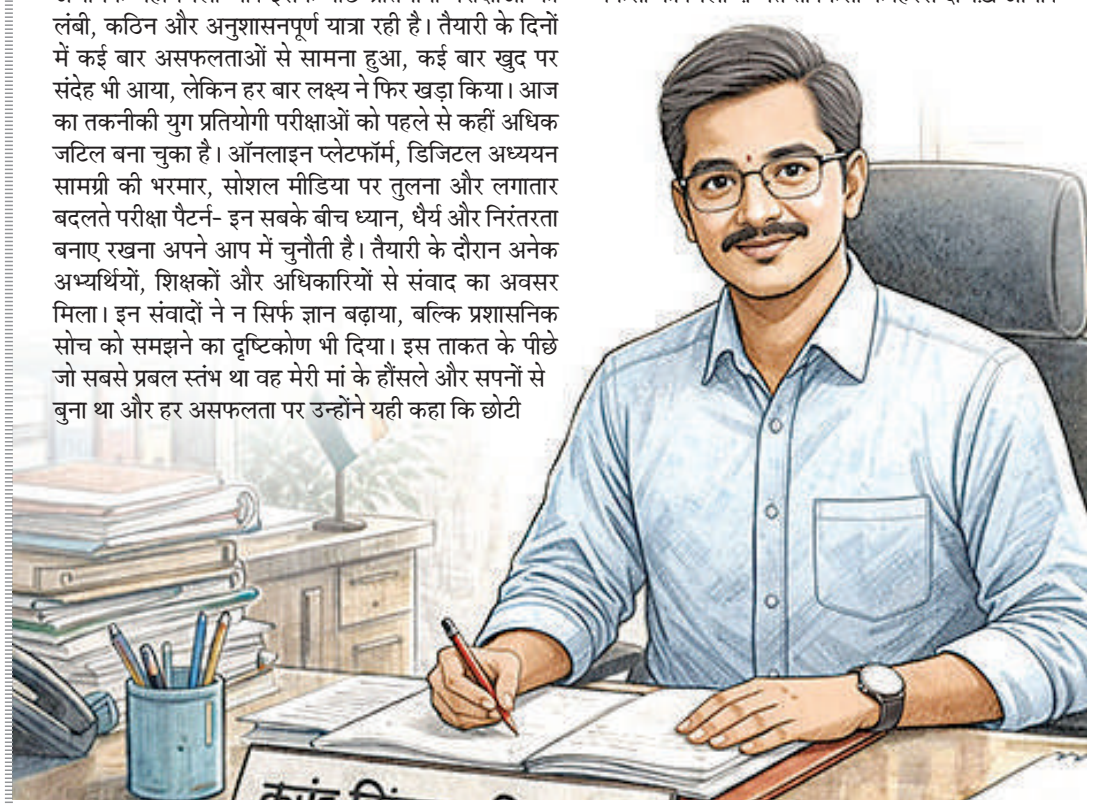

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	81,537.70	25,048.65
गिरावट	769.67	241.25
प्रतिशत में	0.94	0.95

सोना 1,58,700 प्रति 10 ग्राम

चांदी 3,29,500 प्रति किलो

अमृत विचार

बरेली, शनिवार, 24 जनवरी 2026

www.amritvichar.com

बरेली मंडी

वनस्पति तेल तिलहन : तुलसी 2580, राज श्री 1890, फ़ॉर्चून कि. 2370, रविन्द्रा 2465, फॉर्चुन 13 किग्रा 2090, जय जवान 2095, सचिन 2090, सूरज 2095, अवसर 1925, उजाला 2050, गृहणी 13 kg 1940, क्लासिक (किग्रा) 2280, मोर 2290, चक्र टिन 2345, ब्लू 2170, आशीर्वाद मस्टर्ड 2340, स्वास्तिक 2535

किराना : हल्दी निजामाबाद 17000, जीरा 24500, लाल मिर्च 18000-23000, धनिया 9400-12000, अजवायान 13500-20000, मेथी 6000-8000 सौंफ 9000-13000, सोंठ 31000, (प्रतिकि.) लौंग 800-1000, बादाम 780-1080, काजू 2 पीस 840, किशमिश पीली 300-400, मखाना 800-1100

चावल प्रति कु. : डबल चाबी सेला 9700, स्पाइस 6500, शरबती कच्ची 5250, शर्बती स्टीम 5350, मंसूरी 4000, महबूब सेला 4050, गौरी रॉयल 8200, राजभोग 6850, हरी पत्ती (1 किग्रा,5 किग्रा) 10100, हरी पत्ती नेचुरल 9100, गौरी स्पेशल 8400, गौरी प्रीमियम 9800, सूमो 4000, गौरी रॉयल 8600, मंसूरी पनघट 4150,लाडली 4100

दाल दलहन : मूंग दाल इंदौर 9700, मूंग धोवा 10000, राजमा चित्रा 11200-12500, राजमा भूटान नया 10100, मलका काली 7250-7450, मलका दाल 7350-9200, मलका छांटी 7250, दाल उड़द बिलासपुर 7800-8500, मसूर दाल छोटी 10000-11600, दाल उड़द दिल्ली 10600, उड़द साबुत दिल्ली 10500, उड़द धोवा इंदौर 11800, उड़द धोवा 9800-11000,चना काला 7150, दाल चना 7250, दाल चना मोटी 7100, मलका विदेशी 7200, रूपकिशोर बेसन 7500, चना अकोला 6600, डबरा 6700-8400, सच्चा हीरा 8600, मोटा हीरा 9900, अरहर गोला मोटा 8000, अरहर पटका मोटा 8400, अरहर कोरा मोटा 8700, अरहर पटका छोटा 10500-11000, अरहर कोरी छोटी 11900

चीनी : पीलीभीत 4380, बहेड़ी 4300

हल्द्वानी मंडी

चावल : शरबती- 3400, मसूरी- 700, बासमती- 5400, परमल- 1050

दाल दलहन : काला चना- 2100, साबुत चना दाल- 1300, मूंग साबुत- 4200, राजमा- 8200-11200, दाल उड़द- 5000, साबुत मसूर दाल- 2000, मसूर दाल- 1900, उड़द साबुत- 3400, काबुली चना- 7600, अरहर दाल- 10200, लोबिया/करमानी- 1100

रुपया 92 तक गिरकर 91.90 पर बंद

कमजोर घरेलू बाजारों और विदेशी पूंजी की लगातार निकासी का नहीं झेल पाया दबाव

मुंबई, एजेंसी

लगातार गिर रहा रुपया शुक्रवार को कारोबार के दौरान अमेरिकी डॉलर के मुकाबले अपने सर्वकालिक निचले स्तर 92 तक पहुंच गया। हालांकि आखिर में मामूली सुधार के साथ 91.90 पर बंद हुआ।

अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 91.45 प्रति डॉलर पर खुला। इसके बाद डॉलर के मुकाबले 91.41 के उच्च और 92.00 के सर्वकालिक निचले स्तर पर पहुंचा। अंत में 91.88 के रिकॉर्ड निचले स्तर पर बंद हुआ जो पिछले बंद स्तर से 32 पैसे की गिरावट है। बृहस्पतिवार को रुपया सात पैसे की बढ़त के साथ 91.58 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इससे पहले 21 जनवरी को 68 पैसे टूटकर 91.65 प्रति डॉलर के सर्वकालिक निचले स्तर पर बंद हुआ था। इस महीने अब तक रुपया 200 पैसे तक यानी दो प्रतिशत तक लुढ़क चुका है।

वर्ष 2025 में विदेशी पूंजी की निरंतर निकासी और डॉलर की मजबूती से घरेलू मुद्रा में पांच प्रतिशत की गिरावट आई थी। विशेषज्ञों के मुताबिक आयात से डॉलर की मांग बढ़ने से रुपये पर और दबाव पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि घरेलू मुद्रा विदेशी पूंजी और वैश्विक बाजारों में जोखिम से बचने की प्रवृत्ति से दबाव में रही। कमजोर घरेलू बाजारों और विदेशी पूंजी की लगातार निकासी से भारतीय रुपया शुरुआती बढ़त गंवा बैठा। कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि और अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल में उछाल से भी रुपये पर दबाव पड़ा।

विदेशी मुद्रा भंडार 14 अरब डॉलर बढ़ा : आरबीआई

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक ने शुक्रवार को कहा कि 16 जनवरी को समाप्त सप्ताह के दौरान भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 14.16 अरब डॉलर बढ़कर 701.36 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इससे पिछले सप्ताह में कुल मुद्रा भंडार 39.2 करोड़ डॉलर बढ़कर 687.19 अरब डॉलर हो गया था। सितंबर 2024 में मुद्रा भंडार 704.89 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था।

रुपये की गिरावट से सहमा शेयर बाजार... सेंसेक्स में 770 और निफ्टी में 241 अंकों की भारी गिरावट

मुंबई। रुपये के अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंचने और चौतरफा बिकवाली के दबाव में घरेलू शेयर बाजार में शुक्रवार को फिर भारी गिरावट हुई। सेंसेक्स करीब 770 और निफ्टी 241 अंक लुढ़क गया। निवेशकों ने सुरक्षित निवेश की ओर रुख करना बेहतर समझा। इस बीच विदेशी पूंजी की लगातार निकासी ने भी शेयर बाजार पर दबाव बढ़ा दिया।

सेंसेक्स 769.67 अंक यानी 0.94 प्रतिशत की गिरावट के साथ 81,537.70 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के बीच एक समय यह 835.55 अंक फिसलकर 81,471.82 तक आ गया।

निवेशकों ने 6 लाख करोड़ रुपये गंवाए

एनएसई का निफ्टी भी 241.25 अंक यानी 0.95 प्रतिशत टूटकर 25,048.65 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी भी एक समय 25,025.30 अंक तक फिसल गया था। सेंसेक्स के समूह में शामिल कंपनियों में से अदाणी पोर्ट्स, इंडिगो, एक्सिस बैंक, बजाज फिनसर्व, पावर ग्रिड, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, भारतीय स्टेट बैंक, मारुति सुजुकी, बजाज फाइनेंस, एनटीपीसी, ट्रेंट, एलएंडटी और रिलायंस इंडस्ट्रीज में प्रमुख रूप से गिरावट रही।

- व्यापक बाजार में छोटी कंपनियों का बीएसई स्मॉलकैप सूचकांक 2.19 प्रतिशत और मझोली कंपनियों का मिडकैप सूचकांक 1.56 प्रतिशत टूट गया।
- विदेशी संस्थागत निवेशकों ने बृहस्पतिवार को 2,549.80 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, घरेलू संस्थागत निवेशकों ने 4,222.98 करोड़ रुपये की खरीदारी की।
- जापान का निक्की, चीन का शंघाई कंपोजिट, दक्षिण कोरिया का कॉस्पी और हांगकांग का हैंगसेंग सूचकांक बढ़त में बंद हुए।

बैंकिंग धोखाधड़ी : अनिल अंबानी और एडीएजी को नए नोटिस जारी

नई दिल्ली, एजेंसी

- अदालत की निगरानी में जांच की मांग वाली जनहित याचिका पर सुप्रीम कोर्ट का कदम
- ईडी और सीबीआई को 10 दिन के अंदर लिफाफा बंद रिपोर्ट दाखिल करने का भी निर्देश

सुप्रीम कोर्ट ने अनिल अंबानी और अनिल धीरूभाई अंबानी समूह (एडीएजी) को एक जनहित याचिका पर शुक्रवार को नए नोटिस जारी किए। याचिका में कंपनी और उसकी समूह कंपनियों से जुड़े बड़े पैमाने पर बैंकिंग और कॉर्पोरेट धोखाधड़ी की अदालत की निगरानी में जांच का अनुरोध किया गया है। शीर्ष कोर्ट ने सीबीआई और ईडी को कथित धोखाधड़ी की जांच पर 10 दिन के भीतर सीलबंद लिफाफे में स्थिति रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश भी दिया।

सीजेआई सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की पीठ ने इस तथ्य पर गौर किया कि अनिल अंबानी और एडीएजी को याचिकाकर्ता तथा पूर्व केंद्रीय सचिव ईएएस शर्मा द्वारा दायर जनहित याचिका के नोटिस पहले ही तामील किए जा चुके हैं। पीठ ने पिछले साल 18 नवंबर को जनहित याचिका पर केंद्र सरकार, सीबीआई, ईडी, अनिल अंबानी और एडीएजी को नोटिस जारी किए थे। कोर्नेट कहा कि अनिल अंबानी और एडीएजी को पेश होने और मामले में अपना जवाब दाखिल करने का यह आखिरी मौका है। बंबई हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल को अनिल अंबानी और एडीएजी को नोटिस तामील कराने और अनुपालन रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया गया। पीठ ने याचिका पर 10 दिन बाद सुनवाई तय की।

पीठ ने इससे पहले याचिकाकर्ता शर्मा की ओर से पेश वकील प्रशांत भूषण की ओर से दिए गए निवेदनों पर दोनों पक्षों से तीन सप्ताह के भीतर जवाब मांगा था। जनहित याचिका पर आगे की सुनवाई तीन सप्ताह बाद के लिए स्थगित कर दी थी। भूषण ने आरोप लगाया कि जांच एजेंसियां इस बड़े बैंकिंग घोटाले में बैंकों और उनके अधिकारियों की कथित संलिप्तता की जांच नहीं कर रही हैं।

सोना 1,500 रुपये बढ़कर 1.58 लाख, चांदी 9,500 रुपये चढ़ी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में शुक्रवार को सोने की कीमत 1,500 रुपये बढ़कर 1,58,700 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंचो गईं। कारोबारियों के मुताबिक 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना इससे पिछले सत्र में 1,57,200 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। बुधवार को इसने 1,59,700 रुपये प्रति 10 ग्राम का सर्वकालिक उच्च स्तर छुआ था। चांदी की कीमतों में भी 9,500 रुपये यानी लगभग तीन प्रतिशत का जोरदार उछाल आया और यह पिछले बंद भाव 3,20,000 रुपये प्रति किलोग्राम से बढ़कर 3,29,500 रुपये प्रति किलोग्राम (सभी करों सहित) हो गई। चांदी ने बुधवार को स्थानीय सर्राफा बाजार में 3,34,300 रुपये प्रति किलोग्राम का रिकॉर्ड बनाया था।

प्रमुख वित्तीय संस्थाओं में वेतन और पेंशन संशोधनों को केंद्र सरकार ने दी मंजूरी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने शुक्रवार को सार्वजनिक क्षेत्र की प्रमुख वित्तीय संस्थाओं के कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए व्यापक वेतन एवं पेंशन संशोधनों को मंजूरी दे दी। यह कदम सार्वजनिक क्षेत्र की सामान्य बीमा कंपनियों (पीएसजीआईसी), राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) और भारतीय रिजर्व बैंक के मौजूदा तथा पूर्व कर्मचारियों को लाभान्वित करेगा।

केंद्र सरकार के इस संशोधन से कुल मिलाकर लगभग 46,322 कर्मचारी, 23,570 पेंशनर, और 23,260 परिवार पेंशनर लाभान्वित होंगे। वित्त मंत्रालय ने कहा है कि कर्मचारियों के लिए वेतन संशोधन एक अगस्त 2022 की पूर्ववर्ती तिथि से लागू होगा। इसमें मूल वेतन और महंगाई भत्ता में 14 प्रतिशत वृद्धि की गई है, जिससे कुल वेतन खर्च में 12.41 प्रतिशत वृद्धि होगी। इसके अलावा जो एक अप्रैल 2010 के बाद जुड़े कर्मचारियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) में कर्मचारियों का योगदान 10 से बढ़ाकर 14 प्रतिशत किया गया है। परिवार पेंशन में भी 30 प्रतिशत की एक समान वृद्धि की गई है, जो आधिकारिक गजट में प्रकाशन की तिथि से लागू होगी। इन संशोधनों से पीएसजीआईसी पर 8,170.30 करोड़ रुपये का वित्तीय असर पड़ने का अनुमान है।

चौथी औद्योगिक क्रांति के लिए डब्ल्यूईएफ भारत समेत विश्व में खोलेगा पांच नए केंद्र

उभरती प्रौद्योगिकियों के विकास से समाज को अधिकतम लाभ और न्यूनतम जोखिम रखने का उद्देश्य

दावोस, एजेंसी

- आंध्रप्रदेश में खुलेगा नया केंद्र, मुंबई, तेलंगाना में पहले से हैं दो

विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) ने चौथी औद्योगिक क्रांति के लिए पांच नए केंद्र स्थापित करने का फैसला किया है, जिनमें से एक भारत के आंध्र प्रदेश में होगा। इसके साथ ही भारत में ऐसे केंद्रों की संख्या बढ़कर तीन हो जाएगी। इससे पहले मुंबई और तेलंगाना में दो केंद्र पहले से कार्यरत हैं।

चौथी औद्योगिक क्रांति नेटवर्क एक बहु-हितधारक मंच है, जिसका उद्देश्य सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों को साथ लाकर यह सुनिश्चित करना है कि उभरती प्रौद्योगिकियों के विकास एवं उपयोग से समाज को अधिकतम लाभ हो और जोखिमों को न्यूनतम रखा जा सके। वर्ष 2017 में डब्ल्यूईएफ द्वारा शुरू किया गया यह नेटवर्क यूरोप, पश्चिम एशिया, एशिया और अमेरिका में स्थित स्वतंत्र राष्ट्रीय एवं विषयगत केंद्रों को एक साथ जोड़ता है, जो उन्नत और तेजी से विकसित हो रही प्रौद्योगिकियों के जिम्मेदार विकास और उपयोग को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। चौथी औद्योगिक क्रांति के लिए नए केंद्र आंध्र प्रदेश के अलावा फ्रांस, ब्रिटेन और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में स्थापित किए जाएंगे।

डब्ल्यूईएफ ने कहा कि हरेक केंद्र सरकारों और उद्योग जगत के साथ मिलकर व्यावहारिक नीतिगत ढांचे और पायलट परियोजनाओं पर काम करेगा, क्षेत्रीय प्राथमिकताओं का ध्यान रखेगा और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देगा। इन केंद्रों के प्रमुख फोकस क्षेत्रों में एआई नवाचार, ऊर्जा बदलाव, साइबर सुरक्षा और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियां शामिल होंगी। ये केंद्र क्षेत्रीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए वैश्विक संवाद और सहयोग को भी आगे बढ़ाएंगे।

डब्ल्यूईएफ के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी बोर्गे ब्रेंडे ने कहा, "चौथी औद्योगिक क्रांति के लिए पांच नए केंद्रों की स्थापना सरकारों, उद्योगों और विशेषज्ञों को साझा तकनीकी चुनौतियों पर एक साथ लाने के महत्व को दर्शाती है।" ब्रेंडे ने कहा कि स्थानीय और क्षेत्रीय अनुभवों के योगदान से साझेदार देश उभरती प्रौद्योगिकियों के जिम्मेदार विकास के लिए वैश्विक प्रयासों को मजबूत करेंगे।

राष्ट्रीय

केरल निर्णायक राजनीतिक बदलाव की दहलीज पर

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा- भाजपा नेतृत्व संभालने के लिए तैयार, कांग्रेस पर लगाया सांप्रदायिकता का आरोप

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि केरल एक निर्णायक राजनीतिक बदलाव की दहलीज पर खड़ा है। उन्होंने केरल के तिरुवनंतपुरम के पुथरीकंडम मैदान में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) राज्य में शासन का एक वैकल्पिक मॉडल पेश करने के लिए तैयार है और जनता का मौजूदा मिजाज स्पष्ट रूप से दशकों की विभाजनकारी राजनीति से आगे बढ़ने की इच्छा को दर्शाता है।

मोदी ने तिरुवनंतपुरम नगर निगम प्रधानमंत्री ने कहा- भाजपा नेतृत्व संभालने के लिए तैयार, कांग्रेस पर लगाया सांप्रदायिकता का आरोप चुनावों में भाजपा की हालिया जीत का जिक्र करते हुए इसे ऐतिहासिक और अभूतपूर्व बताया। उन्होंने कहा कि इसने केरल में पार्टी के विस्तार और विकास की नींव रखी है। उन्होंने कहा, जो सालों से नहीं बदला, वह अब बदलेगा। जो गुजरात की एक नगर पालिका से शुरू हुआ था, वह अब तिरुवनंतपुरम में जड़ें जमाएगा और पूरे केरल में फैलेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि राज्य की राजधानी का चुनावी फैसला सत्तारूढ़ वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) और कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) दोनों के प्रति जनता के बढ़ते मोहभंग को दर्शाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के नेतृत्व वाले इन दो मोर्चों ने दशकों तक ''फिक्स्ड मैच'' खेला है, जिसने विकास को रोक दिया और युवाओं से अवसर छीन लिए। उन्होंने कहा, केरल अब भ्रष्टाचार, कुशासन और राजनीतिक अवसरवाद से मुक्ति चाहता है।

मोदी ने आंशिक रूप से मलयालम में बोलते हुए आश्वासन दिया कि भाजपा के नेतृत्व में तिरुवनंतपुरम में तेज विकास और उत्तरदायी शासन देखने को मिलेगा। उन्होंने गुजरात के साथ तुलना करते हुए याद किया कि कैसे भाजपा को वहां बार-बार हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन जनता का विश्वास जीतकर वह एक प्रमुख राजनीतिक ताकत बनकर उभरी। उन्होंने कहा कि यदि पार्टी कार्यकर्ता प्रतिबद्ध रहें तो केरल में भी ऐसा ही बदलाव संभव है। मोदी ने कांग्रेस पर तीखा हमला करते हुए दावा किया कि पार्टी ने अपना विकास का एजेंडा छोड़ दिया है और विभाजनकारी राजनीति को बढ़ावा दे रही है।

उन्होंने आरोप लगाया कि केरल को सांप्रदायिक प्रयोगों की प्रयोगशाला बना दिया गया है। राज्य को अपनी वास्तविक क्षमता का एहसास करने के लिए ऐसे प्रभावों से मुक्त होना चाहिए। प्रधानमंत्री ने एलडीएफ को भी निशाने पर लिया और उन पर केरल के सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान न करने तथा भ्रष्टाचार के माध्यम से जनता के विश्वास के साथ विश्वासघात करने का आरोप लगाया। उन्होंने सहकारी बैंक घोटालों सहित कथित वित्तीय अनियमितताओं का हवाला देते हुए कहा कि आम नागरिकों की बचत को जोखिम में डाल दिया गया है। उन्होंने कहा, भाजपा को एक मौका दें। जनता से लूटा गया एक-एक रुपया वसूल किया जाएगा।

तिरुवनंतपुरम में प्रधानमंत्री का स्वागत करते भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व अन्य नेता।

विजयन ने ओडिशा में पादरी पर हमला याद दिलाया

तिरुवनंतपुरम। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से माकपा और एलडीएफ सरकार की आलोचना पर पलटवार करते हुए मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में भाजपा शासित ओडिशा के ढेंकनाल जिले में धर्मांतरण के आरोपों को लेकर एक पादरी पर हुए क्रूर हमले हमले का जिक्र किया। मुख्यमंत्री ने कहा, ओडिशा में पादरी पर क्रूर हमला कोई छोटी घटना नहीं है, यह संघ परिवार द्वारा सुनियोजित रूप से फैलाई जा रही हिंसा और नफरत को दर्शाती है। किसी मनुष्य को गोबर खिलाना घोर अमानवीय कृत्य है, जिसे भाजपा के नेतृत्व वाली सरकारों की चुप्पी से बढ़ावा मिल रहा है। विजयन ने यह भी कहा कि जब देश में धर्म प्रचारक ग्राहम स्टेन्स और उनके दो छोटे बेटों की जघन्य हत्या के 27 वर्ष पूरे हो रहे हैं। सिर्फ ओडिशा में ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में राष्ट्र के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने पर लगातार हमले हो रहे हैं।

वसंत पंचमी पर धार के विवादित परिसर में अखंड पूजा, नमाज भी अदा की गई

धार के विवादित परिसर में वसंत पंचमी पर मां सरस्वती की पूजा करने में भारी संख्या में लोग पहुंचे।

धार, एजेंसी

- अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए तैनात रहे पुलिस व अर्धसैनिक बलों के 8000 जवान

वसंत पंचमी पर शुक्रवार को धार के भोजशाला-कमाल मौला मस्जिद परिसर में हिंदू समुदाय के हजारों लोगों ने वाग्देवी (देवी सरस्वती) की पूजा-अर्चना की। विवादित परिसर के एक अलग स्थान पर मुस्लिम समाज के लोगों ने नमाज भी अदा की। हिंदू त्योहार और जुमे की नमाज एक ही दिन पड़ने के कारण इस ऐतिहासिक शहर में किसी भी तरह की अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए करीब 8,000 की तादाद में पुलिस और अर्धसैनिक बलों की तैनाती की गई थी।

सूर्योदय के साथ ही विवादित परिसर में हिंदू श्रद्धालुओं के जुटने का सिलसिला शुरू हो गया था। स्थानीय संगठन ''भोज उत्सव समिति'' के सदस्यों ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच वाग्देवी (सरस्वती) का चित्र स्थापित करके पूजा शुरू की। इस दौरान हवन कुंड में आहुति डाल कर सूर्योदय से सूर्यास्त तक अखंड पूजा की शुरुआत की गई।

पूजा स्थल को फूलों की मालाओं और भगवा झंडों से सजाया गया था। विवादित परिसर के चप्पे-चप्पे पर सुरक्षा कर्मी तैनात थे। दिन चढ़ने के साथ ही विवादित परिसर में हिंदू पक्ष के श्रद्धालुओं की तादाद बढ़नी शुरू हो गई और दोपहर 12 बजे हजारों श्रद्धालु भगवा झंडे थामे शोभायात्रा के रूप में विवादित परिसर पहुंचे। इनमें बड़ी तादाद में महिलाएं भी शामिल थीं।

इस बीच, धार के जिलाधिकारी कार्यालय की ओर से जारी बयान में कहा गया, उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुपालन में मुस्लिम समाज की ओर से नियत किए गए स्थान पर दोपहर एक बजे से तीन बजे के मध्य निर्विघ्न नमाज अदा की गई। हालांकि, इस बयान में नमाज में शामिल लोगों की संख्या और नमाज अदा करने के स्थान के बारे में कोई खुलासा नहीं किया गया। मुस्लिम समाज द्वारा दोपहर 1 से 3 बजे के बीच तय व्यवस्था के तहत नमाज अदा की गई। पुलिस ने विशेष वाहनों के जरिए नमाजियों को सुरक्षित रूप से परिसर तक पहुंचाया और नमाज के बाद वापस भेजा।

इस वर्ष वसंत पंचमी शुक्रवार को पड़ने के कारण दोनों समुदायों ने विवादित परिसर में पूजा-अर्चना और नमाज के लिए दावा किया था। स्थिति को देखते हुए कोर्ट ने बृहस्पतिवार को हस्तक्षेप किया और समय-विभाजन का स्पष्ट फॉर्मूला तय किया। भोजशाला को हिंदू समुदाय वाग्देवी (देवी सरस्वती) का मंदिर मानता है, जबकि मुस्लिम पक्ष 11वीं सदी के इस स्मारक को कमाल मौला मस्जिद बताता है। यह परिसर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा संरक्षित है।

बीएमसी चुनाव में दरवाजों के नीचे से डाले गए थे पैसों से भरे लिफाफे: उद्धव

मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने दावा किया कि मुंबई नगर निगम (बीएमसी) चुनाव से पहले मतदाताओं को पैसे बांटे गए। उन्होंने शिवसेना संस्थापक बाल ठाकरे की जन्म शताब्दी के मौके पर एक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मुंबई में पहली बार पैसे का इस्तेमाल किया गया।

उन्होंने इस संबंध में कई जगहों से शिकायतें मिलने का जिक्र किया। उन्होंने विजयी महायुति गठबंधन पर परोक्ष रूप से हमला करते हुए आरोप लगाया, अगर दरवाजा बंद था तो उन्होंने दरवाजे के नीचे की जगह से लिफाफे फेंके, लिफाफों में नकदी भरी हुई थी। उन्होंने पूछा, क्या आप महाराष्ट्र बेच रहे हैं। आप वोट खरीद सकते हैं लेकिन आप दिल कैसे खरीदेंगे, वे धड़कते दिल आज भी मेरे पास हैं। शिवसेना प्रमुख की शिवसेना के साथ हैं। आपने आज फिर यह दिखाया है।

अर्थव्यवस्था पर न पड़ने दें अपनी कमजोरी का असर प्रधानमंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी

- राहुल गांधी ने कपड़ा उद्योग को हो रहे नुकसान पर साधा निशाना

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने अमेरिकी टैरिफ के कारण भारतीय कपड़ा उद्योग को हो रहे नुकसान को लेकर शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा और कहा कि उन्हें अपनी कमजोरी का असर अर्थव्यवस्था पर और नहीं पड़ने देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका के साथ एक ऐसा व्यापार समझौता होना चाहिए जिसमें भारतीय व्यवसाय और मजदूरों को तवज्जो मिले।

राहुल गांधी ने हाल ही में गुरुग्राम के निकट मानेसर में एक कपड़ा फैक्ट्री का दौरा किया और इसका वीडियो उन्होंने शुक्रवार को अपने यूट्यूब चैनल पर अपलोड किया। राहुल ने कहा, मोदी जी, आपकी जवाबदेही बनती है, कृपया इस मामले पर ध्यान दीजिए। उनका कहना था, भारत का कपड़ा उद्योग हमारी अर्थव्यवस्था में रोजगार देने के मामले में दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है। हमारे कपड़े दुनिया भर में पसंद किए जाते हैं और हमारे दर्जियों की कारीगरी का सच में कोई मुकाबला नहीं है। कांग्रेस नेता ने कहा कि अमेरिकी टैरिफ के कारण कपड़ा उद्योग बहुत अनिश्चितता का सामना कर रहा है।

राहुल गांधी ने दावा किया, अमेरिका ने 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया है, यूरोप में कीमतें गिर रही हैं, बांग्लादेश एवं चीन से कड़ा मुकाबला है, हमारे कपड़ा उद्योग और कपड़ा निर्यातक हर तरफ से पिस रहे हैं। इसका सीधा असर नौकरियों पर पड़ रहा है, इकाइयां बंद हो रही हैं, खरीद घट रही है और पूरे क्षेत्र में खलबली है।

थिरुप्परनकुंद्रम मंदिर का नियंत्रण एएसआई को क्यों न दिया जाए: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को केंद्र, तमिलनाडु सरकार और अन्य से उस याचिका पर जवाब मांगा, जिसमें एएसआई को थिरुप्परनकुंद्रम मंदिर का नियंत्रण लेने और 'दीपथून' (पत्थर का स्तंभ) के ऊपर रोजाना दीया जलाने के बारे में निर्देश देने का अनुरोध किया गया था।

न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और न्यायमूर्ति विपुल एम पंचोली की पीठ ने हिंदू धर्म परिषद की याचिका पर भारत सरकार, तमिलनाडु सरकार, एएसआई और अन्य को नोटिस जारी किए। शीर्ष कोर्ट को बताया गया कि मद्रास हाईकोर्ट ने छह जनवरी को दीया जलाने के एकल न्यायाधीश के आदेश को बरकरार रखा था। शीर्ष अदालत हिंदू धर्म परिषद की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें एएसआई को मदुरै में थिरुप्परनकुंद्रम स्थित भगवान मुरुगन सुब्रमण्यम मंदिर का नियंत्रण लेने और 'दीपथून' के ऊपर हर समय एक दीया जलाने के निर्देश देने की मांग की गई थी।

जापान की पीएम साने ताकाइची ने भंग किया संसद का निचला सदन

तोक्यो, एजेंसी

• आठ फरवरी को देश में मध्यावधि चुनाव कराने का रास्ता साफ

जापान की प्रधानमंत्री साने ताकाइची ने शुक्रवार को संसद के निचले सदन को भंग कर दिया जिससे आठ फरवरी को मध्यावधि चुनाव कराए जाने का रास्ता साफ हो गया। यह कदम मात्र तीन महीने पहले प्रधानमंत्री का पद संभालने वाली ताकाइची का, अपनी लोकप्रियता का लाभ उठाने का प्रयास है ताकि सत्तारूढ़ दल हाल के वर्षों में हुए भारी नुकसान के बाद फिर से अपनी स्थिति मजबूत कर सके।

हालांकि उनके इस कदम से उस बजट पर मतदान टल जाएगा जिसका मकसद जूझती अर्थव्यवस्था को गति देना और महंगाई से निपटना है।

ताकाइची को अक्टूबर में जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री चुना गया था। ताकाइची को प्रधानमंत्री बने मात्र तीन महीने हुए हैं लेकिन उन्हें करीब 70 प्रतिशत की मजबूत स्वीकृति रेटिंग मिली है। ताकाइची की लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी को अब भी कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि वह भ्रष्टाचार से जुड़े कई घोटालों और यूनिफिकेशन चर्च से पार्टी के पुराने संबंधों को लेकर विवादों से जूझ रही हैं। लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि नया विपक्षी दल सेंट्रिस्ट रिफॉर्म अलायंस मध्यमार्गी मतदाताओं को आकर्षित कर पाएगा या नहीं जबकि विपक्षी दल अब भी बिखरे हुए हैं। ताकाइची की ताइवान समर्थक टिप्पणियों के बाद चीन के साथ तनाव बढ़ रहा है और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चाहते हैं कि ताकाइची हथियारों पर अधिक खर्च करें। वाशिंगटन और बीजिंग इस क्षेत्र में सैन्य प्रभुत्व हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं।

उत्कृष्ट सिनेमा का महाकुंभ

ऑस्कर अवार्ड

जादुई सुनहरी प्रतिमा 'ऑस्कर', जिसे आधिकारिक तौर पर एकेडमी अवार्ड्स कहा जाता है, दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित सिनेमा सम्मान है। यह न केवल एक कलाकार की प्रतिभा का पैमाना है, बल्कि वैश्विक स्तर पर सिनेमाई उत्कृष्टता का सर्वोच्च शिखर है। ऑस्कर की शुरुआत 16 मई, 1929 को हुई थी। इसकी स्थापना एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज द्वारा की गई थी। इस संस्था की नींव एमजीएम स्टूडियो के मालिक लुई बी. मेयर ने रखी थी। पहला समारोह हॉलीवुड के रूजवेल्ट होटल में एक निजी रात्रिभोज के दौरान आयोजित किया गया था, जिसमें केवल 270 लोग शामिल थे। भारत को अब तक विभिन्न श्रेणियों में कुल 10 ऑस्कर मिले हैं जो व्यक्तिगत और सामूहिक पुरस्कार हैं।

10 हजार सदस्य चुनते हैं विजेता

• ऑस्कर विजेताओं का चयन कोई छोटी जूरी नहीं, बल्कि 'एकेडमी' के लगभग 10,000 से अधिक सदस्य करते हैं। ये सदस्य फिल्म उद्योग के पेशेवर (अभिनेता, निर्देशक, निर्माता, तकनीशियन) होते हैं। इसके लिए एक गुप्त मतदान कराया जाता है। मतदान एक गुप्त प्रक्रिया है जिसे प्राइस वाटर हाउस कूपर्स (पीडब्ल्यूसी) द्वारा ऑडिट किया जाता है। जिससे चयन को लेकर मतभेद की स्थिति न उत्पन्न हो। विजेताओं को लगभग एक प्रतिमा मिलती है। दिलचस्प तथ्य यह है कि ऑस्कर विजेता मिलने वाली ट्रॉफी को बेच नहीं सकते हैं। अगर वे इसे बेचना चाहें, तो उन्हें इसे पहले एकेडमी को मात्र 1 डॉलर में वापस करने का प्रस्ताव देना होता है।

नामांकन श्रेणियां

• वर्तमान में ऑस्कर मुख्य रूप से 24 श्रेणियों में दिया जाता है। इनमें सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता, सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री, सहायक भूमिकाएं, पटकथा (ओरिजिनल और एडाप्टेड), एडिटिंग, सिनेमैटोग्राफी, कॉस्ट्यूम डिजाइन, और अंतर्राष्ट्रीय फीचर फिल्म जैसी श्रेणियां शामिल हैं।

नामांकन व जीत के रिकॉर्ड

• ऑस्कर इतिहास में तीन फिल्मों के नाम सर्वाधिक 14 नामांकनों का संयुक्त रिकॉर्ड रहा है लेकिन 2026 में यह रिकॉर्ड टूट गया, फिल्म सिनर्स ने 16 श्रेणियों में नामांकन हासिल कर इतिहास बनाया है। पहले की तीन फिल्मों में ऑल अबाउट ईव (1950), टाइटैनिक (1997), ला ला लैंड (2016) में निर्मित फिल्म शामिल हैं।

• सबसे ज्यादा 11 ऑस्कर जीतने का रिकॉर्ड इन तीन फिल्मों के पास है जिनमें बेन-हर (1959), टाइटैनिक (1997), द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स: द रिटर्न ऑफ द किंग (2003) शामिल है।

भारत को अब तक 10

• भारत का ऑस्कर का सफर 1983 में शुरू हुआ। अब तक 10 ऑस्कर मिले हैं। वर्ष 1983 में भानु अथैया को फिल्म गांधी में बेस्ट कास्ट्यूम डिजाइन के लिए, 1992 में सत्यजीत रे को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2009 में रेसुल पुकुट्टी को स्लमडॉग मिलेनियर में बेस्ट साउंड मिक्सिंग, एआर रहमान को संगीत, गुलजार को बेस्ट सांग के लिए ऑस्कर मिला। 2023 एमएम. कीरावनी/चंद्रबोस को नाटू नाट के लिए बेस्ट ओरिजनल सांग और कार्तिकी गोंजाल्विस को बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट फिल्म के लिए मिला।

समारोह का स्थान

• वर्तमान में ऑस्कर समारोह लॉस एंजिल्स के डॉल्बी थिएटर में आयोजित किया जाता है। यह आमतौर पर हर साल फरवरी के अंत या मार्च की शुरुआत में होता है। 2026 में भी यह आयोजन इसी भव्यता के साथ संपन्न होने की उम्मीद है।

वर्ल्ड ब्रीफ

सिंगापुर एयर शो में भाग लेगी सारंग टीम

सिंगापुर। भारतीय वायु सेना की सारंग हेलीकॉप्टर प्रदर्शन टीम अगले महीने की शुरुआत में कई प्रसिद्ध सैन्य एरोबेटिक टीम के साथ कदम से कदम मिलाते हुए सिंगापुर एयरशो 2026 में उड़ान प्रदर्शन करेगी। एयरशो के आयोजकों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। सारंग टीम ने एक्स पर लिखा कि सिंगापुर, हम आ गए हैं। सारंग हेलीकॉप्टर प्रदर्शन टीम चांगी प्रदर्शनी केंद्र में आयोजित सिंगापुर एयरशो 2026 में सांसें रोक देने वाले करतब दिखाने के लिए तैयार है। इसे देखने के लिए तैयार हो जाइए। यह शानदार होने वाला है!

चिली में आग बुझा रहे कर्मियों पर हमले

फ्लोरिडा। चिली में इस सप्ताह लगी भीषण आग बुझाने का प्रयास कर रहे दमकलकर्मियों और सुरक्षा बलों को हमले के प्रयासों से लेकर ड्रोन के टकराने के जोखिम जैसे खतरों का सामना करना पड़ रहा है। इस आग से कम से कम 21 लोगों की मौत हो गई और जंगल का बड़ा हिस्सा तबाह हो गया है। गुरुवार को नेशनल फॉरेस्ट्री कॉर्पोरेशन ने एक नई रिपोर्ट जारी की है। जिसमें देश के हालिया इतिहास की सबसे भीषण त्रासदियों में से एक इस आग ने 45,700 हेक्टेयर (176 वर्ग मील) वन क्षेत्र और कुछ कस्बों को राख में तब्दील कर दिया है। जिसमें 8,500 हेक्टेयर (33 वर्ग मील) से अधिक क्षेत्र नष्ट हो गया था और 131 लोगों की जान चली गई थी।

इंडोनेशिया में विमान हादसा, 10 शव बरामद

जकार्ता। इंडोनेशिया में पिछले सप्ताह दक्षिण सुलावेसी प्रांत में लापता हुए निगरानी विमान में सवार सभी 10 लोगों के शव पहाड़ी क्षेत्र से बरामद कर लिए गए हैं। राष्ट्रीय खोज एवं बचाव एजेंसी ने शुक्रवार को बताया कि इंडोनेशिया एयर ट्रांसपोर्ट (आईएटी) द्वारा संचालित टर्बोप्रॉप एटीआर 42-500 विमान का शनिवार को दक्षिण सुलावेसी के मारोस क्षेत्र के पास हवाई यातायात नियंत्रण से संपर्क टूट गया था। विमान में चालक दल के सात सदस्य और तीन यात्री सवार थे।

ऑस्ट्रेलिया में तीन के हत्यारे की तलाश जारी

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स की पुलिस घरेलू हिंसा से जुड़ी गोलीबारी में तीन लोगों की हत्या करने वाले आरोपी की तलाश कर रही है। गुरुवार की शाम करीब 4.20 बजे हुई गोलीबारी के बाद पुलिस 37 वर्षीय संदिग्ध जूलियन इनग्राम को तलाश कर रही है। तलाश के लिए हेलीकॉप्टरों को भी तैनात किया गया है।

ट्रंप ने बोर्ड ऑफ पीस से कनाडा के पीएम कार्नी का निमंत्रण वापस लिया

नहीं बताया कोई स्पष्ट कारण, कनाडा-अमेरिका के रिश्तों में तल्खी

वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि प्रस्तावित 'बोर्ड ऑफ पीस' (शांति बोर्ड) ने कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी को दिया गया निमंत्रण वापस ले लिया है। ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'ट्रुथ सोशल' पर एक पोस्ट से इस निर्णय की जानकारी दी। प्रधानमंत्री कार्नी को संबोधित एक संक्षिप्त पत्र के रूप में लिखे संदेश में ट्रंप ने बिना कोई विशेष कारण बताए स्पष्ट किया कि कनाडा के इस निकाय में शामिल होने के निमंत्रण को रद्द माना जाए।

यह घटनाक्रम दोनों देशों के बीच गहराते कूटनीतिक मतभेदों की ओर इशारा कर रहा है। यह कदम दोनों नेताओं के बीच इस सप्ताह हुई सार्वजनिक बयानबाजी और तीखी नोकझोंक के बाद उठाया गया है। इससे पहले गुरुवार को कार्नी ने ट्रंप के उस विवादास्पद दावे को सिरे से खारिज कर दिया था, जिसमें कहा गया था कि कनाडा अपने अस्तित्व के लिए अमेरिका पर निर्भर है। स्विट्जरलैंड के दावोस में आयोजित विश्व आर्थिक मंच से लौटने के बाद कार्नी ने क्यूबेक सिटी में कहा था कि कनाडा और अमेरिका के बीच आर्थिक और सुरक्षा के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय साझेदारी है, लेकिन कनाडा अमेरिका के कारण जीवित नहीं है। उन्होंने जोर देकर कहा कि कनाडा अपनी विशिष्ट पहचान और नागरिकों के कारण फल-फूल रहा है। दावोस शिखर सम्मेलन के दौरान कार्नी ने वैश्विक व्यवस्था में आने वाली 'दरार' के प्रति आगाह किया था और प्रमुख शक्तियों द्वारा टैरिफ (शुल्क) तथा आर्थिक दबाव के उपयोग की खुलकर आलोचना की थी। उन्होंने ग्रीनलैंड और डेनमार्क के प्रति भी अपना समर्थन व्यक्त किया था, जिसे अमेरिकी नीतियों के विरोध के रूप में देखा गया। इसके विपरीत, ट्रंप ने उसी मंच से बोलते हुए दावा किया था कि कनाडा अमेरिका की वजह से ही जीवित है। दावोस में ट्रंप और कनाडाई प्रधानमंत्री के बीच कोई द्विपक्षीय मुलाकात भी नहीं हुई थी, जिससे तनाव की स्थिति पहले ही स्पष्ट हो गई थी।

अमेरिका की डब्ल्यूएचओ से हटने की प्रक्रिया पूरी

न्यूयॉर्क। अमेरिका ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) से हटने की प्रक्रिया पूरी कर ली है। संघीय अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। यह घटनाक्रम अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के वैश्विक स्वास्थ्य निकाय के प्रति वाशिंगटन की 78 साल पूरी प्रतिबद्धता खत्म किए जाने का नोटिस देने के लगभग एक साल बाद सामने आया है। हालांकि, इस सिलसिले में कुछ सवाल अभी भी अनसुलझे हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, अमेरिका को वैश्विक स्वास्थ्य निकाय को 13 करोड़ अमेरिकी डॉलर देने हैं। ट्रंप प्रशासन ने माना है कि कुछ मुद्दों को अभी नहीं सुलझाया जा सका है।

ट्रंप की इच्छा, कनाडा अमेरिका का 51 वां राज्य बन जाए

व्हाइट हाउस में दोबारा वापसी के बाद से ट्रंप ने कनाडा के साथ व्यापारिक और राजनीतिक मोर्चे पर कड़ा रुख अपना रखा है। कनाडा पर व्यापक व्यापारिक शुल्क लगा दिए हैं और बार-बार यह सुझाव देकर विवाद पैदा किया है कि कनाडा को अमेरिका का 51वां राज्य बन जाना चाहिए। निमंत्रण वापसी के इस ताजा फैसले के बाद दोनों पड़ोसी देशों के बीच व्यापारिक और राजनीतिक संबंधों में और अधिक कड़वाहट आने की संभावना जताई जा रही है।

नेपाल में पूर्व पीएम भट्टराई नहीं लड़ेंगे आम चुनाव

काठमांडू। नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री बाबूराम भट्टराई ने देश में मार्च में प्रस्तावित आम चुनावों के लिए अपनी उम्मीदवारी शुक्रवार को वापस ले ली। उन्होंने कहा कि वह नेपाली युवाओं की भावनाओं का सम्मान करते हुए यह कदम उठा रहे हैं। भट्टाराई (71) ने गंडकी प्रांत के गोरखा-2 निर्वाचन क्षेत्र से प्रगतिशील लोकतांत्रिक पार्टी के उम्मीदवार के रूप में नामांकन दाखिल किया था। उन्होंने सोशल मीडिया पर साझा संदेश में अपनी उम्मीदवारी वापस लेने की घोषणा की। भट्टराई ने कहा कि युवा पीढ़ी और गोरखा जिले के मतदाताओं की भावनाओं का सम्मान करते हुए यह फैसला लिया है।

बच गई फ्रांस में लेकोर्नू सरकार

पेरिस। फ्रांस की सरकार के खिलाफ लाए गए दो अविश्वास प्रस्ताव शुक्रवार को गिर गए जिससे प्रधानमंत्री सेबस्टियन लेकोर्नू की सरकार पर मंडरा रहा संकट फिलहाल टल गया है। अविश्वास प्रस्ताव के गिरने से वर्ष 2026 के लिए पूर्ण राज्य बजट को अपनाने की दिशा में एक बड़ी बाधा दूर हो गई है। अविश्वास प्रस्ताव को 269 सांसदों का समर्थन मिला।

अमेरिका, यूक्रेन और रूस में त्रिपक्षीय वार्ता

अबू धाबी, एजेंसी

• यूक्रेन-रूस के बीच जंग समाप्ति को महत्वपूर्ण कूटनीतिक कदम

रूस के यूक्रेन पर 2022 में शुरू किए गए हमले के बाद पहली बार अमेरिका, यूक्रेन और रूस के वार्ताकार शुक्रवार को संयुक्त अरब अमीरात में एक साथ मेज पर बैठेंगे। यह तीनों देशों के बीच होने वाली पहली ज्ञात त्रिपक्षीय बैठक है, जिसे युद्ध समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक कदम माना जा रहा है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन के सहायक यूरी उशाकोव ने पुष्टि की है कि रूस सुरक्षा मुद्दों पर त्रिपक्षीय कार्य समूह की पहली बैठक के लिए अबू धाबी में यूक्रेन और अमेरिका के प्रतिनिधियों के साथ शामिल होगा।

इससे पहले यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने भी इस बैठक के आयोजन की पुष्टि की थी। यह ऐतिहासिक वार्ता राष्ट्रपति ट्रम्प के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ और उनके दामाद जेरेड कुशनर की रूसी राष्ट्रपति के साथ हुई गहन मुलाकात के बाद आयोजित की जा रही है। गुरुवार देर रात पुतिन के साथ इन अमेरिकी प्रतिनिधियों की बैठक तीन घंटे से अधिक समय तक चली थी। रूस ने इस चर्चा को अत्यंत ठोस, रचनात्मक और गोपनीय बताया है। हालांकि, रूसी अधिकारियों ने अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया है कि अबू धाबी में होने वाली त्रिपक्षीय वार्ता किस समय शुरू होगी, लेकिन इसे लेकर वैश्विक स्तर पर उम्मीदें बढ़ गई हैं। सकारात्मक संकेतों के बावजूद रूस ने कड़ा रुख अपनाते हुए कहा है कि क्षेत्रीय मुद्दों को सुलझाए बिना किसी भी दीर्घकालिक समाधान की उम्मीद करना जल्दबाजी होगी।

पुतिन ने ट्रंप के दूतों से की लंबी बातचीत

मॉस्को। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन मुद्दे के समाधान को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूतों से चर्चा की। रातभर चली वार्ता के दौरान क्रेमलिन ने इस बात पर जोर दिया कि शांति समझौते तक पहुंचने के लिए क्षेत्रीय विवाद का समाधान जरूरी है। यह बैठक ऐसे समय में हुई जब इससे कुछ घंटे पहले यूक्रेन के राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की ने अपने यूरोपीय सहयोगियों की तीखी आलोचना की थी। ज़ेलेंस्की ने कहा था कि रूस के लगभग चार वर्ष पहले शुरू किए गए आक्रमण और उसकी लगातार जारी आक्रामकता के प्रति यूरोप की प्रतिक्रिया धीमी, बिखरी हुई और अपर्याप्त रही है।

गोवा नाइट क्लब अग्निकांड केस ईडी ने की तीन राज्यों में छापेमारी

पणजी/नई दिल्ली, एजेंसी

• लूथरा बंधुओं के कार्यालय और घर सहित नौ परिसरें में तलाशी

गोवा के नाइटक्लब बर्च बाय रोमियो लेन के प्रवर्तकों के खिलाफ धन शोधन का मामला दर्ज करने के बाद प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शुक्रवार को गोवा, हरियाणा और दिल्ली में छापे मारे। इसी नाइटक्लब में पिछले साल दिसंबर में आग लगने से 25 लोगों की मौत हो गई थी।

अधिकारियों ने बताया कि कम से कम नौ परिसरों पर तलाशी ली जा रही है जिनमें राजधानी दिल्ली के किंग्सवे कैंप में स्थित सौरभ और गौरव लूथरा बंधुओं के कार्यालय और आवास, हरियाणा के गुरुग्राम में तत्त्वम विला में सह-मालिक अजय गुप्ता का ठिकाना, इसके अलावा गोवा में अरपोरा-नागोआ के पूर्व सरपंच रोशन रेडकर और पंचायत सचिव रघुवीर बागकर के परिसर शामिल हैं। जांचकर्ताओं ने कुछ परिसरों से कुछ दस्तावेज बरामद किए हैं। ईडी के अनुसार, रेडकर और बागकर पर क्लब के लिए अवैध व्यापार लाइसेंस और एनओसी जारी करने एवं सुविधा प्रदान करने का आरोप है। एजेंसी के अधिकारी सुरिंदर कुमार खोसला के परिसर में भी मौजूद हैं ताकि उस धन शोधन के पहलू की जांच की जा सके जो खजान भूमि (विशिष्ट पारंपरिक कृषि भूमि जिसे आर्द्र दलदली भूमि को सुखाकर बनाया जाता है) के अवैध रूपांतरण से उत्पन्न हुआ है जिस पर बर्च बाय रोमियो लेन क्लब स्थित है। खोसला एक ब्रिटिश नागरिक है और माना जाता है कि वह क्लब के मालिकों में से एक है।

हादसे में 25 लोगों की हुई थी मौत, 50 जख्मी

गोवा के अरपोरा गांव में स्थित बर्च बाय रोमियो लेन नामक नाइट क्लब में छह दिसंबर 2025 को आग लग गई थी। इस घटना में 25 लोगों की मौत हुई थी और लगभग 50 लोग भी घायल हो गए। घटना के कुछ घंटों बाद ही दोनों भाई देश छोड़कर थाईलैंड भाग गए थे। उन्हें करीब दस दिन बाद 17 दिसंबर 2025 को भारत वापस भेज दिया गया और वे गोवा पुलिस की हिरासत में है।

विमानन क्षेत्र में सहयोग बढ़ाएंगे भारत और ईयू

दावोस। भारत और यूरोपीय संघ ने विमानन के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए नियामकों के बीच सहयोग बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई है तथा ढांचागत विकास के लिए एक कार्ययोजना तैयार की है। नागरिक उड्डयन मंत्री के. राम मोहन नायडू ने गुरुवार को दावोस में आयोजित विश्व आर्थिक मंच के वैश्विक आर्थिक शिखर सम्मेलन के दौरान यूरोपीय संघ के परिवहन आयुक्त अपोस्टोलोस त्जित्जिकोस्टास से मुलाकात की। दोनों के बीच नवाचार और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन प्रणालियों पर गहन चर्चा हुई। बैठक में हरित विमान ईंधन जैसे नवाचारों पर विशेष रूप से बात हुई। इसमें पर्यावरण-अनुकूल परिवहन को प्राथमिकता दी गई।

47 लाख के इनामी नौ नक्सलियों का सरेंडर

धमतरी, एजेंसी

• आत्मसमर्पण के साथ भारी संख्या में हथियार भी सौंपे

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में शुक्रवार को 47 लाख रुपये के इनामी नौ नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। रायपुर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक अमरेश मिश्रा ने बताया कि आत्मसमर्पण करने वाले नक्सली ओडिशा के धमतरी-गरियाबंद-नुआपाड़ा संभाग के अंतर्गत आने वाली माओवादी कमेटी की नगरी और सीतानदी एरिया कमेटी तथा मैनपुर लोकल गुरिल्ला स्क्वाड से संबंधित हैं, जिनमें सात महिलाएं शामिल हैं।

आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों में से सीतानदी एरिया कमेटी की सचिव ज्योति उर्फ जैनी (28) और संभागीय समिति सदस्य उषा उर्फ बलम्मा पर आठ-आठ लाख रुपये का इनाम था। छह अन्य नक्सलियों रामदास मरकाम, रोनी उर्फ उमा, निरंजन उर्फ पोडिया, सिंधु उर्फ सोमादी, रीना उर्फ चिरो और अमिला उर्फ सन्नी पर पांच-पांच लाख रुपये का इनाम था, जबकि लक्ष्मी पुनेम पर एक लाख रुपये का इनाम था।

उन्होंने कहा कि बलम्मा तेलंगाना की रहने वाली है, जबकि अन्य नक्सली छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से हैं। पुलिस महानिरीक्षक मिश्रा ने बताया कि पांच नक्सलियों ने आत्मसमर्पण के साथ दो इंसास राइफल, दो एसएलआर, एक कार्बाइन और एक बंदूक अधिकारियों को सौंपी।

श्रीलंका नौसेना ने 7 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया

कोलंबो। श्रीलंका की नौसेना ने अपने जलक्षेत्र में मछली पकड़ने के आरोप में सात भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया है। नौसेना ने कहा कि मछुआरों को गिरफ्तार कर लिया गया है और मंगलवार को उत्तरी जाफना प्रायद्वीप के कोविलन के पास उनकी दो नौकाएं जब्त कर ली गई हैं। गिरफ्तार किए गए लोगों को कानूनी कार्यवाही के लिए जाफना के मायलिड्डी मत्स्य निरीक्षक को सौंप दिया जाएगा। दोनों देशों के मछुआरों को अक्सर अनजाने में एक-दूसरे के जलक्षेत्र में प्रवेश करने के आरोप में गिरफ्तार किया जाता है। मछुआरों का मुद्दा भारत और श्रीलंका के बीच संबंधों में एक विवादास्पद विषय रहा है। श्रीलंकाई नौसेना के कर्मियों ने पाक जलडमरूमध्य में भारतीय मछुआरों पर गोलीबारी भी की है।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति: 24 जनवरी, शनिवार 2026 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- माघ, पक्ष-शुक्ल पक्ष, षष्ठी 25 जनवरी 00.39 तक तत्पश्चात सप्तमी।

आज का पंचांग

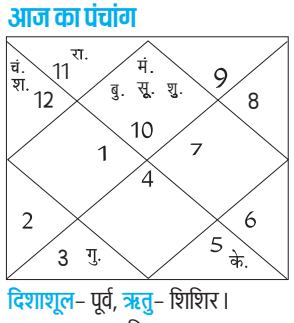

दिशाशूल- पूर्व, **ऋतु**- शिशिर।
चन्द्रबल- वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, मीन।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र-उत्तर भाद्रपद 14.16 तक तत्पश्चात रेवती।

मेष: आज बड़े भाई-बहन को लेकर थोड़े तनाव में आ सकते हैं। धन संबंधी परेशानियों से घिरे रहेंगे। वैवाहिक जीवन में प्रेम भाव बढ़ेगा। आपको गैस और पित्त की समस्या हो सकती है। स्वयं द्वारा बनाए हुए नियमों और सिद्धांतों की स्वत: अवहेलना न करें।

वृष: आज व्यवसाय को लेकर बड़े ऑर्डर मिल सकते हैं। व्यापार में आ रहे विघ्नों पर विजय प्राप्त कर लेंगे। प्रेम संबंधों में परस्पर समर्पण की भावना में वृद्धि होगी। आपको नौकरी में पदोन्नति मिल सकती है। घर के बड़े-बुजुर्ग आपसे अत्यंत प्रसन्न रहेंगे।

मिथुन: आज व्यापार में अपेक्षा से अधिक धन लाभ प्राप्त होगा। आपकी कार्यशैली में सुधार हो सकता है। अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए परिश्रम करेंगे। विदेश यात्रा से धन लाभ मिलेगा। पाचनतंत्र में कुछ परेशानी हो सकती है।

कर्क: आज आपको सहकर्मियों का साथ नहीं मिलेगा। शेयर और जोखिम भरे निवेशों में थोड़ी परेशानी होगी। शारीरिक और मानसिक थकान रहेगी। जीवनसाथी आपके ऊपर नाराज हो सकते हैं। व्यर्थ के प्रपंचों से आपको दूर रहना चाहिए।

सिंह: आज गुप्त विद्याओं के प्रति आपका रूझान बढ़ेगा। बच्चों की सेहत का ध्यान रखें। जिस काम में मन न लग रहा हो उसे बिल्कुल न करें। सामाजिक और व्यवसायिक क्षेत्र में नए विरोधी उभर सकते हैं। प्रेम संबंधों में शंका की भावना न पनपने दें।

कन्या: आज साहस और बुद्धिमत्ता युक्त निर्णय लेने से आपको व्यवसाय में शानदार सफलता मिलेगी। मांगलिक कार्यक्रम में सम्मिलित हो सकते हैं। अविवाहित लोगों को विवाह के अवसर मिलने के योग बन रहे हैं। सरकारी नौकरी में कार्यभार बढ़ेगा।

तुला: आज नया काम शुरु करने के लिए दिन उत्तम है। विद्यार्थी पढ़ाई के साथ-साथ कुछ अतिरिक्त नौकरी करने की योजना बनाएंगे। नि:संतान दंपतियों को शुभ समाचार मिल सकते हैं। विरोधी भी आपकी प्रतिभा का सम्मान करेंगे।

वृश्चिक: आज नया व्यापार शुरू करने में सफलता मिलेगी। अपनी वाणी में संयम भाव रखें। समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अपने व्यवहार में लचीलापन रखें। संपत्ति के मामलों में विजय प्राप्त हो सकती है। कारोबारी उद्देश्य से यात्रा हो सकती है।

धनु: आज अपने काम से काम रखें दूसरों के मामले में हस्तक्षेप न करें। युवा जातक प्रेमीजन से प्रणय निवेदन कर सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में सुधार होने की संभावना है। आप कला में रुचि ले सकते हैं। नए दोस्त बनने के योग बन रहे हैं।

मकर: आज महत्वपूर्ण वस्तुओं को संभालकर रखें। आईटी से जुड़े व्यवसाय से धन लाभ प्राप्त होगा। कुछ लोग आपकी निश्छलता का गलत फायदा उठाने का प्रयास करेंगे। यदि पार्टनरशिप में कोई व्यापार कर रहे हैं, तो उसमें पारदर्शिता अवश्य रखें।

कुंभ: आज व्यायाम और ध्यान अवश्य करें। हर समस्या का व्यवहार कुशलता से समाधान निकाल लेंगे। बच्चों के लिए कुछ उपहार ले सकते हैं। परिवार में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। पुरानी यादें दोबारा ताजा होंगी। आपकी कलात्मक क्षमता का विकास होगा।

मीन: आज आपकी प्रतिभा को सम्मान मिलेगा। कार्यक्षेत्र में कड़ी मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। रात के समय सड़क यात्रा करने से बचें। बिना जांच-पड़ताल के निवेश करने से आर्थिक हानि हो सकती है। अपनी उपलब्धियों का अधिक बखान न करें।

सुडोकू-41

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

		7		2			1	
		9			8			3
		4	9		6			5
2			5	3	7			6
		1				7		
6			1	9	2			4
4			7		1	5		
5			8			9		
	8			5		6		

सुडोकू - 40 का हल

6	9	8	5	4	7	3	2	1
4	2	3	9	6	1	7	8	5
5	1	7	8	2	3	6	4	9
3	4	9	2	7	5	8	1	6
2	5	6	3	1	8	9	7	4
7	8	1	4	9	6	5	3	2
8	7	4	6	5	2	1	9	3
1	6	2	7	3	9	4	5	8
9	3	5	1	8	4	2	6	7

रोहित भाई पावरप्ले में जो शुरुआत देते थे, उससे प्रतिद्वंद्वी टीम पर दबाव होता था। कोच और कप्तान मुझसे यही चाहते थे। यह मेरी शैली के अनुरूप है क्योंकि मुझे आक्रामक खेलने का शौक है।

अभिषेक शर्मा भारतीय बल्लेबाज

स्टेडियम

बरेली, शनिवार, 24 जनवरी 2026

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

एफआईएच महिला विश्व कप क्वालीफायर के पूल बी में भारत

नई दिल्ली। हैदराबाद में होने वाले 2026 एफआईएच महिला हॉकी विश्व कप क्वालीफायर में भारत को चार टीमों वाले पूल बी में रखा गया और मेजबान देश अभियान की शुरूआत 8 मार्च को उरुग्वे के खिलाफ करेगा। भारत इसके बाद नौ मार्च को स्कॉटलैंड और 11 मार्च को वेल्स के खिलाफ पूल मुकाबले खेलेगा। इंग्लैंड, कोरिया, इटली और ऑस्ट्रिया पूल ए में शामिल हैं। सेमीफाइनल मुकाबले 13 मार्च को खेले जाएंगे जबकि तीसरे स्थान का प्ले-ऑफ और फाइनल 14 मार्च को आयोजित होगा। दूसरा क्वालीफाइंग टूर्नामेंट चिली के सैंटियागो में 28 फरवरी से आठ मार्च तक खेला जाएगा जिसमें ऑस्ट्रेलिया, जापान, आयरलैंड, चिली, फ्रांस, कनाडा, मलेशिया और स्विट्जरलैंड की टीम भाग लेंगी।

राइफल ट्रायल्स में माने साक्षी का बेहतर प्रदर्शन

नई दिल्ली। महाराष्ट्र की साक्षी सुनील पडेककर और रेलवे के शाहू तुषार माने ने शुक्रवार को राष्ट्रीय चयन ट्रायल 1 और 2 (ग्रुप ए) में क्रमशः 10 मीटर एयर राइफल महिला और पुरुष स्पर्धाओं के फाइनल और क्वालिफिकेशन राउंड में राष्ट्रीय रिकॉर्ड से बेहतर स्कोर बनाया। साक्षी ने टी2 फाइनल में 254.3 अंक बनाए जबकि शाहू तुषार माने ने क्वालिफिकेशन में 637.1 का स्कोर किया। ये दोनों स्कोर राष्ट्रीय रिकॉर्ड से बेहतर होने के बावजूद आधिकारिक रिकॉर्ड बुक में दर्ज नहीं किए जाएंगे। ओलंपियन अर्जुन बबूता ने पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल टी2 फाइनल में जीत दर्ज की जबकि साक्षी ने महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल टी2 फाइनल अपने नाम किया।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शाहीन पाक टीम में

कराची। पाकिस्तान के चयनकर्ताओं ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू शृंखला के लिए शुक्रवार को तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी को राष्ट्रीय टी20 टीम में शामिल किया। अफरीदी के घुटने की चोट से वापसी और बाबर आजम के बिग बैश लीग से लौटने के अलावा इस महीने की शुरुआत में श्रीलंका के खिलाफ खेलने वाली टीम में कोई बदलाव नहीं किया गया है। अफरीदी को ऑस्ट्रेलिया में बिग बैश लीग के दौरान क्षेत्ररक्षण करते हुए घुटने में चोट लग गई थी और वह लाहौर के हाई परफॉर्मेंस सेंटर में उपचार के लिए घर लौट आए थे।।

भारत ने भूटान को 11-3 से हराया

नोंथाबुरी (थाईलैंड)। भारत ने सैफ फुटसल चैंपियनशिप 2026 में भूटान को 11-3 से हराने के लिए दमदार अटैकिंग प्रदर्शन किया। निखिल माली ने हैट्रिक लगाई, उन्होंने तीनों गोल मैच के आखिरी मिनट में किए। विंसेंट लालतलुआंगजेला और अनमोल अधिकारी ने दो-दो गोल किए। जोनाथन लालरावंगबावला, लालसॉम्पिया और सीन डिसूजा ने एक-एक गोल किया, जबकि भूटान के जिग्मन सेल्टोब दोरजी ने एक आत्मघाती गोल किया। इस बड़ी जीत से भारत चार मैचों में पांच अंकों के साथ स्टैंडिंग में चौथे स्थान पर पहुंच गया है। मालदीव के दिन में पहले नेपाल को 2-1 से हराने के बाद फुटसल टाइगर्स पहले ही टूर्नामेंट में शीर्ष स्थान की दौड़ से बाहर हो गए थे।

भारत ने न्यूजीलैंड को सात विकेट से हराया

दूसरा टी20 : कप्तान सूर्यकुमार ने नाबाद 82 और इशान ने 76 रनों की खेलीं विस्फोटक पारियां

रायपुर, एजेंसी

- भारत ने पांच मैचों की शृंखला में 2-0 की बनाई बढ़त, कीवी कप्तान सैंटनर और रचिन रवींद्र की उपयोगी पारियां हुईं बेकार

कप्तान सूर्यकुमार यादव (नाबाद 82) और इशान किशन (76) की विस्फोटक पारियों के दम पर भारत ने पांच मैचों की शृंखला के दूसरे टी20 में शुक्रवार को न्यूजीलैंड को 28 गेंद शेष रहते सात विकेट से हराया। न्यूजीलैंड को छह विकेट पर 208 रनों पर रोकने के बाद भारत ने 15.2 ओवर में तीन विकेट पर 209 रनों के साथ शृंखला में 2-0 की बढ़त बना ली।

सूर्यकुमार यादव

टी20 विश्व कप से पहले लय हासिल करते हुए सूर्यकुमार ने 23 पारियों से चले आ रहे अर्धशतक के सूखे को खत्म किया। उन्होंने 37 गेंद की नाबाद पारी के दौरान नौ चौके और चार छक्के लगाने के अलावा तीसरे विकेट के लिए इशान के साथ महज 49 गेंद में 122 और शिवम दुबे (नाबाद 36) के साथ चौथे विकेट के लिए 37 गेंद में 81 रन की अटूट की साझेदारी के साथ टीम के आसानी से जीत दिला दी। भारत ने इसके साथ ही टी20 में लक्ष्य का सफलता से सबसे बड़े स्कोर के पीछा करने के अपने रिकॉर्ड की बराबरी की। टीम ने इससे पहले 2023 में विशाखापत्तनम में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भी लक्ष्य का पीछा करते हुए 209 रन बनाये थे। इशान ने 32 गेंद की पारी में 11 चौके और चार छक्के लगाए जबकि दुबे ने 18 गेंद की नाबाद पारी में तीन छक्के और एक चौका जड़ा।

न्यूजीलैंड के लिए मैट हेनरी, जैकब डफी और ईश सोढ़ी ने 1-1 विकेट लिए। इससे पहले कुलदीप यादव ने बीच के ओवरों में दो अहम विकेट लेकर शानदार वापसी की, जिससे भारत ने न्यूजीलैंड को छह विकेट पर 208 रनों पर रोक दिया। न्यूजीलैंड की ओर से रचिन रवींद्र (44 रन, 26 गेंद) और कप्तान मिचेल सैंटनर (नाबाद 47 रन, 27 गेंद) ने आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए टीम को 200 रनों के पार पहुंचाया। लक्ष्य का पीछा करते हुए संजू सैमसन को दूसरी गेंद पर जीवनदान मिला जब मैट हेनरी की गेंद पर कोन्वे ने बाउंड्री के बाद उनका कैच छोड़ दिया। सैमसन स्कोर कार्ड में इजाफ किए बगैर रवींद्र को कैच देकर पवेलियन लौट गए। अभिषेक शर्मा खाता खोले बगैर जैकब डफी का शिकार बने। छह रन पर दो विकेट गंवाने के बाद टीम दबाव में थी, लेकिन इशान पर इसका कोई असर नहीं पड़ा और उन्होंने जैक फोक्स के खिलाफ तीन चौके और एक छक्का के साथ तीसरे ओवर से 24 रन बटोर लिया। उन्होंने कप्तान सैंटनर के खिलाफ हैट्रिक चौका लगाया और छठे ओवर में हेनरी के खिलाफ लगातार गेंदों पर छक्का और दो चौका जड़ते हुए 21 गेंद पर अर्धशतक पूरा किया। पावरप्ले में भारत ने 75 रन बना लिए। सूर्यकुमार ने सैंटनर के खिलाफ चौका लगाकर टीम के रनों का शतक पूरा किया। अब तक संभल कर खेल रहे भारतीय कप्तान ने नौवें ओवर में फोक्स के खिलाफ चार चौके और एक छक्का लगाया। टीम ने इस ओवर से 25 रन बटोर लिये। इशान 10वें ओवर में ईश सोढ़ी के खिलाफ आक्रामक शॉट खेलने की कोशिश में गेंद हवा में लहरा बैठे और हेनरी ने आसान कैच लपककर उनकी पारी का अंत किया।

इशान किशन

दूसरे टी20 मैच के दौरान ग्लेन फिलिप्स का विकेट लेने के बाद साथियों के साथ जश्न मनाते कुलदीप यादव।

भारतीय कप्तान को डफी की गेंद पर मुश्किल जीवनदान मिला जब चैपमैन उनका कैच लपकने में नाकाम रहे और गेंद उनके हाथ से लगकर छह रन के लिए चली गयी। सूर्यकुमार ने अगली गेंद पर एक रन चुराकर 23 पारियों के बाद अपना अर्धशतक पूरा किया। शिवम दुबे ने सोढ़ी के खिलाफ दो छक्के लगाकर हाथ खोला और फिर भारतीय कप्तान के साथ आक्रामक बल्लेबाजी कर आसान जीत दिला दी।

सूर्यकुमार ने इससे पहले ओस की संभावना को देखते हुए टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया। चोटिल अक्षर पटेल और आराम दिए गए जसप्रीत बुमराह की जगह हर्षित राणा और कुलदीप यादव को अंतिम एकादश में शामिल किया गया। कॉन्वे (19 रन, नौ गेंद) और टिम सिफर्ट (24 रन, 13 गेंद) ने न्यूजीलैंड को तेज शुरुआत दिलाई लेकिन दोनों बल्लेबाज टीम के 43 रन के स्कोर पर आउट हो गए। कोन्वे ने पहले ओवर में ही आउटस्विंगर से छकाए जाने के बावजूद अर्शदीप सिंह पर आक्रामक रुख अपनाया और तीन चौके व एक छक्का लगाकर 18 रन बटोरे। इसके बाद सिफर्ट ने भी अर्शदीप के अगले ओवर में चार चौके जड़ते हुए 18 रन निकाल लिए। चौथे ओवर में गेंदबाजी के लिए आए हर्षित राणा ने दूसरी ही गेंद पर कोन्वे को आउट किया। यह सफेद गेंद की इस शृंखला में चौथी बार था जब राणा ने बायें हाथ के इस सलामी बल्लेबाज को पवेलियन भेजा। रवींद्र ने कुछ शानदार शॉट्स लगाए, लेकिन वह कुलदीप की फिरकी को पढ़ने में नाकाम रहे और आउट हो गए। इससे पहले कुलदीप ने खतरनाक ग्लेन फिलिप्स को गुगली पर छकाते हुए बैकवर्ड प्वाइंट पर कैच करवाया था। शुरुआती 10 ओवरों में तीन विकेट पर 111 रन बनाने के बाद न्यूजीलैंड बड़े स्कोर की ओर बढ़ता दिख रहा था, लेकिन भारत ने मैच में वापसी की।

शिवम दुबे ने 12वें ओवर में गेंदबाजी के लिए आए और अपनी धीमी गेंद पर फॉर्म में चल रहे डैरिल मिचेल को आउट कर दबाव बना दिया। अंतिम पांच ओवरों में कप्तान सैंटनर ने मोर्चा संभालते हुए कुछ आकर्षक चौके और हार्दिक पंड्या पर एक सीधा छक्का जड़ा। जैक्स फोक्स ने आखिरी दो गेंद पर छक्का और चौका जड़ जिससे टीम को अंतिम पांच ओवरों में 57 रन बटोरे।

न्यूजीलैंड

208/6 (20 ओवर)

डेवोन कोन्वे का पंड्या बो राणा	19
टिम सिफर्ट का इशान बो चक्रवर्ती	24
रचिन रविंद्र का अर्शदीप बो कुलदीप	44
ग्लेन फिलिप्स का पंड्या बो कुलदीप	19
डेरिल मिचेल का पंड्या बो दुबे	18
मार्क चैपमैन का अभिषेक बो पंड्या	10
मिचेल सैंटनर नाबाद	47
जैक फोक्स नाबाद	15

गेंदबाजी : अर्शदीप 4-0-53-0, पंड्या 3-0-25-1, राणा 3-1-35-1, चक्रवर्ती 4-0-35-1, कुलदीप 4-0-35-2, अभिषेक 1-0-12-0, दुबे 1-0-7-1

भारत

209/3 (15.2 ओवर)

संजू सैमसन का रवींद्र बो हेनरी	06
अभिषेक शर्मा का कोन्वे बो डफी	00
इशान किशन का हेनरी बो सोढ़ी	76
सूर्यकुमार यादव नाबाद	82
शिवम दुबे नाबाद	36

गेंदबाजी : हेनरी 3-0-41-1, डफी 4-0-38-1, फोक्स 3-0-67-0, सैंटनर 2-0-27-0, सोढ़ी 3-0-34-1, मिचेल 0.2-0-2-0

झारखंड के 561 रनों के जवाब में उत्तर प्रदेश बैकफुट पर

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: रणजी ट्रॉफी के एलीट पूल मुकाबले में उत्तर प्रदेश की नॉकआउट में पहुंचने की उम्मीदों को झटका लगता नजर आ रहा है। अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में झारखंड के खिलाफ खेले जा रहे मैच के दूसरे दिन मेजबान यूपी पूरी तरह दबाव में दिखी। झारखंड की पहली पारी के 561 रनों के जवाब में यूपी ने महज 32 रन पर अपने शीर्षक्रम के तीन अहम विकेट गंवा दिए। झारखंड की ओर से शरणदीप ने 139, आर्यमान सेन ने 75 तथा कुशाग्र ने 102 रन की शतकीय पारी खेली। यूपी की ओर से कुनाल त्यागी व शिवम शर्मा को दो-दो विकेट मिले। जवाब में यूपी की शुरुआत बेहद खराब रही। टीम ने चार रन पर ही माधव कौशिक (2) का विकेट गंवा दिया। इसके बाद आर्यन जुयाल (4) और आदित्य शर्मा (2) भी जल्दी पवेलियन लौट गए। दिन का खेल समाप्त होने तक अभिषेक गोस्वामी 14 रन और शिवम शर्मा 8 रन बनाकर क्रीज पर टिके थे।

रणजी ट्रॉफी

शतक जड़ने के बाद खुशी जाहिर करते झारखंड के कुशाग्र।

सरफराज ने जड़ा दोहरा शतक

हैदराबाद। सरफराज खान की 227 रन की पारी की बदौलत मुंबई ने रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप डी मुकाबले में हैदराबाद पर दबदबा बना लिया। हैदराबाद ने दूसरे दिन का खेल समाप्त होने तक पहली पारी में दो विकेट पर 138 रन बना लिए है लेकिन टीम मुंबई से 422 रनों से पीछे है। मुंबई की पहली पारी 560 रन पर सिमटी। ग्रुप के अन्य मुकाबलों में खराब रोशनी से पुडुचेरी और जम्मू-कश्मीर के बीच खेल जल्दी रोकना पड़ा। पुडुचेरी के 233 रन के जवाब में जम्मू-कश्मीर की टीम 150 रन पर छह विकेट गंवा चुकी। छत्तीसगढ़ ने आठ विकेट शेष रहते हुए दिल्ली पर 135 रन की बढ़त बनाई।

गिल नाकाम, सौराष्ट्र ने पंजाब को 194 रनों से रौंदा

राजकोट। स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल लगातार दूसरी बार विफल रहे, जिससे पंजाब की टीम सौराष्ट्र के सामने टिक नहीं सकी और 194 रनों से हार गई। 320 रन के बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए पंजाब की उम्मीद गिल 32 गेंद में 14 रन बनाकर आउट हो गए। इससे मेहमान टीम अपनी दूसरी पारी में महज 125 रन पर सिमट गई। पहली पारी में भी गिल दो गेंद खेलने के बाद खाता खोले बिना आउट हो गए थे। दोनों पारियों में गिल को बाएं हाथ के स्पिनर पार्थ भुट ने पगबाधा आउट किया।

सिंधु और लक्ष्य की हार से भारतीय चुनौती समाप्त

इंडोनेशिया मास्टर्स बैडमिंटन

- चेन यू फेई के खिलाफ आमने-सामने के रिकॉर्ड में अब सिंधु 6-8 से पीछे

जकार्ता, एजेंसी

पीवी सिंधु और लक्ष्य सेन अपने-अपने क्वार्टर फाइनल मुकाबलों में सीधे गेम में हारकर बाहर हो गये, जिससे पांच लाख डॉलर पुरस्कार राशि वाले इंडोनेशिया मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट में भारत की चुनौती शुक्रवार को समाप्त हो गई।

दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधु को महिला एकल क्वार्टर फाइनल में चीन की शीर्ष वरीयता प्राप्त और विश्व नंबर चार खिलाड़ी चेन यू फेई के खिलाफ 42 मिनट तक चले मुकाबले में

13-21, 17-21 से हार मिली। इस हार के साथ ही सिंधु का सुपर 500 स्तर के इस टूर्नामेंट में सफर खत्म हो गया। चेन यू फेई के खिलाफ आमने-सामने के रिकॉर्ड में अब सिंधु 6-8 से पीछे हो गई हैं। सिंधु की चीन की इस खिलाड़ी के खिलाफ पिछली जीत 2019 में दर्ज हुई थी।

पुरुष एकल में 2021 विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता लक्ष्य सेन को थाईलैंड के उभरते खिलाड़ी पनिचाफोन तीरारत्साकुल से कड़े मुकाबले में 18-21, 20-22 से हार मिली। यह मैच 46 मिनट चला। लक्ष्य दोनों गेम में कड़ी टक्कर देने के बाद भी जीत दर्ज करने में नाकाम रहे। लक्ष्य को हराने से पहले थाईलैंड का खिलाड़ी प्री-क्वार्टरफाइनल में मलेशिया के पेरिस ओलंपिक 2024 के कांस्य पदक विजेता ली जी जिया को भी टूर्नामेंट से बाहर कर चुका है।

इससे पहले गुरुवार को किदांबी श्रीकांत और अनमोल खरब पुरुष और महिला एकल वर्ग में हारकर बाहर हो गए थे। पुरुष युगल में हरिहरन अमसकरुणन और एम आर अर्जुन की जोड़ी भी प्री-क्वार्टरफाइनल से आगे बढ़ने में नाकाम रही। महिला युगल वर्ग में भारत की कोई भी जोड़ी भाग नहीं ले रही थी जबकि दो भारतीय जोड़ियां पहले दौर में ही टूर्नामेंट से बाहर हो गई थीं।

बांग्लादेश की अपील पर सुनवाई डीआरसी के अधिकार क्षेत्र में नहीं

नई दिल्ली। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने आईसीसी की विवाद समाधान समिति (डीआरसी) को पत्र लिखकर राष्ट्रीय पुरुष टीम के टी20 विश्व कप मुकाबले भारत में कराने के संचालन परिषद के फैसले को पलटने की मांग की है, लेकिन यह अपील सुनी नहीं जाएगी क्योंकि यह मामला उप-समिति के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने भले ही स्कॉटलैंड को स्टैंडबाय पर रखा हो, लेकिन अमीनुल इस्लाम बुलबुल के नेतृत्व वाला बीसीबी आखिरी विकल्प के तौर पर आईसीसी की डीआरसी के पास पहुंचा। इस समिति के अध्यक्ष इंग्लैंड के माइकल बेलॉफ (किंग्स काउंसिल) हैं। बीसीबी के सूत्र ने बताया कि बीसीबी ने डीआरसी का रुख किया है क्योंकि वह अपने सभी विकल्प आजमाना चाहता है। अगर डीआरसी बीसीबी के खिलाफ फैसला देती है तो फिर स्विट्जरलैंड स्थित खेल पंचाट (सीएएस) ही बचेगा।

प्लेऑफ में बने रहने को दिल्ली की निगाहें ऑलराउंड प्रदर्शन पर

वडोदरा। दिल्ली कैपिटल्स को महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के प्लेऑफ की दौड़ में बने रहने के लिए शनिवार को शानदार फॉर्म में चल रही रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के खिलाफ हर विभाग में बेहतरीन प्रदर्शन करना होगा। दिल्ली ने पिछले मैच में मुंबई को सात विकेट से हराकर वापसी के संकेत दिए थे और वह चार अंक के साथ तालिका में चौथे स्थान पर पहुंच गई। अब तक अजेय रही आरसीबी को हराने के लिए दिल्ली को अपने खेल का स्तर और ऊंचा करना होगा। अब तक दिल्ली की बल्लेबाजी की अगुआई अनुभवी लिजेल ली (213 रन) ने की है जबकि लॉरा वोलवार्ट (123 रन) और शेफाली वर्मा (149 रन) ने बीच-बीच में उनका सहयोग किया है।

आर्यना सबालेंका

ऑस्ट्रेलियाई ओपन | दानिल मेदवेदेव ने दो सेट से पिछड़ने के बाद मारोजसन पर जीत की हासिल

कार्लोस अल्काराज और आर्यना सबालेंका चौथे दौर में

मेलबर्न, एजेंसी

विश्व रैंकिंग में शीर्ष पर काबिज कार्लोस अल्काराज ने ऑस्ट्रेलियाई ओपन के पुरुष एकल के तीसरे दौर में कोरेंटिन माउटेट पर जीत दर्ज की। स्पेन के अल्काराज करियर ग्रैंडस्लैम की कोशिश में जुटे हैं। उन्होंने 32वीं वरीयता प्राप्त माउटेट पर 6-2, 6-4, 6-1 से जीत हासिल की। महिलाओं के एकल में शीर्ष रैंकिंग की खिलाड़ी आर्यना सबालेंका ने अनास्तासिया पोटापोवा को 7-6 (4), 7-6 (7) से मात दी।

कार्लोस अल्काराज

अल्काराज ने कहा कि जब आप कोरेंटिन जैसे किसी खिलाड़ी के साथ खेलते हैं तो आपको नहीं पता होता कि आगे क्या होने वाला है। जैसा कि आप देख सकते हैं, हम दोनों ने शानदार शॉट्स लगाए। शानदार अंक जुटाए। अल्काराज अब रविवार को दुनिया के 19वें नंबर के खिलाड़ी टॉमी पॉल से भिड़ेंगे, जिन्होंने एलेजांद्रो डेविडोविच फोकिना के चोट के कारण रिटायर होने से अगले दौर में प्रवेश किया। पॉल ने पहले दो सेट 6-1, 6-1 से अपने नाम किए थे।

महिलाओं के एकल में शीर्ष रैंकिंग पर काबिज आर्यना सबालेंका चार साल में अपना तीसरा ऑस्ट्रेलियाई ओपन खिताब जीतने की कोशिश कर रही हैं। सबालेंका ने 2023 और 2024 में ऑस्ट्रेलियाई ओपन का खिताब जीता और एक साल पहले वह मैडिसन कीज से हारकर उपविजेता रही थीं। सबालेंका ने दो बार अमेरिकी ओपन भी जीता है। अब चौथे दौर में सबालेंका का सामना उभरती हुई स्टार विक्टोरिया म्बोको से होगा, जिन्होंने क्लारा टौसन को हराया है।

पुरुषों के अन्य मुकाबलो में दानिल मेदवेदेव ने दो सेट से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए फैबियन मारोजसन पर 6-7 (5), 4-6, 7-5, 6-0, 6-3 से जीत हासिल की। यह पांचवीं बार है जब मेदवेदेव ने 0-2 से पिछड़ने के बाद ग्रैंड स्लैम मैच जीता है। 2021 के अमेरिकी ओपन चैंपियन और तीन बार के ऑस्ट्रेलियाई ओपन उप विजेता मेदवेदेव अब अमेरिकी खिलाड़ी लर्नर टिएन से भिड़ेंगे, जिन्होंने उन्हें पिछले साल दूसरे दौर के पाच सेट चले मैच में हराया था। 25वीं वरीयता प्राप्त टिएन ने नूनो बोर्गेस को 7-6 (9), 6-4, 6-2 से हराकर चौथे दौर में जगह बनाई।

इवा जोविक ने पाओलिनी को हराकर किया बड़ा उलटफेर

महिला खिलाड़ी इवा जोविक ने टूर्नामेंट का सबसे बड़ा उलटफेर करते हुए जैस्मीन पाओलिनी को तीसरे राउंड में 6-2, 7-6(3) से हरा दिया। इस नतीजे से जोविक सिर्फ अपने छठे प्रयास में पहली बार किसी मेजर टूर्नामेंट के दूसरे दौर में पहुंचीं। यह चार मुलाकातों में किसी टॉप 10 खिलाड़ी के खिलाफ़ उनकी पहली जीत भी है। इस टीनएजर की पिछली तीन हार में से दो पाओलिनी के खिलाफ़ थीं, पिछले साल इंडियन वेल्स और यूएस ओपन में।

इवा जोविक

कोको गॉफ लगातार चौथी बार चौथे राउंड में पहुंची

मेलबर्न। अमेरिकी टेनिस खिलाड़ी कोको गॉफ ने एक सेट से पिछड़ने के बाद अपनी साथी अमेरिकी खिलाड़ी हेले बैपटिस्ट को 3-6, 6-0, 6-3 से मात देकर चौथे दौर में प्रवेश किया। यह जीत उनके 77वें ग्रैंड स्लैम मैच की जीत, उनके 100वें ग्रैंड स्लैम मैच में आई। गॉफ ओपन एरा में 22 साल की उम्र से पहले अपने 100वें महिला सिंगल्स ग्रैंड स्लैम मेन-ड्रॉ मैच में खेलने वाली नौवीं खिलाड़ी हैं। मैरी जो फर्नांडीज, स्टेफी ग्राफ, मार्टिना हिंगिस, गैब्रिएला सबातिनी, अरांशा सांचेज विकारियो, मारिया शारापोवा, सेरेना विलियम्स, वीनस विलियम्स जैसी दिग्गज खिलाड़ियों की सूची में शामिल हुई हैं। सक्रिय खिलाड़ियों में से केवल वीनस विलियम्स (85) और इगा स्वियाटेक (83) ने अपने पहले 100 ग्रैंड स्लैम मैचों में जीत हासिल की है।